एक रास्ता और

[उपन्यास]

यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"

•

सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

लेखक की अन्य रचनाएं

- सावन भीगा मन
- ये क्या रूप
- सांसों का बयान
- अपनी धरती अपना त्याग
- दीया जला दीया बुझा
- क्षण भर की दुल्हन
- एक इन्सान की मौत एक इन्सान का जन्म

एक रास्ता और

मैं इतना ही कहूँगा

प्रस्तुत उपन्यास मेरा ऐसा पहला उपन्यास है जिसे मैंने मूल राजस्थानी भाषा म लिखा बाद मे हिन्दी मे अनूदित किया। राजस्थानी म इसका नाम है–'हू गोरी किण पीव री'

इसका कथानक राजस्थान के एक सामान्य–अचल से प्रभावित प्रेरित है जहा के लाग नगर जीवन के सत्रास, और यान्त्रिकता से मुक्त सहज जीवन जीते हैं–अपनी समस्याए व परेशानियो को लेकर। छोटे से परिवेश और घेरा मे।

चूकि यह मूल राजस्थानी भाषा मे लिखा गया है अत उस भाषा का प्रभाव इस पर होना स्वाभाविक है। प्रकाशक महोदय धन्यवाद के पात्र हैं ही क्योकि उन्होने इसके शीघ्र प्रकाशन का दायित्व लिया और उसे शीघ्रता से पूरा भी किया।

पाठक अपनी राय भेजेंगे।

यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"
साले की होली
बीकानेर

प्रकाशकीय

प्रस्तुत उपन्यास सूर्य प्रकाशन मंदिर की प्रकाशन परम्परा के अनुकूल तो है ही साथ ही इसके प्रकाशन के साथ यह संस्था एक नयी योजना में कदम भी रख रही है। वह योजना है—अन्य प्रांतीय भाषाओं की कृतियों का प्रकाशन।

यह उपन्यास राजस्थानी भाषा का एक प्रभावशाली मौलिक उपन्यास है। और सही शब्दों में उपन्यास है। यह हर्ष और गौरव का विषय है कि हिन्दी में प्रतिष्ठित श्री यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र अपनी मातृभाषा के लेखन में भी सक्रिय हो गये हैं। यह उपन्यास इसका एक प्रमाण है।

आपको अन्य पुस्तकों की भांति इस योजना की कृतियों के प्रचार प्रसार में भी सहयोग मिलेगा, ऐसा पूर्ण विश्वास है। धन्यवाद !

राजेन्द्र बिस्सा
प्रबन्धक

एक
रास्ता और....

हरद्वार !

हर की पौडिया। वहाँ की चहल-पहल के बीच वह बावन अवतार की प्रतिरूप बुढिया ! अत्यत हँसमानु और मजेदार ! जब मिलती तब दस नये पसे का सवाल करती। न देने पर बच्चे की तरह रूठ जाती। कहती, मैं साधुनी हू। हरएक स नहीं माँगती हू। वसे एक्टर देवानद मुझे थोडा सा फिल्म का काम करने के लिए पाच सौ रुपय द रहा था। राजकपूर 'और मैं उसे खट स दस पसे द देता। वह आशीष देकर चली जाती।

गगा की क्षिप्र धारा म नहाते स्त्री-पुरुष ! उन सबके बीच हमारे नव परिचित किन्तु घनिष्ठ मित्र स्वामी ज्ञानानन्द। उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व। बोलत तो जसे सूक्तिया निकलती। धीरे-धीरे उनम मेरी मित्रता बढती गयी। गेरुए वस्त्रा मे व साँझ को ठीक

पाँच बजे हर की पौड़ियों पर आ जाते और स्नान करके गंगा की तीव्र धारा में उतर जाते। हम सब से सम्मोहित हो जाते और वे तैरते तैरते और तैर कर वापस आ जाते। बाहर निकलते ही हरि ॐ हरि ॐ कहते। कपड़े पहनते। मन्दिर में ध्यान करते। गंगा जी की आरती में सम्मिलित होते फिर चले जाते। यही क्रम था उनका। अनवरत।

परिचय भी उसी समय में ही हुआ था। वे गंगा की बर्फीली और शीघ्र गति से प्रवाहित होने वाली धाराओं में से तैर कर निकल थे। मैंने पूछा 'आपको डर नहीं लगता? कितनी तेज धारा है? आदमी अपने को इसमें कैसे सम्भाल पा सकता है स्वामी जी?'

वे कपड़े पहनते गये मुस्कराते गये। एक अर्थ भरी मुस्कान! शांत-गम्भीर मुस्कान। मेरे दुबारा प्रश्न किये जाने पर वे बोले 'भय से हम बहुत दूर आ गये हैं।'

'पर मृत्यु?' सहसा मैंने पूछा।

वे बोले। अपने गंगा बहाव के आस-पास के वातावरण पर दृष्टिपात करते हुए बोले 'उससे भी डर नहीं लगता। जीवन की महानतम उपलब्धि मृत्यु है। पर तुम कौन हो? साधु सन्यासी तो नहीं हो?'

'नहीं स्वामी जी! मैं एक लेखक हूँ। यहाँ घूमता घूमता आ गया। शांत स्थान लगा। अपने मन को महानगरों की सरगर्मी और थकान से बचाने के लिए यहीं चला आया। परम शांति मिलती है यहाँ।'

बाद में अनेक बातें हुईं। अन्त में स्वामी जी मेरे मित्र बन गये। सदा मिलने लगे।

एक दिन हम मनसा देवी जा रहे थे। मेरे साथ मेरा मित्र गौरीशंकर था। मनसा देवी एक पहाड़ की चोटी पर स्थित है। विकट रास्ता। मृत्यु की पल-पल आशंका। हम चलते रहे। मनसा देवी के मन्दिर जब पहुँचे तब हमने एक साथ यह निर्णय किया कि भविष्य में

ऐसी सकटपूर्ण यात्रा नही करेंगे । हम वहा मुस्काते रहे कि हमारी नजर स्वामी जी पर पडी । हमने जाकर तुरन्त उन्हे नमस्कार किया । वे मुस्कराते हुए बोले 'कहिए लेखक जी, क्या हाल चाल है ?"

'सब ठीक है स्वामी जी ! यह मनसा देवी मन की इच्छा पूरी करेगी या नही यह मैं नही जानता, पर रास्ते मे मरने के भाव बहुत मस्त हो गय थे । कितना विकट रास्ता है ?"

स्वामी जी हम एक किनारे ले गय । वहा वे हमारे साथ बठ गय। गहरा एकान्त था । वहा स हरद्वार की पहाडियाँ और बहती गगा की दूर दूर तक की धारा दिखाई पड रही थी । आकाश की ओर दृष्टि करके वे बोले तुम लेखक हो न तुम्हें एक कहानी सुनाता हू । सच्ची कहानी ! तुम्हे मालूम होगा कि इस अनास्था के युग म जब नास्तिकता का जोर है, आदमी एक झूठी खुशी के पीछे पागल ह खोखली समृद्धि के लिय लालायित है अपने लोगो के बीच रहकर भी खुद को अजनबी महसूस करता है ईश्वर को खुले रूप से गाली निकालता है उसे मरा हुआ तक घोषित कर दिया है, ऐसी स्थिति मे मेरा अनुभव है, इन एकात क्षणो का विश्लेषण है कि कोई एक ऐसी अजानी अनन्वेषी सत्ता है जो हमारे विचार सत्ता और और अस्तित्व के विरुद्ध प्रतीत होती है । हमारे सामान्य जीवन मे गतिरोध अवरोध और विरोध उत्पन्न कर रही हैं । वह शक्ति कौन सी है ? बहुत दिनो के चिन्तन के बाद मैं समझा हू कि वह है—ईश्वर प्रकृति और आत्म शक्ति । पर मैं उसे ईश्वर ही कहूगा जो हमरे देह मन्दिर म बठा हैं जो चेतन है—उसम बठा है और उसका अमोघ अस्त्र है—मृत्यु !

स्वामी जी गभीर हो गये । बोले,' सुख कही भी नही है संतोष कहीं भी नही । सौदर्य कहीं भी नही है । अतचक्षु मे देखो कुरूपता और विकृतिया ही पाओगे । महा आनद के भीतर पीडा है, यह पीडा ही शाश्वत है अजर है अमर है । इसकी निरतर अनुभूति जब तुम्ह बतायेगी

की जीवन ध्येय है, तब तुम्हारा दह मंदिर का ईश्वर जागेगा तब तुम्हें जन्म की परम उपलब्धि मृत्यु का ज्ञान होगा। स्वामी जी गहरा रंग। थोड़ा हँसकर बोले उन्होंने मन की आँखें भी हो गयी है। मैं तुम्हें एक कहानी सुना रहा था—मनुष्य को ईश्वर किस तरह अपनी उंगलियों पर नचाता है? उसने किस तरह खिलौने की तरह नचाता है? सुनो कहानी सुनो।

स्वामी जी ने बड़ी तन्मयता से कहानी सुनाया। मैं सुनता गया। सुनकर धर्मसंकट में आ गया। कहानी पर कई दिन तक चिन्तन करता रहा। फिर यह निर्णय किया कि इस पर एक उपन्यास लिखूँगा उपन्यास।

एक विवाह मंडप में विदा होती हुई दुल्हन।
राजस्थानी दुल्हन बीकानेर के निम्नवर्ग की दुल्हन।
स्त्रियाँ समवेत दर्दीले स्वर में गा रही हैं—
मावल्ती थी पावन दान
बाई सूरज क्यों गया अ
इत्तरो बाबा सा रो लाड
बाई सूरज क्यूं गयी अ

सूरजडी जब बारह वर्ष की थी तब ब्याह करके ससुराल के घर मे पहली बार आयी थी। कोमल बच्ची कली सी और अबोध ! उसके कु वारे हाथो मे उन दिनो मेहन्दी के फूल महक उठे थे। उसकी बहुरंगी चुनरिया 'चवरी' के पवित्र धुए से सुवासित हो गयी थी। मन्त्र शक्ति से वह एक अजनबी मर्द की अर्धांगिनी हो गयी थी। आधे अंग की मालकिन ! जिस पाँव सासरे आयी थी उसी पाँव पीहर वापस लौट गयी। बहुत छोटी थी। अंग विकसित ही नही हुए थे।

पर उसके ससुर ने विनती भरे स्वर मे घूंघट मे लिपटी अपनी बहू सूरजडी से कहा था 'बहू ! इस घर मे कोई औरत नही है। न तेरे नणद है और न तेरे सास। तुझे ही जल्दी से जल्दी वापस आकर इस घर-बार को संभालना है।'

इसके बाद ससुर ने अपनी बहू को मुँह दिखायी के पाँच रुपये थमा दिये।

भानी उस समय पन्द्रह वर्ष का था और माधो १३ वर्ष का। दोनो भाई आश्चर्य मे डूबे हुए यह सब सुन रहे थे। वाक्यो को भले ही न समझे हो पर वे यह समझ गये थे कि बापू उनकी माँ को याद कर रहा है।

विवाह की चहल पहल दो चार दिन मे समाप्त हो गयी। भानी कमठाणे जाने लगा। दिन भर वह मकान बनाने की ईंट व चूना ढोता था। रात को थका-मांदा आकर सो जाता था। इसके पहले उसे बापू को खाना बनाने मे हाथ बटाना पडता था पर इधर विवाह की इतनी मिठाई व साग-पूरियाँ बची पडी थी कि दोनो जून उन्ही से काम चलाया जाता था। फिर भानी बदन मलता था और थकान से चूर होकर सो जाता था। कमठाणे मे उसे सख्त मेहनत करनी पडती थी। बापू भी यदा-कदा कमठाणे जाता था और जब उसे सप्ताह के पैसे मिलते तब वह दारू पीकर आता था। बहकता-अनगल अलाप करता

भानी अभी अभी लौटा ही था। उसके हाथ पर कहीं-कहीं चूना लगा हुआ था। उसकी उगली म जरा सी चोट आ गयी थी। लहू चू रहा था। उसे देखत ही माधो ने भट से कहा, "क्या हुआ भानी ? तेरे चोट कसे लग गयी ?"

'एक ईट गिर पडी थी।'

'पट्टी क्या नहीं बधायी ?'

'अरे ! क्या पट्टी बधाऊ ! जरा सी लगी है अपने आप ठीक हो जायगी। ऐसी चाट आये दिन ही लगती रहती हैं। तू चिंता न कर। बस तू मुझे आटा गू द दे मैं रोटियाँ सक लू ।'

'अभी गू द देता हू ।" कहकर माधो पीपे म से आटा निकालने लगा। उसने 'परात म आटा निकाला। आट की ओर सकेत करके पूछा "आटा और निकालू ?"

'बहुत होगा।'

'आटा गू दत गू दते माधो ने पूछा 'भानी ब्याह के बाद लुगाई सासरे आकर खाना बनाती है, फिर तेरी बहू अपनी रोटिया क्यू नहीं बनाती।"

'मुझे नहीं मालूम।'

'तुझे क्यू नहीं मालूम।"

"बस कह दिया न मुझे नहीं मालूम।' जरा सा बिगड कर वह बोला 'तू मुझे अधिक तग न किया कर, ज्यादा च चपड की तो तेरी पूजा कर दू गा।"

उसने भट से अपने कान पकडकर कहा 'अरे बाप रे ! इत्ती रीस ? तेरे क्रोध से मेरा कलेजा कांपने लगता है।"

'बहुत शैतान हो गया है तू।'

फिर दोनो खाना बनाने लग। अँधेरा धीरे धीरे घिरने लगा था। लगभग सौ घरो की यह बस्ती थी। सारे घर कच्चे। लाल-पीले

लिपे-पुते। एक मंजिले। कई कई मकान बिल्कुल भोपड़ीनुमा। टेढ़ी मेढ़ी गलियाँ। छोटे-छोटे चौराहे। उन चौराहों पर नंगधड़ंग बच्चे और अध नंगे बालक ग्राहलो पाहलो लूणा घट्टी तथा कबड्डी खेलते हैं। धूल धूसरित होकर बाजरी की रोटी और कांदे की चटनी से पेट की आग को बुझा लेते हैं। तीज-त्योहारों पर इन घरों में 'लापसी' बनती है। दाल चावल भी। तब ये लोग बड़ी तृप्ति का अनुभव करते हैं। उनके चेहरे देख कर ऐसा लगता है जैसे आज उन्होंने भर पेट खाना खाया है। आज ये भूखे नहीं हैं।

रसोई में चिमनी जल गयी थी। उसका प्रकाश आंगन में से होता हुआ थोड़ा सा बरसाली में आ गया था। बहुत ही धुंधला अवश्य।

वे दोनों बाजरी की रोटियाँ सेक रहे थे। मोटी मोटी रोटियाँ। तभी उसका बापू आ गया। आज वह फिर शराब पीकर आया था। उसके पाँव डगमगा रहे थे। उसने आते ही काँपते-टूटते स्वर में कहा खाना बना लिया?

नहीं बापू बन रहा है।

नालायकों अभी तक खाना बनाया ही नहीं। मैं खाना की हड्डी-पसली एक कर दूंगा।

दोनों लड़के सहम के रह गये। आँखों में भय की परछाइयां तैर गया। एक अजीब सा सन्नाटा मन में आ गयी। रोटी के जलने की गन्ध ने भोनी के ध्यान को भंग किया। उसने रोटी को उथला।

तुम खाना दिन भर करते क्या हो। भोनी के बापू कमिया ने कड़क कर कहा। उसका पतले शराब में डूबे थी फिर भी गुस्से के कारण एकदम सुन गया।

भोनी ने रोटी को उतारते हुए कहा मैं कमठाणे चला जाता हूँ और माधा मन्नम। आने के बाद घर से बाहर ही नहीं निकलता। और नितन भी कम बन्ने की काम रहता है।

'हला मिल गया ?'

'नही।'

क्यो नही मिला ?'

'मुनीमजी आज नही आये थे।'

उसने सन्देहपूर्ण स्वर मे कहा झूठ तो नही बोल रहा है ? कही पैसा के गुलछरे तो नही उडा लिये।"

'नही बापू!'

फिर मेरी एक बात और मान।' वह रसोई के किवाडहीन दरवाजे के बीच खडा होकर बोला इस माधो का भी स्कूल छुडा दे। हम लोग पढ–लिख नही सकते। फालतू समय खराब कर रहा है यह। मजूरी करके दो पैसे लायगा ही। 7 अर्थ विधान

"नही नही!" वह तडप कर बोला नही बापू माधो स्कूल जायगा ही। वह पढ–लिखकर दफ्तर का बाबू बनेगा। वह चूना नही ढोयगा, वह ईटें नही उठायगा।

इह!" कसिया ने उसे झिडका किसी राजा का जाया (पैदा किया हुआ) है जो चूना नही ढोयगा। उसे कल से कमठाणे अपने सग ले जाना। J – सामाजिक व्यवस्था

भानी कुछ नही बोला। वह चुपचाप रोटियाँ सेंकता रहा। कसिया आँगन म पडी खाट पर पड गया। फिर रोटियाँ खाने लगा। धीरे धीरे रात गहरी हो गयी।

दूसरी साझ आते ही कसिया ने पूछा माधो कमठाणे गया था ?'

उस समय माधो मोहल्ले के लडको के साथ 'लूणा घट्टा' का खेल खेल रहा था। घर म अकेला भानी था। वह रोटिया बना रहा था। उसके चेहरे पर आग की रोशनी कापती हुई पड रही थी। उसने फुलके को तवे से उतारते हुए कहा, नही।

नहीं।' जग यह चीख पड़ा और यह उस पर भूख बाज की तरह झपटता हुआ बोला मां ना-नाया तेरी यह मजाल जो मेरी बात को टाल दे? मैं तेरी मारते मारते जान निकाल दूंगा। तेरा भुर्ता बना दूंगा।

वह भोनी को पकड़ कर बाहर खींच लाया। उसने बाल पकड़ कर तेजी से हिलाते हुए घूंसे बरसाने लगा। भद्दी भद्दी गालियां देने लगा। भोंनी चीखने चिल्लाने लगा। आस-पास के लोग जमा होकर एक बार टिटके फिर उठाने भोंना को उसकी गिरफ्त से छुड़ाया। पड़ोसिन मूलकी तीखे स्वर में बोली कसाई कहीं के बिना मां के बेटे को क्या इस तरह पीटा जाता है। मारते मारते अधमरा कर दिया। थू है तेरे बापपन पर।

कसिया अब भी क्रोध में कांप रहा था। उसके चेहरे की हड्डियां और विकृत हो गयी थीं। उसने भोंनी की ओर संकेत करके कहा साला मुझ से जबान लड़ाता है मेरे हुक्म को नहीं मानता। कमीना कहीं का।'

मूलकी स्वाभवतः ही दयालु प्रकृति की थी। पति के मरने के बाद उसने रघू से नाता किया था। संयोग की बात थी कि अच्छा खाता पीता रघू अचानक लकवे की बीमारी के कारण अपाहिज हो गया। लोगों ने एक स्वर में कहा- यह कुलच्छणी है ही ऐसी। पहले पति को जाते ही गटक गयी बाद में अच्छे भले रघू को चारपाई के नायक कर दिया। पर मूलकी को इन कटु कुट वोलों की कोई परवाह नहीं थी। वह सख्त मेहनत करती। लहू को पसीना बनाती और रघू की रोटी और दवा दारू का प्रबंध करती। धीरे धीरे लोगों ने उसे एक कर्तव्य निष्ठ औरत समझा। उसके प्रति जो कटुता और ग्लानि थी वह जाती रही।

मूलकी ने कहा कसिया मारने पीटने से बच्चे ढीठ होते हैं। और

बिगडत हैं। अपने दोना वच्चा को प्यार करो। लाड का करो।' उसका स्वर भावुकता स भर गया, निपूत की कमी जिन्दगी ? उसे कही भा शाति नहीं मिलती। उनके सारे लाक बिगड जात हैं। लडका के बिना घर मसान सा लगता है।'

'लकिन य मेरी बात क्यू नही मानते ?'

माधो आ गया था। वह एक कोन म भय से आतकित हुआ निस्पद बठा था। कमिया उसकी ओर उन्मुख होकर कडक कर बोला 'बोल कल जायगा न कमठाणे पर।'

माधो का अग अग धूज रहा था। उसने धूजते धूजते कहा चला जाऊगा जरूर चला जाऊँगा।"

मूलकी का हृदय करुणा से भर गया। वह माधा को अपने स चिपटा कर बोली इस बस्ती क सारे बच्चा के भाग फूटे हुए हैं। इतने नग भूखे बच्चे और कही देखन का नही आत। फिर उसन कमिया को ताडना भरे स्वर म कहा सुन कमिया अब बच्चा का कुछ भी मत कहना। कहा ता तुझे 'रामदव बाबा' की कमम ! चला भई चला भीड का मिटाओ।

थाडी देर म घर मे भयग्रस्त सन्नाटा छागया।

•

तीसरे दिन कमिया न अपन दोना वच्चा का अपनी खाट क पास बुलाया। माधा और मानी भय त्रस्त म उसके पास आय। आकर

चुपचाप बैठ गये। एक कोने में ढिबरी जल रही थी। उसका हल्का हल्का प्रकाश 'बरसाली' में फैला हुआ था।

"भोली!"

'हाँ बापू।

तुम दोनों कमठाणे जाते हो न?

हाँ!" भोला ने अत्यन्त विनम्रता से उत्तर दिया, पर माधो से यह काम नहीं होता है। बापू! इसे पढ़ा दो। देखो, इसके हाथों पाँवों में छाले से उभर आये हैं। जगह जगह चीथड़ियाँ पड़ गयी हैं।

'धीरे धीरे अभ्यास हो जायगा।' बसिया ने सामान्य स्वर में कहा, 'हमें पैसों की सख्त जरूरत है। पहले से ही साहों का काफी कर्ज है। तुम दोनों मजूरी पर जाओगे तब खान-पीने में किसी तरह की मुसीबत नहीं रहेगा।

पर हमारी माँ की इच्छा थी कि माधो एक बड़ा आदमी बने। वह सरकार का नौकर बन जाय पन्नालाल है। पन्नालाल रोज अच्छे कपड़े पहन कर जाता है और पाँच-साढ़े पाँच तक वापस आ जाता है। कितना अच्छा और सरल काम है उसका।'

उसकी बात के मर्म को न समझते हुए बसिया किंचित् तिक्त स्वर में बोला, 'उसके बाप के पास हजारों रुपये थे। वह परदेश कमाने के लिए गया था। और तेरा बाप एक मजदूर है। वह किसी को स्कूल में पढ़ा-लिखा नहीं सकता। बस तुम अब दोनों कमठाणे जाते रहो यह मेरा हुक्म है।"

दोनों चुप हो गये। भोली समझता था कि आगे उसके सवाल पर मार ही पड़ सकती है। दोनों उठते हुए बोले, 'अच्छा हम जाकर सोते हैं।

बसिया ने कोई जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप पड़ा रहा। बरसाली की छत घास फूस और लकड़ी की बनी थी। उसके ऊपर चून

की परत डाली गई थी। उस घास-फूस म किसी चिडिया ने घासला वना लिया था। पता नहीं क्या हुआ कि चिडिया चू च कर उठी। कमिया का ध्यान कुछ क्षणा के लिए उस चू चू पर केंद्रित रहा। इस चू चू न एक नया सदभ खोजा। इसी तरह भानी की मा भी चक चक करती थी। हर घडी और हर पल। कितनी मेहनत करने वाली वह लुगाई थी। सुबह ओनों म मिट्टी के बतन डाल कर बाजार को जाती थी सो साझ को तीन चार बजे आती थी। रुपया-अठन्नी पदा करके ही घर म पाव डालती थी। कितनी हसमुख और हिम्मतवाली थी? कमिया का मन उदास हो गया। पत्नी की याद ने उसके कठोर मन को पिघला दिया। वह भर भर आया। सोचता रहा—अपने दिगन को। सुख दुख भरे अतीत को। कई पल गुजर गये। सहसा उसने पुकारा भानी अरे आ भानी।'

भानी भाग कर आया। बोला क्या है बापू ?"

'जाकर ठके से चार आने की शराब ला दे। उस आले म बोतल पडी है। पता नहीं आज नींद क्या नहीं आती? तेरी मा की याद आ रही है।

भानी ने देखा उसके बाप के चेहरे का रग आज कुछ और है। वह कठोरता नहीं है जो प्राय ऐसे मौके पर उसके मुख पर रहती है। आवाज भी बहुत ही कोमल है। मन्ना की तरह वह बोतल लेकर चुपचाप चला गया।

सुबह उसने अपने बापू को जगाया। आज बापू का चेहरा काफी शात था। कमिया न विवशता भरे स्वर म कहा आज मैं कमठाणे नहीं जाऊगा। जी घबरा रहा है। शरीर म जस शक्ति है ही नहीं। तुम दोनों रोटियाँ बनाकर चले जाओ। मेरे लिए दो रोटिया बना देना।'

भानी ने सिर हिलाकर स्वीकृति दे दी।

धूप ने सारे घर को अपने म दबोच लिया था। धूप के कुछ

टुकड़े टूटे हुए विवाह की वजह से बरगानी म श्रा गय थे ग्राकर ग्रजीन नावना म फन गय ध।

रसाई घर म चूल्हा जल गया था। भोंनी ग्रौर माधा रोना पास पास बठे थ। माधो उदास मन स श्रपने हाथा की चांदियाँ देख रहा था। भोंनी ने उसक मन की पीडा का ममभन हुए कहा टुम न कर माधो हमारे करम फूट हुए हैं। हम यह मव करना पडगा। धारे धीरे मरी तरह तू भी ग्रादी हा जायगा। हाथ की चमडी कडा हो जायगी। वह धाटा गू दन लगा। ग्राटा गू दत-गू दत उसन फिर कहा, मैं तुझे बडा आदमी बनाना चाहता था। पन्नालाल की तरह बाबू। दफ्तर का बाबू। पर हमारे भाग इतने चाग कहाँ? हम कुम्हार है पर हमारे पास ग्रपना पुश्तैनी धन्धा भी नहा। मिट्टी के बतन भी नही बना मकन। बडे गरीब है हम नाग। फिर बापू का कज। एक जान सौ ग्राफत हैं।

माधो कुछ नही बोला। चुपचाप ग्रपने हाथा को देखता रहा। धूप की पतली लम्बा लकीर रसोईघर म भी घुस ग्रायी थी। रोटियाँ बन रही थी।

रोटियाँ बना कर उम एक कपडे म बाध कर व दोनो भाई कमठाणे चल। चलने क पूव सदा की तरह भोनी ने कसिया स पूछा, चलू बापू।

हाँ बेटा जल्दी ग्राना। पता नही क्या मेरा जी कल रात से घबरा रहा है। कभी ज्यादा ग्रौर कभी कम।

हम दोना जल्दी ग्राजावगे। फिर उसने नया सवाल किया, तुम कहो ता हम दोना ग्राज जाय ही नही तुम्हारे पास बठ रहे।

नही नही। शीघ्रता से हाथ हिलाते हुए कसिया ने कहा तुम दोना जाग्रा। न जाने से मजदूरी कौन देगा? बस जल्दी ग्रा जाना।

रास्ते म भानी ने कहा, 'माधो आज बापू बहुत ही उदास नजर आ रहा था। सचमुच उसकी तबियत खराब लग रही थी।'

हाँ, उसका मुह उतरा हुआ था।

हम आज जल्दी लौट आयेंगे।

'जरूर।

और जब वे लौट कर घर वाली गली के नुक्कड़ पर आये तब एक कुत्ता घर म बाहर निकला। भानी न माधो स कहा लगता है बापू फिर पीने चल गये हैं। मोचन नहीं घर म दो चार बरतन है यदि उन्ह कोइ चुरा कर ले गया तो खाना बनाने की भी दिक्कत होगी।

माधो बहुत ही थक गया था इसलिए उसम बोला नहीं गया। वह जल्दी म घर जाने की फिक्र म था। उसने अपने चलने की गति को और तेज कर दिया।

घर के किवाड खुले थे। पूरा सन्नाटा छाया हुआ था। कमिया चादर ओढे सोया हुआ था। भानी न पुकारा बापू! बापू! ओ बापू!

माधो न उसे बीच म ही टोका आँख लग गयी होगी क्या जगाना है?

दोनो जन घर के काम म लग गये। भानी को एक घुटन सी महसूस हुई। वह उठा। उसने जाकर बापू के चेहरे पर लगी चादर को हटाया। वह चीख पडा। आखे फटी हुई देख कर आकुल-स्वर म बोला, माधो माधो जल्दी मुनकी मौसी को बुला कर ला।

'क्या?

बस बुला कर ला।

माधो भागा। मुनकी ने घबराये हुए स्वर म पूछा 'क्या है छोकरो!

'बापू!

और मुनकी ने ज्योंही बापू को देखा त्योंही उसके मुंह से एक चीख सी निकल गयी। फिर दोनों बच्चों को अपनी बाहों में भरती हुई बोली बापू तुम दोनों को छोड़ कर चला गया।

दोनों बच्चों ने सम्पूर्ण वातावरण को अपने करुण क्रन्दन से भर दिया। मुनकी कह रही थी आदमी यमी पर आकर हारा है। मौत को कोई नहीं जीत सका। इन बच्चों को क्या मालूम था कि जब वापस लौटेंगे तब इन्हें इनका बापू मिलेगा ही नहीं। ईश्वर की यही मर्जी थी। उसके सामने कोई जोर नहीं चलता।

अर्थी उठाने के लिए छोनी सी भीड़ एकत्रित हो गयी थी।

•

(कुछ दिन बीत गये।

माधो को वापस स्कूल में दाखिल करा दिया भानी ने। उस दिन भानी को अत्यन्त प्रसन्नता हुई थी। उसका कंधा पकड़ कर स्नेहिल स्वर में भानी बोला था माधो तू सचमुच बाबू बनेगा। ठीक पन्नालाल की तरह दस बजे जायगा। और पांच बजे वापस लौटेगा। तुझे मेरी तरह चूना-ईंट नहीं ढोने पड़ेंगे।

माधो के मन में बाबू बनने की जितनी खुशी नहीं हुई थी उतनी खुशी इस बात की हुई कि अब उसे चूना और ईंटें नहीं ढोनी

पडेगी। उसे कारीगर की भिड़कियाँ नहीं सुननी पडेगी।

वह बस्ता लेकर फिर स्कूल जाने लगा। मूलंकी इस बीच दोनो बच्चो को समझाती रहती थी। वह उन्हे प्रेम से साथ रहने के उपदेश दिया करती थी। माधो अपनी पढाई मे मशगूल हो गया और भाँनी अपनी मेहनत-मजूरी म लग गया।

जीवन दुघटनाओ का केन्द्र है। मनुष्य चिन्मय है फिर भी नियति उसे अपने हाथो का खिलौना बनाये हुए है।

एक दिन माधो ने देखा—भाँनी के हाथ म पच्चीस रुपये हैं एक साथ इतने रुपये देखकर वह हैरान हो गया। पूछ बठा 'इतने रुपये कहा से लाया तू ?" भानी न कोई जवाब नही दिया। एक अथ-भरी मुस्कान उसके होठो पर थिरकती रही।

'कल तेरे लिये अच्छे कपडे बनेंगे। जेबो वाला जाघिया और पूरी बाह का कमीज!

माधो को यह सुनकर बडी खुशी हुई। वह कई रोज स चाहता था कि उसका भी भाई उसे दूसरे लडको की तरह जेबो वाला जाघिया बनवा दे जिन्हे हाफपेंट कहते हैं। वह ताली बजाकर बोला "भानी! इसे जाघिया नहीं हाफपेंट कहते है। उसके पट्टे जरूर लगवाना। मैं कमीज भीतर डालकर उसे पहनूगा। भात चोखी लगेगी।'

सब बनवा दूगा।' उसने उत्साह और विश्वास से कहा। फिर वह चला गया। माधो अकेला रह गया। उसे याद आया कि भानी कई रोज से कमठाणे नही जा रहा है। फिर ये रुपये कहा से आते है ? वह सोचता रहा पर उसकी छोटी सी अकल मे कुछ भी नहीं आया। 'भानी क्या करता है?' इस प्रश्न का कोई उत्तर वह अपने आप से नही पा सका।

दूसरे दिन शनिवार था अत वह स्कूल से जल्दी लौटा आया। भरी दोपहरी थी। सारा मोहल्ला सन्नाट म डूबा हुआ था। बस्ती

यारान सी लग रही थी।

उसने देखा—उसके घर का दरवाजा भीतर से बन्द है। उसने किवाड़ खटखटाये। भौंनो ने भीतर से पूछा कौन है?

मैं हूँ भौंनी।

ठहर दरवाजा खोलता हूँ। फिर उसने भीतर से ही वहां जाकर देख था कि बापू घर में है कि नहीं।

पर पहले दरवाजा तो खोल। मेरे हाथ में बस्ता है। अपने शब्दों पर जोर देते माधो बोला।

चाबी ढूंढ रहा हूँ दायें हाथ से रख दी है सो मिल ही नहीं रही है। जा जल्दी से देखकर आ।

जाता हूँ। कहकर माधो चल पड़ा। पर उसे कुछ वहम हो गया था। इसलिये वह मुड़ मुड़ कर देखता रहा। अचानक उसे अपने घर से एक लड़की निकलती हुई दिखायी पड़ी। वह उसे जरा भी नहीं पहचान सका। वह जल्दी से बापू के घर जाकर आया। घर में घुसते ही उसने भानी से पूछा घर में से छोरी कौन सी निकली थी?

कोई नहीं। उसने साफ इन्कार करते हुए कहा।

वाह! तू भी अजब है। मैंने उसे अपनी आँखों से देखा था। वह लाल ओढ़ना ओढ़े हुए थी।

अरे कोई नहीं थी। फालतू बक-बक न कर। ज्यादा चीं चप्पड़ की तो मारूंगा दो चार थप्पड़। जा अपनी पढ़ाई कर।

भाई की झिड़की से माधो डर गया। ऐसी झिड़कियाँ उसे यदा-कदा ही मिलती थीं। किन्तु आज उनमें अधिक तिक्तता थी। भौंनी का आया में झिड़कते हुए लाज भरे उत्तर आये थे। वह विगलित हो उठा। उसकी आँख भर-भर आयी दो चार आँसू भी टपक पड़े। आँसू देखते ही भानी का हृदय पिघल गया। गहरी आत्मीयता मैं आश्चर्य का मिश्रण करता हुआ वह बोला पगले रोता क्या है जरा सी बात

पर रोने लगा। देख मैं तेरे लिए क्या लाया हूं ?" उसने माधो को अपनी बगल में दबा लिया। फिर उसे घसीटता हुआ सा भीतर ले गया। एक कोने में से मावे के लड्डू निकालते हुए कहा, ले खा देख मैं तेरे लिए कितनी बढ़िया चीज लाया हूं, सब खा ले।"

कुछ देर वह आनाकानी करता रहा। और भानी अनुराध। अंत में भानी ने उसको गुदगुदी की। माधो हँस पड़ा। फिर उसने लड्डू खाये। भानी किसी खास काम का जाने की कह कर बाहर चला गया।

लड्डू टूटे हुए थे। माधो को वहम हो गया कि उस छोरी ने जरूर इन लड्डुओं को खाया है। अचानक वह हाथ धोकर मूलकी के पास गया। मूलकी के पति की कई रोज से तबीयत ज्यादा खराब थी अतः, वह मजदूरी पर नहीं जा रही थी। माधो को देखते ही उसने चक्की चलाना बन्द कर दिया। मूलकी सारा आटा स्वयं पीसती थी। उसका कहना था कि आटा पीसने से तन्दुरुस्ती ठीक रहती है।

क्या रे माधो पढ़ने नहीं गया ?"

'गया था आज आधी छुट्टी हो गयी।' माधो उसके सन्निकट आ गया। धीमे से बोला मौसी एक बात कहता हूं पर तू भानी को मत कहना।

नहीं कहूंगी।'

आज भानी एक छोरी को लेकर घर में बैठा था और कई रोज से कमठाणे भी नहीं जा रहा है।

मूलकी उसकी बात से गंभीर हो गयी। उसका आटे से सना मुखड़ा अजीब प्रभाव दे रहा था। अपने पल्लू से अपना मुँह पोंछती हुई बोली कौन थी छोरी ?'

पता नहीं। लाल ओढ़ना ओढ़े हुए था। मुझे भानी ने बद्रू के घर भेज दिया और वह पीछे से भाग गयी।"

मूलकी कुछ देर तक सोचती रही। माधो प्रश्नभरी दृष्टि से उसे देखने लगा। फिर फूंक मारती हुए बोली, अब समझी। वह छिनाल मटकी' होगी। बड़ी चटकार है। नयी-नया पतल चाटने की उसकी आदत पड गयी है। और तेरा भाई है न उसके लक्षण भी आजकल अच्छे नही है। वह 'गिरी हैं न जुआरी गिरी। उसके साथ रहता है। जुआ खेलता है। तास खेलता है। डर है कि कहीं दारू-वारू न पीने लग जाय।

माधो दारू के नाम से चौंक गया। इतना छोटा सा आदमी कैसे दारू पी सकता है ? फिर भाई को यह भी भली भाँति मालूम है कि दारू पी-पीकर उसके बापू उन्हें कितनी गालियाँ बकते थे कितनी मार-पीट करते थे। उसे यकीन नही आया। उसने मूलकी से पूछा 'क्या तूने भाई को दारू पीते देखा है ?

नही तो। मैंने उसे पीते हुए नही देखा। अन्दाजा लगाती हूँ कि वह पीने लगा होगा। यह गिरी है न बड़ा ही बिगड़ल है तीन कौड़ी का है। इस कोई लाज-शरम नही इसका कोई धरम-करम नही। एकदम गया-गुजरा है। इसकी संगत में ही हीरा पत्थर बन जाता है।

माधो थोड़ा सा चिन्तित हो गया। वह सोचता रहा कि भानी यह सब ठीक नही कर रहा है। वह कुछ देर तक यूं ही बैठा रहा। मूलकी बात का समापन करती हुई बोली, कोई बात नहीं मैं उसे आज रात को सब बात पूछूंगी।

और उसी साँझ से मूलकी भानी की ताक में बैठी रही। साँझ काजल सी रात में घुल गयी। उसके कान भानी के घर की ओर लगे हुए थे। लगभग दस बजे किसी ने दरवाजा खटखटाया। मूलकी जल्दी से बाहर निकली और उसने पूछा भानी है क्या ?

"हाँ मौसी।

'इतनी रात गये कहाँ गया था ?' मूलकी उसके पास आ गयी। भौनी ने किवाड खटखटाने बद कर दिये थे । मूनकी की ओर उन्मुख होकर बाला जरा दोस्तो के साथ बाइस्कोप (सिनमा) देखने चला गया था । अच्छा बाइस्कोप था । सती अनुसूया। मौसी ! सती अनुसूया ने ब्रह्मा-विष्णुमहेश को छोटे छोटे बालक बना दिया। भाग चाखा है यह बाइस्कोप। मौसी तू भी देख आ।

मौसी ने उसकी बातों पर काई विशेष ध्यान नहीं दिया। वह पुन पूछ बैठी तेरे साथ गिरी था क्या ?

एक झटका सा लगा भानी के हृदय पर। मौसी को यह कैसे मालूम हो गया ? मूलकी से उसका कोई सम्बध नहीं था। वह कुम्हार था और यह भाट। फिर भी सारे मोहल्ले में उसका अपना दबदबा था रूआब था। सारे मोहल्ले वाले किसी न किसी तरह उससे डरते थे। ठगते थे। वह भी डरता था। एकदम झूठ बोलता हुआ वह बोला नहीं मैं उसके साथ नहीं गया था। मैं अकेला था। बिलकुल अकेला।

वह तडाक से बोली तू झूठ बोलता है। देख भानी मेरे सामने झूठ मत बोलना। मैं सुबह ही झूठ-सच का पता लगा लूगा। अच्छा यही रहेगा कि तू सच-सच बता दे।'

मौसी तू विश्वास कर। मैं अकेला ही था।

कुछ देर तक मौन उनके बीच में आकर खडा हो गया। अँधेरे में कोई एक दूसरे के चेहरे के भावों को नहीं पढ पा रहा था। किसकी आँखों में क्या चमक रहा है इससे दोनो अनजान थे ?

मूलकी ने आघात की तरह दूसरा सवाल किया 'दोपहर को मटका तेरे घर मे थी '

भयभीत हो गया भानी। उससे कुछ बोला नहीं गया।

'झूठ बोलने की चेष्टा मत करना। मैंने अपनी आँखों से उस

घर म आने–जाने देखा था।' वह कुछ कहे इसके पहल ही मूतकी फिर चानी य लक्षण अच्छे नहा। इम मटकी ने कइया के घर म दीवार न्नवाटी है। भाइया म बर पन्ा कर दिया है। बडी गिरी हुयी औरत है। तुझे इसम सावधान रहना चाहिए। और यह गिरी है न पक्का जुआरी है। लागा का उल्टे सुल्टे रास्त पर डालता रहता है। मैंने तुझे आगाह कर दिया अपना धम समझ कर फिर तरी मर्जी। बिना उत्तर सुने ही वापस चली गयी। भानी को लगा कि किसी ने उसके समस्त अस्तित्व को झकझोर दिया है। उस बन्म बना दिया है। उसन बडी कठिनता स दुबारा किवड खटखटाय। इस पर भी जब माधो न आग नही खाली तब उसने उस जोर जोर से पुकारा। माधो ने आकर दरवाजा खाला।

कब साय ?

काफी देर हो गयी।

रोटी खा ना ?

हाँ तरे लिय बनाकर रख दी है।

दाना भीतर आ गय। माधा न चिमनी जला दी। प्रकाश टुकड–टुकड म होकर बिखर गया क्योंकि जहा चिमनी रखी थी उसआगे क आग कई छटा वाला शीशा लगा हुआ था। माधो न चिमनी के समीप ही माचिस रखन हुए कहा मुझे नींद बड जारा स आ रही है इसलिय मैं साता हू।

इच्छा क न रहन हुए भी भानी ने उसस पूछा पढाई वढाई कैसी चल रही है ?

ठीक चल रही है। माधो न मानते हुए कहा इतनी देर म मत आया कर। मुझे अकेन का डर लगता है।

कल स जल्दी आ जाऊगा। कहकर भानी खाने लगा। उसने एक टुकडा मुँह म डाला। उस वह जरा भी रुचिकर नही

लगा। उसे महसूस हुआ कि रोटी का वह टुकडा किसी पत्थर का टुकडा हो गया है । उसने रोटी वापस रख दी । वह खाना नही खायगा। उसे भूख नहीं है। उसके होठो पर कडवापन कैसे आ गया ? उसके मस्तिष्क म घिर गयी—मूलकी मौसी की बातें !

वह उदास बहुत ही उदास हो गया।

●

मूलकी मौसी ने जो भविष्यवाणी की वह सच निकली। भानी जो शुरू से ही मेहनती ईमानदार और सहिष्णु था, अब बदलने लगा। मूलकी ने एक दिन गाल पर उगली रखकर माधो से कहा, यह गिरि है न यह कितना आवारा और लफगा है कि इसकी सगत म जो पड जाय वह तीन जहान म चला जाय । यही हाल भानी के हो रहे हैं। पक्का जुआरी हो गया दारू पीने लगा मटकी खर इस गड की मैं सारी चाँय-चाँय मिटा दूगी। बहुत ही हल्लर फल्लर कर रही है। तारा लगा हुआ है। पडत जी ने मना कर रखा है कि 'तारे' मे किसी नयी दुलहन को पहली बार ससुराल नही बुलानी चाहिए। एसा करना अशुभ होता है । तारा दस दिन के बाद उतरेगा फिर तेरी भौजाई को तेरे घर लाकर बिठा दूगी । कितनी फूटरी है। खपसूरती देखते बनती है । एस सुन्दर हाथ पाँव निकाले है कि यह

भानी घर छोड़ कर जायगा ही नहीं। घाघरे का ढेर' बन कर रहेगा।'

यह तारा क्या होता है।'

ये सब पण्डिता-ज्ञानियों के अड़ंगे हैं। पर इस मामले में आखिर उन्हीं की बात माननी पड़ती है। न मानो तो बड़ा भय लगता है। कुछ बुरा घट जाने की आशंका रहती है। भगवान! किसी का बुरा न करे। कह कर मूलकी ने एक मिनिट के लिए अपना कान पकड़ा और फिर अपना स्वर बदलती हुई वह बोली पर मैं तेरे भाई को सुधार कर ही दम लूंगी। तेरी भौजाई को वह पट्टी पढ़ाऊंगी कि भानी सारी आवारागर्दी भूल जायगा।'

मौसी! मुझे आजकल उससे डर लगने लगा है। अपने हृदय के संशय को प्रकट करते हुए माधो बोला वह दारू पीकर चोर की तरह आता है। मुँह छुपा कर सो जाता है। उसके चेहरे पर बापू की तरह क्रोध नहीं रहता। एक दो मिनट नखरा करता है फिर वह सो जाता है। हालांकि दारू पीकर आदमी बुरा बनता है पर भानी का प्यार मेरे प्रति दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। वह मेरा ध्यान अधिक रख रहा है। अच्छा खाना देता है अच्छे कपड़े देता है।'

'लेकिन यह सब वह लाता कहाँ से है? जुआ खेल कर! जानते हो जुआ एक बुरी लत है। उससे घर के घर तबाह हो जाते हैं। फिर यह गिरी है न बहुत ही लफंगा है। यह दस देकर पचास लिखाता है। हमीद मियाँ कह रहे थे कि उसके लड़के 'नजाकत' ने कह बताया है कि भानी कर्ज में बहुत ही दब गया है। खुले हाथ से कर्ज लेता है। बाद में उसे किसी बुरे नतीजे में टकराना पड़ेगा। क्योंकि माधो कोई अपना कर्ज नहीं छोड़ता कोई वसूली में दया नहीं दिखाता।'

माधो मूलकी की ओर इस तरह टुकुर-टुकुर देख रहा था जैसे वह उसकी बातों के मर्म को नहीं समझ पा रहा है उसके लिए ये बातें

भारी भरकम है। मूलकी इस बात की कोई चिंता न करते हुए कहती रही, कोई ऐसे कज नही देता।" उसने सदा कि तरह दोहराया "यह गिरी है न, बहुत ही नफगा आदमी है। कभी तेरे भाई को जेल भिजवा देगा। तब कैसी स्थिति होगी, जरा सोचो?'

'मुझे कुछ नही मालूम!" उसने अत्यन्त ही अबोधपन म कहा, 'मुझे सिर्फ भय लगता है भय।"

फिर उसने विश्वास से कहा, "मैं सब ठीक कर दूंगी। तू कोई चिंता न कर।"

माधो ने अनमन भाव स कहा, 'मैं जाता हू मौसी, रोटिया बनानी हैं और कुछ मदरसे का काम भी करना ह।"

जा बेटा जा। अपना काम कर। उसकी तरह अवारा न बनना।'

माधो चला आया।

घर म एकात! मौन और एकात दोनो मिलकर भयपूर्ण स्थिति को उत्पन्न कर रहे थे। मौसी की बातें चाहे कितनी ही सच्ची और प्रभावशाली क्या न हो पर उन सबने माधो कि अक्ल को झिझोड कर उसमे एक भय जरूर उत्पन्न कर दिया था। वह बैठा-बैठा सोचता था कि उसका भाई जो कर रहा है, वह अच्छा नही कर रहा है। वह भाई को मना करेगा जरूर मना करेगा।

पाँव की आहट न उसके ध्यान को भग किया। उसन देखा भानी सब्जी लेकर आया है। वह सब्जी का थैला रखते हुए बोला, 'रोटियाँ सेंकली?"

'नही तो।'

"क्या?"

जरा मूलकी मौसी क पास बैठ गया था। वह कह रही थी कि भानी लफगा बन रहा है। भाँनी! तुझे गिरी के साथ नही रहना

चाहिए।"

'वह बकती है।' उसने माधो को ताड़ना दी 'सुन माधो अपना वक्त फालतू बातों में न बिताया कर। सारा ध्यान पढ़ने लिखने में लगा। दफ्तर का बाबू ऐसे नहीं बना जाता? उसके लिए खूब मन लगा कर पढ़ना पड़ता है। रही सूनकी मौसी की बातें! उसकी इधर-उधर बात करने की आदत है। वह आदत से मजबूर है। लोगों की सच्ची-झूठी बात न करे तो उसे खाना ही न पचे। फिर तुझे इन बातों से क्या लेना देना तेरा पहला काम है—पढ़ना सिर्फ पढ़ना।'

माधो इस डांट से जरा डर गया। वह चूल्हा जलाने लगा।

आटा पीपे में से निकालते हुए पहली बार भाभी ने सिसककर कहा 'पता नहीं तेरी भौजाई इस घर में कब आयेगी?'

माधो ने हर्ष भरे स्वर में कहा 'तारा उतरने पर!' भाभी सूनकी मौसी भी यही कह रही थी।

•

आखिर एक दिन माधो की भाभी सूरजड़ी आ ही गयी। गरीब घर की वह लड़की अपने साथ गहने-जेवर कुछ भी नहीं लायी पर उसमें शालीनता मधुरता और मेहनत करने की अपूर्व क्षमता थी। भाभी ने पहली रात को मुँह दिखायी चाँदी की एक 'रमझोल' दी

जो चलने पर छम छम बजती थी। सूरजडी ने आते ही सारा घर सम्भाल लिया। वह मूनकी से हर बात पर सलाह–मशविरा लिया करती थी। उसी की वजह से आखिर एक रात सूरजडी ने भानी से कहा, "तुम दारू क्या पीते हो ? जुआ क्या खेलते हो ?

भानी ने उस बात को टालना चाहा। वह बोला फालतू बात न किया कर। सुन माधो ठीक पढ़ता है या नहीं ?

"पढ़ता है। फिर सूरजडी अपनी बात पर आ गयी "तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया। तुम उस लफंगे गिरी के साथ क्या रहते हो ?'

वह थोड़ा उत्तेजित हो गया। कड़क कर बोला 'कह दिया न अपना सिर फालतू बातों में न खपाया कर। ज्यादा जबान लड़ाई तो ठीक नहीं रहेगा। फिर वह अपने आप से जैसे बोला यह मूनकी मौसी न जाने लोगों को क्या पढ़ाती रहती है उल्टी सुल्टी पट्टी। कभी मेरा उससे झगड़ा होगा। सुन, जाकर इस मूनकी को कह देना कि वह मेरे बीच में न आया करे मेरी बातें करना बन्द कर दे वर्ना कभी मैं उसका मुँह भाड़ दूँगा। खुद तो मालजादी है और बातें करता है भक्तिन जैसी। हुँ !

सूरजडी डर गयी। कहीं भानी बात का बतगड़ न बना दे और मूनकी मौसी से झगड़ न ले इस बात से डर कर वह बोली उसे हमारे बीच में तुम क्या लाते हो ? वह बेचारी तो कहती है हमारे भले के लिए ही कहता है वर्ना पराये के सुख-दुख में आजकल कौन पड़ता है ?

मुझे उसकी कोई जरूरत नहीं है। पहले भी उसने माधो से कहा था। बस, तू उसे मना कर देना। इसी में उसका भला है। कहीं गुस्से में कुछ अट–सट निकल गया तो उसे बुरा लगेगा।'

रात का रंग और गहरा काला हो गया था। माधो सो गया

था। सूरजडी के आने ही उसे अपने पढने लिखने की जगह को बदलना पडा था। आजकल वह बरमाली म पढता और सोता है। बरमाली म अभी भी प्रकाश फला हुआ था।

"यदि माधो सो गया है फिर चिमनी क्या जल रही है ?" तनिक गभीर होकर भानी ने सवाल किया।

'शायद वह पढता–पढता सो गया होगा। सूरजडी ने गहरी आत्मीयता से कहा, माधो बडा मन लगा कर पढता है। कह रहा था भौजाई इस बार मैं फस्ट आऊगा। पर मैं फस्ट–वस्ट नही समझा। इसलिए अपनी बात को खुलासा करते हुए उसने समझाया कि मैं पढने म पहला नम्बर लाऊगा। इतना अच्छा और सीधा लडका ढूढे नही मिल सकता।'

बहुत ही सीधा लडका है। अपनी गदन को लटकाते हुए मानी बोली माँ इसका बहुत ही लाड करती थी। उसके मन की एक ही इच्छा थी कि उसका माधो दफ्तर म नौकरी करे। दफ्तर का बाबू बने। मैं चाहे किसी भी हालत म रहू पर तुझे वचन देता हू कि मैं माँ की इस इच्छा का जरूर पूरा करूगा। और तू भी इसका वचन ही लाड–चाव करना। इसे किसी बात की तकलीफ न हो।

मेरा तो इसके कारण मन लगा रहता है। उसने अपनी दृष्टि म भरपूर अपनत्व लाकर कहा तुम्हारा क्या पता ? सूरज उगे निकलते हो और सूरज डूबने के बाद घर म पाँव रखते हो। इस माड म सूना मौसी और माधो दोनो ही मुझे ऊबने नही देते। अब तुम भी आप–आप सुनते मुझे अच्छी का ज्यादा मानती लगता है। फिर साँझ पडने के बाद यहाँ सभी लोग अपने–अपने काम म लग जाते हैं। माधो पढने बैठ जाता है तब मैं अकेली रहती हू। तुम साँझ पडते ही घर आ जाया करो।

आ जाया करूगा।

"वचन दो।"

सूरजडी की फटी हुयी पर अपनी हथेली रख कर भानी ने दबा दी। जरा और जोर से दबा कर उसने अँधेरा कर लिया।

दूसरे दिन सुबह ही मटकी आ गयी। आकर वह भानी से दो रुपये मागने लगी। कहने लगी कि उसे रुपयों की सख्त जरूरत है। भानी उसे टाल रहा था कि अभी उसके पास एक पाई भी नहीं है।

मटकी अपने स्वर को जरा कठोर बना कर बोली, 'खाली पल्ला झाड़ने से काम नहीं चलेगा। मुझे दो रुपये अभी ही चाहिए।'

वह लाचारी से बोला तू समझती क्यों नहीं? अरी मेरी लुगाई घर में है। उसको मालूम पड़ गया तो घर में जग हुआ हो जायगा।

मटकी पर इस बात का कोई असर नहीं हुआ। सभी बन्धनो से मुक्त मटकी थोड़ी भी डरने वाली नहीं थी। उसे न इज्जत का भय था और न कुटुम्ब गौरव का। कड़क कर बोली 'मैं तेरी लुगाई की रखैल नहीं हू। तू ने मुझे क्या बुलाया था? दे मुझे दो रुपये।'

कह दिया न कि मेरे पास अभी एक पैसा भी नहीं है। तू अभी चली जा वर्ना ठीक नहीं रहेगा। आँख तरेर कर भानी ने कहा, "तुझे थोड़ा ख्याल रखना चाहिए।

'मुझे आखें दिखाता है। वह कड़क कर बोली 'मैं तेरी इन आँखो से नहीं डरती। मैं हराम के रुपये नहीं माग रही हू। तूने बुलाया था मुझे।

सूरजडी घू घट निकाल कर किवाड़ के पीछे आकर खड़ी हो गयी थी। उसे मामला समझते जरा भी देर नहीं लगी। यह सर्वविदित था कि मटकी का भानी से नाजायज सम्बन्ध रह चुका है। सूरजडी को एक पीड़ा सी हुई। गुस्सा भी आया। माधो हाथ में पुस्तक लिये हुए निस्तब्ध सा खड़ा था। सूनरो इन बातों में सबसे आगे रहती ही है।

भर म त्र्गे–साँवली पर ओढ़ना डालती हुई वह बाहर आयी। मटकी का दर्शन ही उसका पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। तन कर बोली ए छिनाल! क्या घर–गिरस्ती लोगों के बीच धमा–चौकड़ी मचा रखी है? रंडी के पकड़ कर भौंटे (रूखे उलझे बाल) साम मारूंगी।

मूनकी का हमला इतना जल्दी और अप्रत्याशित हुआ था कि एकत्रित भीड़ हतप्रभ रह गयी और बहुत से मर्द औरतें घरों से बाहर आ गये। सब की आंखों में प्रश्न नाच रहे थे। मटकी मूलकी के अप्रत्याशित आक्रमण को नहीं सम्भाल पायी। वह खुद जवाबी हमले के लिये तैयार हो इसके पहले ही मूलकी ने फिर कहा सुनो गली गुवाड़ वालो यह कहाँ की शराफत है कि एक लफंगी औरत शरीफों की गुवाड़ में आकर हो–हल्ला मचाये। उसकी इस बात ने मोहल्ले के लोगों पर तुरन्त ही अच्छा प्रभाव किया। शरीफों की गुवाड़ ये शब्द पल भर के लिये चौड़े लोगों के मस्तिष्क में गूंजे और वे शीघ्रता से भानी के मकान की ओर लपके। उन्हें देखकर मूनकी की हिम्मत बढ़ गयी। वह झपट कर मटकी के पास आया। उसका हाथ पकड़ कर बोली यहाँ से अपना काला मुंह लेकर चुपचाप चली जा वर्ना रंडी के चूंथे (सिर मूल बाल) उखाड़ दूंगी। भाग यहाँ से।

अब की बार लोग भी उस पर तरह–तरह की गालियों की बौछार करने लगे। मटकी घबरा गया। वह लौटती हुई बोली सुन रे भानी मेरे दो रुपये पन्द्रह दिना। बस वह देना है वर्ना भरे बाजार में पानी उतार दूंगी।

मटकी भीतर ही भीतर काफी घबरा चुकी थी। सारा मोहल्ला वालों की भीड़ उसे घेरने लगा था। फिर भी उसका हार न स्वीकारी दे इसलिये उसने यह अन्तिम धमकी दी। उसके जाने के बाद बहुत देर तक मोहल्ले का वातावरण गर्म रहा और बाद में पूर्ववत् शान्ति

छा गयी।

पहली बार भोंनी ने सूरजडी के समक्ष अपने आप को अपराधी अनुभव किया। माधो के सामने भी उसे सकोच लगा। वह चुपचाप अपने कमरे में आकर बैठ गया। सूरजडी रोटियां बना रही थी। रोटियां बनाती-बनाती रो रही थी। उसकी सुबकियां कभी कभी भोंनी व माधो के कानों में पड़ जाती थी। आखिर माधो अपनी भाभी के पास आया। आकर स्नेहिल स्वर में बोला भौजाई! मुझे खाना मिला दे मदरसे का टम हो रहा है।'

सूरजडी ने अपने आँसुओं को पोछा। आँसू पोछ कर उसे खाना परोस दिया। खाते समय माधो के मन में यही द्वन्द्व चलता रहा कि आखिर भाई ने इस गन्दी व कोजी (भद्दी) मरदी में क्या पाया कि वह भौजाई से छिप कर छि यह भी गन्दा आदमी है। फिर भी वह यन्त्रवत खाना खाता रहा। खाना खाकर वह स्कूल चला गया।

उसके स्कूल जाने के बाद सूरजडी भी खाना बनाकर रसोई से बाहर निकली। उदास और ग्लानि से पीडित। भोंनी निस्पन्द सा बैठा था। सूरजडी ने कुछ पल उसको व्यथाजनित प्रश्न भरी दृष्टि से देखा फिर दूसरी ओर मुँह करके बोली रोटियाँ बना दी है। खालो।

भोंनी ने उसकी ओर देखा। वह वहाँ से सीधी आकर बरसाली में माधो की खाट पर बैठ गयी। वह उसके पीछे-पीछे उठकर आया। कुछ सहमा-सहमा सा।

सूरजडी उसे देखकर अपना मुंह घूँघट में छुपा लिया।

नाराज हो तुम ?

' वह नहीं बोली।

'मैं तुझे सच कहता हूं कि इसमें मेरा कोई कसूर नहीं है। यह

मटकी बड़ी 'मालजादी है । शरीफा को ठगना इसका पेशा है । तेरे आने के बाद मैं इससे बोलता भी नही हूं ।"

भानी की कमजोरी सूरजडी के हाथ लग गयी । गुस्सीले स्वर म बोली, अब समझी मेरे आने के पहले उस छिनाल से जरूर बोलते थ । आज मुझे मालूम हो गया कि आदमी का मन बडा पापी होता है । वह अपनी बहू को तो ताले म बन्द रखना चाहता है और खुद बिना लगाम के घोडे की तरह घूमना चाहता है ।

भानी ने फिर सफाई दी इसम मेरा अधिक कसूर नही है । सगत का असर है । तुझे मेरी बात को समझना चाहिए ।'

वह जरा कठोर हो गयी । तनिक तीव्र स्वर म बोली तेरा मानो इस तरह यदि मैं करने लगू तो ? मुझे पक्का विश्वास है कि तुम जमीन-आसमान सिर पर उठा लोगे और मुझे कानी चादर ओढा कर घर का दरवाजा दिखा दोगे ।

इस चुनौती से वह जरा डर गया । सचमुच यदि उसकी बहू घर म बाहर पाव निकालने लग जाये तो क्या उसकी इज्जत खाक म नही मिल जायगी ? क्या वह सिर उठा कर रास्ते से निकल सकेगा? क्या वह अपनी मित्र मडली म नाक ऊची करके बैठ सकेगा ? वह कुछ देर तक विद्रोहिणी नारी को देखता रहा । अत म वह उसके समीप बैठता हुआ चापलूसी भरे स्वर म बोला तू बात का बतगड बना रही है । मैं अब कोई भी गलत काम नही करूगा । इस मालजादी मटकी म बात करूगा तक नही । अब गुस्सा छोड दे । छोड न गुस्सा ।' और भानी न उसके गुदगुदी करना आरम्भ की ।

छोड न मुझे अरे छोड न । वह बन्दरिया की तरह उछल रही थी । भानी न अत्यन्त प्रेमभरे स्वर म कहा पहले वह कि माफ किया ।

अच्छा अच्छा ।'

सच्चे मन से।" उसे भौंनी ने बाँहों में भर कर चूम लिया।

"हाँ सच्चे मन से।" उसने अपनी बाहें उसके गले में डाल दी।

•

उस दिन के बाद मटकी का किस्सा खत्म हो गया। सूरजडी ने देखा कि वह रग्घू फिर कभी उधर से नहीं गुजरी और उसने फिर दो रुपयों का तकाजा भी नहीं किया। इससे उसे शान्ति का अनुभव हुआ और वह यह महसूस करने लगी कि उसका पति अपने दुर्गुण छोड़ रहा है।

एक दिन दोपहर को बरसात की धूप अपना रंग जमा रही थी। सूरज मानो आग निकाल रहा था। माधो का स्कूल नगर के राजा की वर्षगाँठ के उपलक्ष में बन्द था। दोनों देवर-भौजाई बरसाली में बैठे हुए पंखे से हवा कर रहे थे। पसीने की लकीरें दोनों के चेहरे पर बह रही थीं। आखिर सूरजडी ने अपना मौन तोड़ा—माधो तेरे भाई में अब और आदतें ठीक हो रही हैं पर वह जुआ खेलना बन्द नहीं कर रहा है। तेरा भाई इसके लिए लाख सौगन भी खा चुका है। सौगन तो उसके लिए मजाक हो गयी है।

मैं उसे कुछ नहीं कह सकता। वह मेरा बड़ा भाई है। मुझे

सिखाता पढ़ाता और खिलाता है। मुझे बहुत प्रेम करता है। भौजाई ! तू ही भाई को समझा सकता है।

मैं क्या समझाऊँ ? सूरजदी ने जरा खिन्नता से कहा 'वह मेरी एक बात से सुनता है और दूसरे कान से निकाल देता है। ज्यादा जिद करती हूँ तो गालियों के साथ मारने की धमकी भी देता है।'

फिर जाने दो। हम क्या पड़ा ?' माधो ने उस बात को एक तरह से समाप्त करते कहा, हमें सिर्फ रोटी-कपड़ा चाहिए और वह हमें मिलती ही है भौजाई।

सूरजदी गंभीर हो गया। बोला, पर देवर जी लोग कहते हैं तेरा भाई कर्ज में बहुत ही दब गया है। सूरजा मौसी भी कहती है कि इधर-उधर सभी जन उसको पलटा सोचते हैं। बड़ा परेशानी में है वह।'

माधो जरा गुनकर बोला अपने उत्तर में। कहे दिया ने हम सामला की परेशानी नहीं देनी चाहिए। ज्यादा हम उसके मामले में टांग अड़ायेंगे तो हम ही मुँह की खायेंगे। भाई स्वभाव का बड़ा ही उग्र है। भौजाई हम अपना मुँह मी बंद रखना चाहिए।

मुँह तो मी बंद रखा है। सूरजदी जरा क्रोधित स्वर में बोली पर माधो सिर का भार दोनों का ही है। अभी जिंदगी कितनी बाकी पड़ी है ?

तुम ठीक कहती हो भाजाई पर हम कर ही क्या सकते हैं ?' माधो सहमा विश्वास भरे स्वर में बोला मैं एक वचन देता हूँ तुम्हें, जब मैं दफ्तर का बाबू बन जाऊंगा तब तुम्हारे सारे दुःख हर लूँगा। तुम चिंता मत करो।

मैं राम सा बाबा से सदा यही विनती करती हूँ कि मेरे देवर को बड़ा आदमी बनाना।

यह बात चल ही रही थी कि भानी आ गया। आज वह बहुत

सुस्त था। आकर चुपचाप माधो की खाट पर पड गया। बहुत टूटा सटा और बहुत खिन्न मन।

माधो और सूरजडी भय भरी दृष्टि से एक दूसरे को देखने लगे दोनो ने आँखो ही आँखो में बातें की। भाँगी आँख मूद कर पडा रहा। आखिर माधो ने साहस करके पूछा "क्या बात है?

' ।' भाँगी कुछ नही बोला।

"कुछ कहो न?' सूरजडी बोली।

इस बार भाँगी ने करवट बदली। उन दोनो को न देखते हुए वह बोला ' पाँच रुपयो की सख्त जरूरत है।

माधो इस प्रश्न से चुप हो गया।

सूरजडी उसके सन्निकट आकर बोली 'क्या? ऐसा काम क्या आ पडा?"

"कोई काम आ पडा है। यदि तुम लोगो के पास हो तो दे दो।'

पर तुम यह भी बताओगे कि आखिर ऐसी जरूरत क्या पड गयी?

'हजार सवाल करने की कोई जरूरत नही है यदि पास हो तो दे दो वर्ना चुप्पी साधो।'

सूरजडी कुछ देर तक सोचती रही। बाद में उठती हुई बोली, तुम कहो तो मूलकी मौसी के पास जाऊ।'

'यदि वहाँ से ला सकती है तो ला दे।'

सूरजडी चुपचाप उधर चली। उसके मन में एक घुटन और एक विवशता सी थी। कैसी बुरी लत लगी है इसे? हे राम सा बाबा अब तू ही रक्षक है।'

मूलकी मौसी अपने पति के पाँवो पर धीरे-धीरे तेल मालिश कर रही थी। जिस दिन उसके पति की तबीयत ज्यादा खराब हो जाती थी उस दिन मौसी मजदूरी पर नही जाती थी। घूघट में खडी सूरजडी

को देखते ही मूलकी न पूछा, 'क्या बात है बहू ?"

उसने टिच्-टिच करके टिचकारी दी। हाथ का सकेत करके अपने पास बुलाया। एक कान म उस खीचती हुई सी बोली पाँच रुपया की सख्त जरूरत है।

क्या ?"

'अरे तेरा बच्चा मुँह उतारे उठा है। मुझसे उसकी यह हालत नही देखी जाती। तू एक बार दे दे मैं दो-तीन दिन म वापस कर दूगी।'

मैं सब समझ गयी। मूलकी न जरा तेज स्वर म कहा यह गिरी है न इस तीन जहान से गवायगा। अरी बहू! अभी समय नही निकला है। उसे काबू म लेल वर्ना यह एक दिन घर की ईट ईट बेच देगा।'

मैं क्या करू मौसी ? ज्यादा रोक टोक करती हूँ तो मरने-मारने की धमकी देने लगता है। तेरे पास पाँच रुपये है!

है तो सही।

फिर एक बार दे दे। दो-तीन दिन म वापस कर दूगी।

कान खोल कर सुनले बहू तीन चार दिन म वापस कर देना।'

एकदम कर दूगी।

वह पाँच का नोट लेकर आयी। उसने नोट भानी के हाथ म थमा दिया। थमाते हुए उसने कहा कल ही लौटा देना है। मौसी से बड़ी मुश्किल से निकलवा कर लायी हूँ।

ईश्वर ने चाहा तो शाम को ही लौटा दूगा। भानी यह कह बाहर चला गया।

माधो ने उसके जाते ही कहा इसको तो एक ही बात सूझती है जूआ सिर्फ जूआ! सीधा जाकर जूआ खेलेगा।'

सदा की तरह सूरजडी ने बड़े प्यार से कहा देवर तुम इन

लना स सदा दूर रह कर अच्छे आदमी बनना। फिर वह बहुत ही गभार हो गयी। वह भीतर घुट रही थी। हठात् बोली, "बचपन म शादी होने का सबसे बडा यही नुकसान है कि कोई किसी को असली रूप मे पहचान नही सकता।"

"इसलिए मैं अभी शादी नही करूगा। पहले अपने पावा पर खडा होऊगा बाद म शादी फादी करूगा। मैंने देख लिया भौजाई बचपन की शादी जवानी म बडी कष्टदायक होती है।"

सूरजडी न कोई उत्तर नही दिया पर उसकी स्थिर दृष्टि कह रही थी कि तुम ठीक कहते हो देवर।

उसी रात लगभग आठ बजे भोली बहुत खुश होकर आया। उसके हाथ म 'रवडी का कुल्हड था। उसन घर म घुसते ही आवाज लगायी माधो ! अरे ओ माधो।

चिमनी का उजाला आँगन म म बरसाली म आ रहा था। माधो सूरजडी के साथ रसोइ के दरवाज के आगे खडा खडा बातचीत कर रहा था। भोली की आवाज सुनकर वह बरसाली म आया। उसे आते ही पता लग गया कि भाई आज बहुत ही पीकर आया है।

'क्या है ?' माधो ने धीमे से पूछा।

ले रवडी खा। और तेरी भौजाई कहाँ है ?"

खाना बना रही है।'

भोली उसके पास गया। जाकर अपनी अंटी में से पाँच-पाच के चद नोट निकाले। उसमे स पाच का एक नोट निकाल कर उसे दिया और कहा 'जा अपनी सूरजी के सिर पे द मार। फिर माधो की ओर उन्मुख होकर बोला 'आज खूब छक कर खायगे। तेरी भौजाई जब रोटियाँ बना लेगी तो ?'

'बनाली-बनाली।" सूरजडी ने तेज किंतु प्रसन्नता म डूबे स्वर मे कहा और मूलकी मौसी के घर की ओर चल पडी।

जब वह लौटी तब भानी कह रहा था " माधो। तुझे अपनी माँ की आशा पूरी करनी है । तू किसी बात की चिंता न कर मैं तुझे पढ़ाऊँगा चाहे मेरा कितना ही पैसा लग जाय ।'

सूरजडी पास आयी। तनिक उपहासमिश्रित स्वर में बोली, 'कभी अपने भाई के लिए ही सब कराग या कुछ घरवाली पर भी ध्यान दोगे ।'

'क्या नहीं ?' कहकर उसने अंटी में से पाच-पांच के दो नोट निकाल कर सूरजडी को थमा दिये और एक माधो को ... तुम दोनो कपडे बना लेना।

घर के कोने कोने में प्रसन्नता बैठ गयी थी उस दिन ।

•

नियति का चक्र बडा विचित्र है। जहा पर वह फूल खिलाता है, वहां पतझड का आह्वान भी कर देती है ।

जिन बातो के लिए भूनका मौसी सदा आशंकित रहती थी सूरजडी के मन में भी रह रह कर वे ही सवाल उठते थे और माधो भी कभी कभी जिद्द साधकर उदास हो जाता था वे ही बातें अब सप्रमाण प्रकट होने लगी थी कि भानो की लाल्भ एकदम गलत हो गयी। वह कर्ज में काफी दब गया है उसकी शराब की मात्रा अधिक बढ़ गयी है।

उन दिनों माधो नवीं में पढ़ता था। कुम्हार जाति में इस तरह पढ़ने वाला में वह दूसरा या तीसरा लड़का था। बीकानेर के ब्राह्मण और वैश्य जाति के लड़कों में इसकी जलन थी और वे लोग कहा भी करते थे कि थोड़े दिनों में ये कुम्हारड़े पण्डित बनेंगे और हम मिट्टी के बरतन मिलने बंद हो जायेंगे। किंतु माधो सब कुछ सुन कर पढ़ता था सिर्फ पढ़ता था। हालांकि इधर घर का वातावरण भी काफी विषाक्त था। भानी और सूरजड़ी के बीच प्रायः ठन जाती थी। भानी उससे रुपये चाहता था पर वह बेचारी कहाँ से लाकर देती? सूतकी मौसी के भी लगभग पच्चीस रुपये कर्ज हो गये थे। सूरजड़ी ने अपने पावा की वह रमझोल भी उतार कर दे दी थी जो भानी ने उसे सुहागरात के दिन मुँह दिखायी की दी थी। देते समय सूरजड़ी ने कहा था 'आज मुझे महसूस हुआ है कि मेरे भाग बड़े खराब हैं मुझ पर जरूर कोई बड़ा कष्ट आयगा।'

भानी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

उस रात वह बहुत ही पीकर आया था। माधो और सूरजड़ी दोनों बरसाती में बैठे हुए आग तप रहे थे। धीरे धीरे बातचीत कर रहे थे। एकाएक भानी को लगा कि ये दोनों जरूर उसके बारे में ही बातचीत कर रहे हैं अतः वह घर में घुसते ही तनिक तिक्त स्वर में बोला 'क्या देवर भोजाई में छन रही है मुझे घर से निकालने की योजना बनायी जा रही है।'

"छि। सूरजड़ी ने उसको झिड़का। वह एक तरफ खिसक गयी। भानी उन दोनों के बीच में बैठ गया। दारू की बदबू से सारी बरसाती महक उठी थी।

कड़ाके की ठंड थी। कोहरा भी पड़ने लगा था। इस बस्ती के चारों ओर रेत के टीले थे इसलिए सर्दी और अधिक प्रभाव बना रही थी।

"नहीं, मैं तो ऐसे ही पूछ रहा हूँ?" एकदम सूरजड़ी के नेत्र

बदलते ही कुछ नरम पडते हुए भोंनी ने कहा, 'अरे ! मैं तो यूंही मजाक कर रहा था।

माधा ने भी अपना मौन तोडा, तेरी मजाक ठहरी और मेरी जान निकल गयी। भाई तुझे मैं बहुत मानता हूँ। यदि तू मेरी चमडी की जूती बनाना चाहे तो मैं तुझे दे सकता हूँ। तेरे अहसान मुझ पर भगवान् से कम नहीं पर तू आजकल बहुत ही गलत लाइन में चला गया है। हर आदमी कहता है कि भोंनी ने बहुत कर्ज ले रखा है।'

सब लोग ठीक कहते हैं। भोंनी ने उदास स्वर में कहा मुझ पर बहुत कर्ज हो गया है और तकदीर भी खराब है। इधर एक दाव भी सीधा नहीं पडा है।

'फिर इन बुरे कामों को छोड कर तुम अपना पुराना धंधा क्यों नहीं करते ? तुम वापस कमठाणे जाना शुरू करदो। रूखा-सूखा जो भी मिलेगा खाकर हम सन्तोष कर लेंगे। सूरजडी का स्वर बहुत ही करुण और कोमल हो गया मेरी कमाई से आत्मा कितनी सुखी रहती है। माधा के भाई ! फिर कुछ सालों में माधा इसकी काम कर लेगा तब हमारे सारे दुःख दूर हो जायेंगे। फिर तुम राजा जी की तरह राज करना और अपना माधो काम-काज करेगा।

भाभाई बिलकुल ठीक कहती है भाई। मुझे बरुडी नौकरी मिलते ही तुम यहाँ पर लकडी का पाटा बना कर बिठा दूंगा।

भोंनी कुछ पल खामोश रहा। सहसा सूरजडी ने उसकी ओर देखा तो दंग से सिमट गयी अरे तुम रात हो क्या रात हो। क्या लगा है। सुबह मैं तुम्हें यहाँ से दो-चार रुपये ला दूंगी। तुम मुंह मत उतारो। यदि किसी ने नहीं दिए तो मैं अपने चोटी के झुमके और हाथों की चूड़ियाँ उतार कर दे दूंगा।

नहीं नहीं मुझे रुपयों की कोई चिन्ता नहीं है। मुझे चिन्ता है अपने आप की। मैंने अपने कितने दुश्मन पैदा कर लिए हैं। गिरी तो

ाज्वन मुझ पर मामला करने की सोच रहा है । वह रहा था कि
ाँच सौ रुपये मागता हूँ।'

पाँच सौ।" एक साथ माधा और सूरजडी के मुँह से निकला
ौर वे प्रश्न भरी नजर स भानी का देखते रहे।

'हाँ परसा उसन शहर के वदनाम 'पागिया' से मुझे पिटवाया
ी था।"

माधो एक दम उत्तेजित हो गया। दो चार गालिया देकर वह
लते हुए स्वर मे बोला, 'उस नालायक पागिया की ऐसी की तैसी,
ी साले का कचूमर निकाल दू गा।

'नहीं माधो, हम राड नहीं बढानी है। मैं एक नया चक्कर
चलाऊगा। वस तू मुझे एक वात का वचन दे कि तू दफ्तर का बाबू बनेगा
किसी भी हालत म वनेगा।' वह थोडा उत्साह मे बोला 'कल मुझ
सपना आया था कि तुझे दफ्तर में नौकरी मिल गयी है। हम सब खुश
हैं। फिर माँ आती है उसका चेहरा कितना खुश नजर आता है? माँ
रोती रोती तुझे गले लगाती है कहती है मेरा वेटा दफ्तर का बाबू वन
गया।

वरसाती का वातावरण बोझिल हो गया।

सूरजडी ने बीच मे ही लम्बे स्वर म कहा 'अरे! क्या सब के
सब पत्थर की मूरतें बन कर बैठ गये। चलो खाना खालो।"

तीना न खाना खाया। माधो बरसाती म सो गया।

सूरजडी और भोंनी पीछे वाले कमरे में चले गये। कमरा अभी
उजाले से भरा था। सूरजडी न उसके किवाड बन्द कर लिये। रजाई मे
घुसती हुई वह बोली' 'तुम्हारे पाँव बहुत ठंडे हैं माधो के भाई।

"पाँव क्या, मेरा सब कुछ ठंडा है। माधो की भौजाई कल म
शहर छोड कर परदेश चला जाऊगा। वहीं जाकर कमाऊँगा। वडा
आदमी बनू गा।' उसने एकाएक अपना निश्चय सुनाया।

मूरजडी के हृदय पर आघात सा लगा। उसने झपट के भीनी के हाथ पकड लिय। व्यग्र स्वर म बोली, 'नही, माधा क भाई नही। मैं तुम्हे कही भी नही जाने दू गी। यह उम्र कही घरवाली स अलग रहने की है।'

'नहो।

फिर ऐमी बात क्या करत हो ?

मुझे नहर छोडना ही पडेगा। तू नही जानती कि मैं यहा जने-जने का कजदार हो गया हू। चारा तरफ लोग मेरा पल्ला खीचत है। और गिरी न मुझ जान म मरवान की धमकी भी दी है। तू जानती नही कि वह आदमी कितना नीच है ? सो सौ के पाँच सौ लिखा लिय मुझ स। अब वह तुझे चाहता है। कहता है कि तरी बहू का मेरे पास भेज दे। इस बात का लेकर आज मैंने उसका गला पकड लिया। बहुत ही गर्मा गर्मी हो गयी। तू ही बता कि एसी स्थिति म मैं यहा कसे रह सकता हू ? यदि रहूगा तो किसी क हाथ स पीटा जाऊगा या मुझे जल की हवा खानी पडेगी।

समस्या बहुत ही जटिल थी। फिर भी मूरजडी न आत्मा के असीम बन्धन से विवश हो कर कहा नही कुछ भी हो जाय मैं तुम्हे नही जान दू गी। उसकी आँख भर आयी। वह विगलित स्वर म बोली क्या तुम अपनी ऐमी नार को अकेली छोड कर चल जाओगे। तुम्हारा जी कैसे लगेगा ?

हार्दिक वेदना को अपनी आखो म भर कर भीनी न देखा। कितना अतुल रूप है उसकी घरवाली म। गोरा रग बलिष्ठ शरीर आकर्षक नाक-नक्श। उस अपनी बाँहो मे भर कर भीनी न कहा तुझ कोई निरदयी ही छोड कर जा सकता है। ऐसी चोखी और फूटरी बहू किसे मिलती है ? मैं इस मामले म बडभागी हू। पर मुझे कुछ दिनो क लिए बाहर जाना ही पडेगा। लोग कहत है कि परदेस म बहुत अधिक

पसा मिलना है।"

'पर मैं तो नही मिलूगी।"

'अभी उम्र बहुत बाकी है।' उसने धीरज बधाने के ख्याल से कहा, "कही परदेश म तुक्का चल गया तो तुझे राणी बना कर रखूगा।' सम्मा उसका स्वर व्यथा म डूब गया, यहाँ म कज से बहुत दब गया हू। कही मिरी मुझे जान से न मरवादे? अब तू ही सोच कही मैं मर खप गया तो?

सूरजडी ने उसके मुँह पर अपनी हथेली रखदी। फिर उसकी गोद म अपना सिर रखती हुई बोली 'मर तुम्हारे दुश्मन। तुम भले ही लाख समझाग्रो पर मरा मन तुम्हारे बिना एक पल भी नही लगेगा।

जानता हू।' उसन सूरजडी को बाहो मे भर कर उठाया। पहली बार उस एक नयी अनुभूति हुई। अपनी पत्नी के बारे म एक नयी अनुभूति। उसके रूप क बारे म एक नयी दृष्टि। कितनी खूबसूरत है उसकी पत्नी? उसकी नजर उस पर इस तरह टिक गयी जस आज उस सौन्दय के सागर को पी जाना चाहता है।

मुझे इस तरह मत देखो। कहकर उस एक बार अपनी बाहो में भर लिया। कुछ क्षण क उपरान्त भानी ने उसस कहा, मैं कल सुबह ही चुपचाप चला जाऊगा। तम नोरा को चिट्ठी लिखूगा पर तुम देवर-भौजाई किसी को भी मेरा पता न बतलाना। जब मैं सारा कज चुकता कर दूगा तब परन्तु यहा आ जाऊगा।

दुख की गहरी परछाइया उसके चेहरे पर छा गयी। वह करुणा स्वर म बोली पर यहाँ का खच?

'बराबर भेजूगा। मैं परदेश म भूखा मर सकता हू पर भग माधा पढ़गा।' सूरजडी का हाथ अपने हाथ म लेकर वह बोला 'माधा की पढाइ मे जरा भी अडचन नही आनी चाहिए।'

नही आयगी। सूरजडी न विश्वास स कहा, मैं आपको वचन

अपने मन के उद्‌गार को छुपाते हुए सूरजडी ने बहुत ही मद्धम स्वर म कहा, पता नही मैं जगी तब ही वह चला गया था। शायद तकाजा के डर से कही छुप गया हो।"

रोटी बनाली ?"

"हाँ तुम खालो। ठडी रोटी करने से क्या फायदा ? तुम्हारे भाई का क्या पता ? वह भ-भर आयी। उसने अपने आपको बहुत जन्त किया और बाहर निकल पडी। मूलकी मौसी चद्रमखा का काई भजन गा रही थी। प्रभु की स्मृति म खाने का भजन ' सूरजडी भी भानो की स्मृति म खो जाना चाहती थी।

'भाजाई ओ भाजाइ ! 'माधो न घर के दरवाजे के पास आकर आवाज दी। सूरजडी भावावश म बाहर निकल गयी थी।

सूरजडी उसी पाँव लौट पडी। आकर बाली, स्नेहिल स्वर म क्या है देवर जी ?

'मुझे तू खाना खिला रही थी न ? जल्दी स खिला दे। जरा मदरसे का काम करना है।

सूरजडी ने उसे परोस दिया। माधो ने पहला कौर लेकर कहा 'भोजाई बचपन म हम दोनो साथ ही खाना खाते थ। वह मेरा इन्तजार करता था और मैं उसका। इधर भाई अपनी दुनिया म मस्त रहता है। उसने दूसरा कौर लेकर किंचित उपहास भरे स्वर मे कहा फिर घर म बहू आने के बाद भाइयो म थोडा अलगाव हो ही जाता है। बडे-बूढे कहते हैं—हजार आदमी एक साथ रह सकते हैं पर एक औरत के आते ही उनका सगठन टूट जाता है।"

और सूरजडी सोच रही थी—अभी यह कितनी सहजता स खाना खा रहा है। थोडी देर मे इसे यह मालूम होगा कि भानी यह शहर छोड कर चला गया है तब जरूर उसे थोडी देर के लिए लगेगा कि एक औरत के आते ही उसका भाई उसे छोड कर चला गया।

अपने मन के उद्गार को छुपाते हुए सूरजमी ने बहुत ही मद्धम स्वर में कहा, 'पता नहीं, मैं ज्यों ही तब ही वह चला गया था। शायद तकाजा के डर से कहीं छुप गया हो।'

रोटी बनाली ?'

'हां तुम खालो। ठंडी रोटी करने से क्या फायदा ? तुम्हारे भाई का क्या पता।' वह भीतर आयी। उसने अपने आपको बन्द किया और बाहर निकल पड़ी। मूलकी मौसी चन्द्रमुखी का बाद भजन गा रही थी। प्रभु की स्मृति में स्नान का भजन। सूरजड़ी भी भाना की स्मृति में खो जाना चाहती थी।

भौजाई ओ भौजाई ! 'माधो ने घर के दरवाजे के पास आकर आवाज दी। सूरजमी भावावेश में बाहर निकल गयी थी।

सूरजमी उल्टा पांव लौट पड़ा। आकर बोली, स्नेहिल स्वर में, क्या है देवर जी ?

'मुझे तू खाना खिला रही थी न ? जल्दी से खिला दे। जरा मन्दिर का काम करना है।

सूरजड़ी ने उसे परोस दिया। माधो ने पहला कौर लेकर कहा, भौजाई बचपन में हम दोनों साथ ही खाना खाते थे। वह मेरा इन्तजार करता था और मैं उसका। इधर भाई अपनी दुनिया में मस्त रहता है।' उसने दूसरा कौर लेकर किंचित उपहास भरे स्वर में कहा फिर घर में बहू आने के बाद भाइयों में थोड़ा अलगाव हो ही जाता है। बड़े-बूढ़े कहते हैं—हजार आदमी एक साथ रह सकते हैं पर एक औरत के आते ही उनका संगठन टूट जाता है।"

और सूरजमी सोच रही थी—अभी यह कितनी सहजता से खाना खा रहा है। थोड़ी देर में इसे यह मालूम होगा कि भौजी यह बाहर छोड़ कर चला गया है तब जरूर उसे थोड़ी देर के लिए लगेगा कि एक औरत के आते ही उसका भाई उसे छोड़ कर चला गया।

खाना खत्म हो गया था । माधो हाथ धोकर व पानी म भ्रा गया था । रात के बाद एक बार रह बड़े जोर स लगती है। वह आकर रजाई म पड गया । चिमनी उसने जला ली थी । रजाई का अपना सहारा और तटपे कर वह पढ़ने लगा। पढ़ते पढ़ते वह सो गया।

सुबह वह उठा तो उसने देखा कि भौजाई अभी तक नहीं उठी है तो वह उसके कमरे के आगे जाकर किवाड खटखटाने लगा । वह बार–बार आवाज लगा रहा था— भाभी भाभी !

सूरजडी हडबडा कर उठी। माधो ने उसे देखते ही पूछा भाई अभी तक नहीं उठा ? और उसने जस ही भीतर झाँका वस ही उसे बिस्तरा खाली नजर आया ।

भाभी क्या है ? क्या वह रात को नहीं आया था ? तू बोलती क्या नहीं ?'

पहली बार सूरजडी के मन का धीरज टूट गया । उसकी आँखें भर आयी। उसने आँचल म अपना मुह छुपा लिया । माधो हैरान हो गया। पहली बार उसने सूरजडी का हाथ पकडा। प्यार से पूछा क्या बात है भौजाई ?

सूरजडी आश्वस्त करती रहा–अपने आप को।

माधो क्रोध मिश्रित गम्भीरता स बोला अब वह हद स बाहर हो रहा है । आज मुझे उससे कुछ कहना ही पडेगा । यह कोई भले आदमियों के ढग है कि रात रात भर गायब रहे।' फिर भाभी को उलाहना देते हुए बोला तू ही उसे सिर पर चढाती है । क्या नहीं रोकती टोकती ? मैं उसे ढूढ कर लाता हू । माधो ने अपनी रुई की जाकट पहनी और चादर ओढ कर बाहर निकलने की तयारी करने लगा कि सूरजडी ने उसे टोका कहाँ जा रहे हो ?

मटकी के यहा । वह उस रडी के यहा ही होगा । भौजाई मेरी जिद गन्दगी म मुह डालने की आदत हो जाती है उन्ह चाखी

ीजा से घिन हो जाती है।'

लेकिन वह वहां नहीं है।"

'फिर कहां है ?'

"मुझे मालूम नहीं।"

माधो एकदम क्रोध से भर गया, "मुझे बच्चा समझती है। आखिर नवीं में पढ़ता हूं। तुझे कम मालूम कि वह मटकी के यहां नहीं है ?'

सूरजडी कुछ भी नहीं बोली।

माधो का रहा सहा धैर्य भी जाता रहा। वह जरा तीव्र स्वर में बोला, 'तुझे सब कुछ मालूम है। तू मुझ से कुछ छुपाना चाहती है पर इतना याद रखना कि अधिक शील आदमी को बिगाड़ती ही है। खैर मुझे अधिक बोलने का हक नहीं है।' वह रूठ कर अपने बिस्तरे में घुस गया। सूरजडी उसके पास आयी। आकर रुंधे स्वर में बोली 'किसी से कहना नहीं देवर जी तुम्हारा भाई यह शहर छोड़कर चला गया है।'

माधो पर वज्रपात हो गया। वह अश्रु भरी दृष्टि से अपलक सूरजडी की ओर देखने लगा।

हां भैया वह चला गया है। हम से दूर बहुत दूर कलकत्ता। यहां उसकी जान का खतरा था। जन-जन का कर्ज हो गया था। इस विकट स्थिति से बचने का उसके पास एक ही उपाय था कि वह यहां से भाग जाए और वह भाग गया।

'कब ?

'कल सुबह।

'मुझ से बिना मिले ही ?

'मैंने उससे बहुत कहा पर वह नहीं माना। कहता रहा—इससे मेरे माधो का दिल टूट जायगा। वह मुझे जाने नहीं देगा। जाने-जाने

सिर्फ इतना ही कह गया कि माधो से कहना कि वह अपनी पढ़ाई जारी रखे। उसे दफ्तर का बाबू बनना है।"

माधो की आत्मा पीड़ा में कराह उठी। वह रजाई में मुँह छुपा कर रोने लगा। मूलकी ने उसे धीरज बंधाया। समझाती रही। उस दिन वह भूखा ही स्कूल चला गया। और जब लौटा माधो तब उसके घर के आगे गिरी शोर गुल मचा रहा था। वह चिल्ला रहा था उस चोर का वहाँ छुपा रखा है? निकाल बाहर करो। टुकड़े टुकड़े कर दूंगा।

मूलकी मौसी उसी तरह उफनती हुई कह रही थी तेरे बाप का राज नहीं है कि कर क्या टुकड़े। राज है महाराजाधी का।

'तू चुप रह। तू कौन है मेरे बीच में बोलने वाली?' गिरी ने कड़क कर कहा।

'अरे जा रे बहुत सुनी है तेरी बक–बक। इस तरह आवक बावक बके जा रहा है जैसे यह मुसलमान हो। भले घर की औरतें रहती है यहाँ। जो मन में आया ऐसा गाली गलौज कर रहा है। वाह!'

'मूलकी मौसी जिसे लगती है उस ही पीड़ होती है। रुपये कलदार भरी जेब में से गये हैं। चिल्लाऊंगा मैं ही।'

चिल्ला जोर–जोर से चिल्ला पर शरीफों की तरह चिल्ला। तेरी गन्दी गालियों से सारे मोहल्ले के कान खराब होते हैं।'

गिरी क्षण भर के लिए चुप रहा। फिर माधो की ओर देख कर बोला "तेरा भाई कहां है?'

'मेरी जेब में।'

देखा मौसी तू कहती है इनके संग शरीफों की तरह पेश आ पर ये छटे हुए लोग हैं। बिना मार पीट के एक भी शब्द नहीं उगलेंगे। जरा सोच, पाँच–सात सौ की रकम कम नहीं होती?'

मूलकी इस बार फिर बोली, 'जानता हूं तेरे छल–छन्द! एक

देवर न्स लिखाता है। सहसा वह गभीर होकर बोली,''पर मैं एक बात का तुमे विश्वास दे सकती हू कि इन लोगो को यह जरा भी मालूम नहीं है कि भोंनी कहाँ गया है ? मालूम तो मुझे भी नही है। ये दानों तो मुझम ही पूछ रहे थे।

मैं मर गया। मौसी मैं लुट गया। लेकिन मैं उसे मसान तक नही छोड़ूगा। कितने दिन तक इधर नही आयगा ?''

वह चला गया। धीरे धीरे मोहल्ले, घर और आगन म शांति छा गयी।

माधो विस्तर मे घुस गया था। सर्दी की साँझ अपने साथ कडाके ठन्ड लेकर आयी थी। लोग आग जला-जला कर अपने अपने घरो में बठ गये थे। सूरजडी भी एक अगीठी म आग जला कर माधो के पास ले आयी।

'हाथ तपालो देवर।'

माधा कुछ नही बोला। वह बिस्तर मे छुपा रहा। सूरजडी थाली म खाना परोस कर ले आयी। माधो की रजाई हटाती हुई बोली पहले खाना खालो फिर सोना। भूखे पट नींद भी नहीं आयगी।'

मुझे भूख नही है।

सुना है भूख किसी की भायली(सखि) नही होती और पेट की आग कभी शान्त नही होती। चलो मेरे अच्छे देवर खालो।

'कह दिया न कि मैं नही खाऊगा।'

क्या?'

माधा सूरजडी की आँखो में आँखें डाल कर बोला 'इसलिए कि तूने मुझे मेरे भाई से अलग कर दिया। तुझे दया नही आयी की मैं कैसे रहूँगा उसके बिना ? कम स कम जाते समय उससे मिला ही देती।'

इसमें मेरा कोई दोष नहीं है भाभी। वह मुझे मना करता रहा। सौगन दिलाता रहा। तुम विश्वास रखो। तेरी भौजाई इतनी पत्थर दिल नहीं है। इस पर तुम्हारा जी यदि नहीं मानता है तो मैं तुम्हारा गुनाहगार हूं। तुम्हारी मर्जी में आये वह दंड दे दो।

माधो ने उसकी ओर देखा। सूरजड़ी की आँखें आँसुओं से तर थीं। गहरी उदासी छा गयी थी उस पर।

वह अपने आप में बोला मैंने उसे ऐसा नहीं समझा था। इतना कठोर उसे नहीं होना चाहिए। भौजाई! अब हम लोग जीयेंगे कैसे? मैं पढ़ूंगा कैसे?

इसकी तू चिंता न कर।

क्या?

मेरे जीते जी तेरी पढ़ाई अधूरी नहीं रह सकती। मैं खुद कमाऊंगी जाऊंगी।

माधो पल भर तक चुप रहा। अपनी हिम्मतवाली भाभी को देखता रहा। उसे महसूस हुआ जैसे वह गुनिया समझता है वह एक साहस की पुतली है। उसमें बड़ी दृढ़ता है।

मर्द के होते हुए तू कमायेगी? छि मैं तेरा ऐसा देवर नहीं हूं।

वह ममता से भर आयी। उसकी दोनों बाजुओं को पकड़ कर उसके मुंह के निकट अपना मुंह लाकर बोली अभी मैं ही कमाऊंगी। बाद में तुम कमाना। तुम्हें दफ्तर का बाबू बनना है। तुम्हारी माँ और तुम्हारे भाई की यही इच्छा है।

माधो ने अपनी भाभी की ओर देखा। उसे लगा कि उसकी भौजाई अपने यौवन की उम्र पार कर यकायक बहुत बूढ़ी हो गयी है। अथाह ममता और दायित्वों से भरी एक नारी।

लो खाना खालो। थाली उसे पकड़ाते हुए वह बात का

समापन करती हुई बोली 'जो मुसीबत आयेगी, उसे हम मिल कर हो झेलेंगे ।

माधो ने अनिच्छा से रोटी खाली । सूरजडी चक्की पीसने लगी । आटा खत्म हो गया था । बाजरी सर्दी में स्वादिष्ट भी लगती है । फिर बाजरी के बिना गरीबों का पेट भी नहीं भरता ।

चक्की घडड घडड.ऽ चल रही थी । चक्की के साथ वह भजन गा रही थी कि मूलकी ने प्रवेश किया । उसे आटा पीसते में साथ देती हुई वह बोली 'उसे अब नींद आयी है । अरे चला चक्की, थोड़ा सहारा मैं दे दूंगी तो कौन सा मेरा हाथ घिस जायेगा । और हाँ, अब मुझे तू सच-सच बता कि वह कपूत कहाँ गया है ?'

परदेश ।

परदेश क्यों ?'

यहाँ के झंझटों से बचने के लिए ।'

राम राम कितना निरमोही है ? मुझसे मिल कर नहीं गया । मैं कौन से उससे रुपये मांगती थी ? मुझसे उसने झूठ ही अपना घर गिरवी रखा है । पर मैं तो उसे सचमुच के दिये रुपये भी वापस नहीं मांगती ।

तू तो मौसी अपनी बात करती है । वह अपने माँ जाये भाई से भी मिल कर नहीं गया । मैंने बहुत कहा सुना । इस पर बोला यह मुझे जाने नहीं देगा । तू ठीक कहती थी कि काले के पास गोरा बैठता है रंग न बदले पर अक्ल जरूर बदल जाती है ।

मौसी ने पलभर के लिए सूरजडी को गौर से देखा । फिर बोली 'यह गिरा है न, बड़ा ही निर्मम-दुष्ट है । इसने बहुत घर बिगाड़े हैं । जन्मजात बेईमान है । मैं सच कहती हूं कि अन्त समय इसके शरीर में कीड़े पड़ेंगे । बुरे कर्मों का फल यहीं मिलता है । आदमी नरक-सुरग यहीं देखता है ।"

ो जसा करेगा वह वसा पायगा।'
की चलती रही। रात गहरी और गहरी हो गयी थी।

चौथे दिन पैसा की समस्या खडी हो गयी। माधो और सूरजडी म बडी देर तक बातचीत चली। वाद-विवाद होना रहा।
माधो ने कहा मैं पढाई छोड कर नौकरी करूगा। मर होन हुए मेरी भौजाई कमाय, यह मेरे लिए डूब मरने की बात है। लोग मरी मर्दानगी पर थूकग।
लेकिन पढाई ?
चूल्हे म जाय यह पढाई मुझे पढ़ना लिखना नही है।
सूरजडी मूलकी मौसी को बुला कर ल आयी। मूलकी न आकर समझाया बात यह है माधो कि तुझे पढना ही पडेगा। पाच दस दिन सूरजडी मेरे साथ कमठाणे चलगी तब तक तरा भाई रुपय भज ही दगा। सुना है परदेस म जाते ही काम मिल जाता है। पमा भी बहुत मिलता है। फिर तेरी माँ का सपना। भाई की इच्छा ?
माधो बडी देर तक अपने इरादे पर अडता रहा पर अन्त म सूरजडी के आँसुआ ने उसे परास्त कर दिया।
दूसरे दिन सूरजडी मूलकी क साथ कमठाणे चली गयी। माधो

स्कूल से आकर घर में ही रहा। दिन ढले सूरजड़ी आयी। थकी थकी। आते ही उसने चूल्हा जलाया और रोटी बनाने लगी। थाली परोस कर जब वह माधो के सामने लायी तब माधो ने उसे देखा। उसकी भावुकता मानो तड़प उठी। उसकी भौजाई कितनी सुन्दर है? कितनी कोमल है? और यह दिन भर चूना-ईंट ढोती रही। छि उसने अपने आपको धिक्कारा। वह अरुचि से खाना खाता रहा। कुछ नहीं बोला।

"कुछ नहीं बोलोगे देवर?"

'भौजाई! तू कितनी दयालु है? तेरे अहसान मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा।

'बच्चों जैसी बातें न कर।' बात का प्रसंग बदल कर वह बोली, घर में लकड़ियाँ नहीं हैं केवल सुबह का ही खाना बनेगा।'

मैं और लाड लाऊंगा। जंगल हमारे पास ही पड़ता है।'

सुबह एक नयी बात हुई। किसी ने जाकर सूरजड़ी के मां बाप और भाई को यह कह दिया कि भानी चुपचाप परदेश चला गया है और सूरजड़ी अपने देवर के लिए कमठाणे जाने लगी है तो वे लोग सुबह-सुबह ही आ धमके। सूरजड़ी उन्हें देख कर बहुत ही खुश हुई। अपनी औकात के अनुसार उनकी आवभगत की। पूछा इतने दूर से

चिट्ठी की खबर पाते ही 'गिरी' आ धमका। उसने डाकिया बाद को कह रखा था कि भानी की चिट्ठी आते ही मुझे खबर करें।

'अरे माधा ला वह चिट्ठी बता, तेरे तेरे भाई का क्या अता पता है ?

माधा ने चिट्ठी दे दी। उसमें उसका पता था। उसने पता लेकर भानी को एक इतनी कड़वी चिट्ठी लिखी कि उसने बाद में चिट्ठी में पता ही देना बन्द कर दिया। दूसरी चिट्ठी आयी तीसरी आयी पर उसमें उसका पता नहीं था। वह बहुत ही निराश हुआ। घृणा से आँखें तरेरते हुए कहा 'साला कहाँ बच कर जाएगा ? सौ दिन सुनार के तो एक दिन लुहार का। मेरी रजिस्ट्री वापस आ गयी। खैर कितने दिन छिपा रहेगा ?'

और दिन गुजरते गये।

•

मैं पास हो गया हूँ भौजाई !' भागा-भागा माधा आया। वह खुशी में फूला नहीं समा रहा था।

मूरखडी पति के वियोग की पीडा और कठिन श्रम के कारण काफी दुबली हो गयी थी। जोबन का जोर जो उसके अंग अंग में मचलता था वह एक तरह से रुक सा गया था। उसकी आग थानी भीतर धम

गयी थी। शरीर का जो उठान हो रहा था वह एक तरह से थम गया था। इन दिनों वह एक तरह से अपनी उम्र की सारी बातें भूल कर एक वस्तुनिष्ठ औरत की तरह जी रही थी। न जाने कितनी बातें जो असह्य होती थीं उसने सुनीं। सिर्फ उसे साहस व धैर्य बंधाती रही तो एक मूलकी।

यह खुशखबरी सुनकर वह अपनी उम्र के अभ्यास को भूल कर माधा से लिपट गयी और सदा की तरह अति स्नेह विगलित स्वर में बोली देवर! तुम चिरंजीव रहो। जब तुम्हारे भाई को यह खबर मिलेगी तब वह कितना खुश होगा? और वह भागी-भागी मूलकी मौसी के घर गयी। उसे यह खुशखबरी दी। मूलकी मौसी जल्दी जल्दी उसके घर आयी। आते ही उसने उस पर से मिर्चें उतारीं। मिर्चों को आग में भालती हुई वह बोली, मेरे राजा बेटे को नजर न लग जाय।

माधा ने मौसी के चरण स्पर्श करके कहा, भौजाई! अब तू जल्दी से रामदेव बाबा का प्रसाद बना दे ताकि मैं उनके दर्शन कर आऊँ। यह सब बाबा की ही कृपा है वर्ना हमारे खानदान में कौन दसवीं पास कम करता? हम बहुत छोटे लोग हैं। इतने छोटे कि शिक्षा सुख और मान को स्पर्श ही नहीं कर सकते।

सुगनडी भर भर आयी। अपने नयन कोर में रुके आँसुओं को पोंछती हुई बोली आज यदि वह होता तो कितनी खुशियाँ मनाता? सारे मोहल्ले को सिर पर उठा लेता। उसकी बड़ी साध थी कि उसका भाई पढ़ लिख कर दफ्तर का बाबू बने।"

भाभी को चिट्ठी आयी क्या?"

'नहीं मौसी इधर उनकी चिट्ठी नहीं आयी। रुपये भी बराबर नहीं भेज रहा है। हम लोगों ने जब उसे यह लिखा कि तुम्हारे ससुरा ने तुम पर केस कर दिया है और उन्हें यह भी मालूम पड़

गयी है कि भाँनी न बडी चतुराई से अपना घर भी मौसी मे गिरवी रख लिया है और वे मरने मारने की सोच रहे हैं तो इसके बाद उसका कोई पत्र नहीं आया । तुम थोडी देर ठहरो मैं अभी गुड आटे का चूरमा बना देती हूँ ।'

मूलकी मौसी उसके समीप बैठ गयी । दोनो बातचीत कर रही थी । माधो मोहल्ले म जाकर लोगो की वाह-वाह ले रहा था । सभी उसकी तारीफ कर रहे थे । तभी आ गया गिरी । आते ही बोला, तेरे भाई को लिख देना कि अब वह मेरी एक-एक पाई चुकता कर दे वर्ना उसे जेल की हवा खानी पडेगी ।'

गुवाड म एक नया युवक आया था । नाम था बाबा ।' एकदम ज्वान लडका पर बूढा नाम । बहुत ही मजाकिया । गिरी को एक दो बार मे ही वह जान गया कि वह कैसा काइया आदमी है । गिरी को देखते ही वह बोला,' आइए झूठो के सरदार, मैंने सुना है कि तू खुद जेल जानेवाला है ।

'क्या ?

झूठे कागज-पत्र बनाने के अपराध म ।

'सुन बाबा तू मेरे धंधे के बीच मजाक-वजाक मत किया कर ।

तू भी झूठ-मूठ मत बोला कर ।

सब लोग हँस पडे । गिरी चिढ कर चला गया । बाबा ने कहा, "कितना अजीब आदमी है । पैसा के सिवाय कभी कुछ सोचता ही नहीं ।"

'यार बाबा इस दुष्ट की चर्चा बंद कर और इधर आ एक जरूरी बात करनी है तुझसे ।

बाबा और माधो दोनो एक ओर जाकर खडे हो गये । वे बहुत ही गंभीर हो गये थे । दोनो धीरे धीरे बातचीत कर रहे थे ।

माधो ने विनम्रता से कहा, 'भाई बाबा आज मैंने मद्रिक पास

कर लिया है। मेरे घर की हालत तुम जानते ही हो। तुम्हारी भौजाई ने मेरे पढ़ाने लिखाने के लिए रात और दिन एक कर दिया था। भाई भी इधर बहुत कम पैसे भेज रहा है । तुम एहसान करोगे मुझ पर किसी भी तरह मुझे भी काम लगवा दो।

बाबा का बात करने का अजीब अन्दाज था। उनका बात कुछ पता व मन्तरा के साथ ऊँचा नीचा होता था। अपनी हरकत करता हुआ बोला, मैं तुम्हें चपरासी बनाकर नौकरी लगा दूंगा। मेरे साहब मुझ पर बहुत ही मेहरबान हैं। कल मेरे साथ चलकर मिलना।

बाबा ! माधो ने अपनी बात प्रकट की तुम यार बहुत ही मजाकिया हो। मुझसे नौकरी के मामले में मजाक न करना।

बाद तुम भी खूब हो। मजाक करना की आदत मेरी बहुत है पर इसका मतलब यह नहीं है कि मैं हर समय मजाक ही करता रहता हूँ। मैं तुम्हें सच्ची दोस्ती का वास्ता देकर कहता हूँ कि तुम्हें नौकरी लगा दूंगा।

मैं तुम्हारा अहसान कभी नहीं भूलूंगा।

तभी एक छोरा भागा हुआ आया। आकर बोला माधो तेरी भौजाई तुझे बुला रही है।

लगता है प्रसाद तैयार हो गया है। चलो बाबा जरा रामदेव बाबा के प्रसाद चढ़ा आयें। सब से पहले आज तुम्हें ही प्रसाद खिलाऊंगा।

जाओ चलें।

दोनों रामदेव बाबा के मन्दिर प्रसाद चढ़ा कर आये। मूलकी और सूरजड़ी ने मिल कर सारी गुवाड़ में प्रसाद बाँटा। गुवाड़ वालों ने उन्हें बधाइयाँ दीं।

उस समय लोगों ने श्रद्धा भरे शब्दों में सूरजड़ी के साहस और श्रम की प्रशंसा की कि भौजाई हो तो ऐसी जो देवर के लिए खाऊ

रमा दे।

रात के समय सूरजडी ने खाना खिलाते समय माधो से कहा, 'आज तुम्हारा भाई होता तो कितना खुश होता ?"

'जब से रिजल्ट यानी नतीजा निकला है तब से मुझे उसकी याद बराबर आ रही है। कितनी आशाएँ थी। कल मैं नौकरी के लिए बाबा के साथ दफ्तर जाऊंगा। उसने मुझे पक्का भरोसा दिया है कि वह मुझे नौकरी पर लगा देगा।'

भगवान उसका भला करें। यदि तुम्हे नौकरी मिल गयी तो मैं रामदेव बाबा के फिर प्रसाद करूंगी।'

मिल जायगी। बाबा ने कहा है कि मेरा साहब बहुत ही भला है। गरीबो पर बडी दया करता है। वह तुझे जाते ही नौकरी दे देगा।'

राम सा बाबा अच्छा ही करेगा।"

पर उस रात सूरजडी बहुत उदास रही। इतने लम्बे अर्से से भाती की अनुपस्थिति आज उसे सहसा अखरने लगी। उसे लगा कि उसका उद्देश्य पूरा हो गया है। इस उद्देश्य की पूर्णता के बाद उसे निरर्थकता सी मालूम हुई। उसे लगा कि उसकी त्याग-तपस्या का मूल्य कुछ नही है। मूल्य आंकने वाला तो कहीं परदेश में भटक रहा है।

वह एकांत मे आकुल हो उठी। आज उसे एकान्त काटने लगा। आज उसे सर्दी ठिठुराने लगी। वह करुण विकल हो उठी। सुबकने लगी। आज सहसा रात उसे पहाड की तरह लगने लगी। इतनी लम्बी जिसका उसका कोई अन्त नही। उसे महसूस हुआ कि आज की रात नहीं कटेगी। आज उसे अंग-अंग में पीडा का अनुभव हुआ। वह उठी। उसने आकर बरसाली मे देखा—माधो सोया हुआ है। गहरी नीद मे खर्राटे भर रहा है पर रजाई एक दो जगह से अच्छी तरह से नही ओढी हुई है। सूरजडी ने रजाई को व्यवस्थित किया। फिर उसे

अपलक दृष्टि से देखती रही । सूरजडी की उस दृष्टि म एक नाचता भावना अवश्य महक रही थी—पीडा और दद की चिनगारियाँ।

फिर आकर वह रजाई म छुप गयी।

दूसरे दिन ही माधो ने आकर बताया 'भौजाई कर दा एक बार फिर प्रसाद। मुझे नौकरी मिल गयी है।

बाबा उसके साथ था । काफी प्रसन्न दिख रहा था। बाबा बाला भौजाई अब तेरे सारे दुख दद मिटे। साठ रुपय लायगा। अब क्या नही भानी भाई का बुला लेती। इस गिरी से दस बीस नीचा-ऊचा करके फसला कर लेंग ।

'अब वह नही आया तो मैं स्वय उसे लन के लिए कलकत्ता चला जाऊगा। बहूरा, अब घर चलो। तेरा यह भाई दफ्तर का बाबू बन गया है।

तुम्हे जरूर भेजू गी। सूरजडी ने बात पर जोर देकर कहा उसके बिना बहुत सह लिया है कष्ट! अब रहा नहीं जाता। एक पल भी रहा नही जाता।

कलयुग म ऐसी स्त्रिया नही होन की।' बाबा ने माधो का ओर देख कर कहा जसी तेरी भौजाई है!

सिफ मैं ही नही। इसके भाई की भी तारीफ करो। बाबा चाहे वह वहा कितना ही कष्ट म क्या न रहा हो पर कुछ न कुछ रुपय भेजता ही था और सदा एक ही बात लिखता था उसकी पढाई बीच म न रह। माधो पढना न छोड।

छाप इन बाता का। चन प्रसाद बना कर लिना।

दुबारा फिर सारे मोहल्ल म प्रसाद बाटा गया। चन्द ही दिना म माधो दफ्तर का सभी काम समझ गया। उसक साहब श्री नान थ। नाति के श्रीमवान। दयालु और सज्ज स्वभाव के। उन्हान माधो का छोट भाई का तरह प्यार किया। व सदा एक ही बात कहत डाट

से बडा बनना ही मुश्किल है। राजा का बटा सदा राजा ही बनता है पर एक से राजा वही बन सकता है जो सच्चा, सहृदय और दयालु होता है। अपने काम और कर्तव्य के प्रति सदा जागरूक रहो।'

'आपकी सलाह को मैं सदा ध्यान में रखूंगा। मेरी गलतियों के बारे में आप मुझे साफ साफ बता दिया करें।"

'तुम्हारे काम से मैं बहुत सन्तुष्ट हूं। इसी तरह काम करते रहोगे तो जल्दी ही बडे अफसरों की निगाह में चढ जाओगे। और जो अफसर की नजर में चढ गया वह जल्दी ही उन्नति कर लेता है।"

आप सदा मुझे रास्ता दिखायेंगे।

नलिन माधो ने यह भी अनुभव किया कि जब से वह नौकरी पर लगा है तब से उसकी भौजाई उदास रहने लगी है। दिन भर वह खोयी खोयी सी रहती है। जब कभी माधो पूछता, तब वह एक ही उत्तर देती पता नहीं देवर मन क्यों उदास रहता है ? दिल घबराता रहता है।' एक दिन उसने कहा सोचती हूं तुम्हारा ब्याह कर दूं। मैंने एक लडकी देखी है। मुझसे भी ज्यादा खूबसूरत है। कल उसकी माँ मिली थी। कह रही थी अपने देवर को मेरी बेटी ले लो"

मैं कुछ नहीं जानता। जो तेरी मर्जी में आये कर दे।'

नहीं देवर! अब तुम ठहरे दफ्तर के बाबू! तुम्हारे मिजाज दूसरी तरह के हो गये हैं।

मेरा कोई मिजाज नहीं। जो कुछ हूं तेरी वजह से हूं। जो तू करेगी मुझे मंजूर होगा।

माधो को पहली बार लगा कि उसकी भौजाई अप्रत्याशित उम्र में बहुत बड़ी हो गया है। इतनी बडी जितनी उसकी मूलकी मौसी। जो उम्र उसकी खेलने-कूदने की है वह मानो जिम्मेदारियों में दब गयी है।

तभी राजा भागा भागा आया माधो अरे ओ माधो तेरा तार

आया है।"

मेरा तार।" वह लपक कर बाहर आया। तार का नाम सुन कर सूरजडी भी मजग सी बाहर निकली। उसका मन शकाओ से घिर गया। सारे मोहल्ले मे चर्चा फैल गयी क्योंकि अक्सर इधर तार कोई न कोई बुरी खबर लेकर ही आता था। माधो ने हस्ताक्षर करके तार लिया। खोल कर पढ़ा तो उससे बोला नही गया। सूरजडी ने आकर पूछा, क्या हुआ माधो ?'

माधो फिर भी नहीं बोला। देखते-देखते मूलकी मौसी बाबा व अन्य मोहल्ले के लोगो ने माधो को घेर लिया। प्रश्न पर प्रश्न ? अन्त मे माधो ने रोते हुए कहा, भानी अब इस ससार मे नही रहा।

सन्नाटा छा गया। इस सन्नाटे के बीच सूरजडी पछाड खाकर गिर पड़ी। माधो अपनी ही हथेलियो से सिर पीटने लगा।

दर्द सब लोगो पर बदन दर्द छा गया।

•

मूलकी ने आकर बताया 'यह सरासर जुल्म है। जब वह किसी के घर मे जाना नही चाहती तब उसके साथ जबरदस्ती क्यो की जाती है !

माधो बात के प्रसग को तुरन्त समझ गया। भानी का इस

दुनिया से गये कई महीने हो गय थे। धीरे धीरे सब सामान्य हो रहा था। सूरजडी पीहर चली गयी थी। पीहर से वापस नहीं लौट सकी। स्वय माधा भी उसके पास कई बार गया था। उसने विनीत स्वर म कहा था, 'भौजाई ! तेरे बिना वह घर मुझे काटने दौडता है। हर दीवार खाने को आती है।

उत्तर म सूरजडी ने कहा था, अत्यन्त व्यथापूरित स्वर मे कहा था 'मेरे भाग्य के मल है देवरजी ! मेरे भाग्य म सुख है ही नही। तुम ब्याह क्यो नही कर लेते ? घर म बहू के आने के बाद सब ठीक हो जायगा।

माधा इस प्रश्न का कोई उत्तर नही द सका था। नितान्त खामोश होगया।

सूरजडी उसे समझाती 'अपने आपको मत मारो देवर जी, तुम्हे जल्दी म घर बसा लेना चाहिए।'

मैं ब्याह नहीं करूगा। कहने के बाद उसे लगा कि वह यह सब क्या कह गया ? वह उम्र भर कु वारा रहेगा ? फिर वह उदास हो गया।

क्या ? उसने अत्यन्त सहजता से पूछा।

'बस कह दिया न मैं ब्याह नही करूगा। मैं इस झंझटा म नही पडता। वह आवेश म भर सा उठा।

उन दोनो के बीच आ गया सूरजडी का बडा भाई दूदा। दारू का आदी और निकम्मा। कमाने के नाम से उसकी साम चढ जाती थी। वृद्ध माँ–बाप के साथ उसकी युवा पत्नी सुबह से बडे बाजार मिट्टी के बरतन लेकर जाती और साँझ तक रोटी का जुगाड करके लौट आती थी। इन दोनो को गम्भीरता से बातचीत करते हुए देख कर दूदा खलनायक की तरह आया और आकर बोला क्या घुसर-पुसर हो रही है ?

'कुछ नहीं।'

'कुछ तो जरूर हो रही है।' वह और निकट आ गया। उसके मुँह से दारू की बदबू आ रही थी। माधो ने अपनी नाक के आगे हाथ दे लिया। सूरजडी ने रोष से कहा फिर यहाँ मरने क्यों आ गया? हजार बार कह दिया है कि जब माधो आये, तब तू हमारे पास न आया कर पर तू अपनी आदत से बाज नहीं आता।

मैं सब समझता हूँ। वह जैसे कोई रहस्य प्रकट कर रहा हो इस तरह आँखें निकाल कर, आँखें मटका कर बोला मैं तुम दोनों का कार्यक्रम चक्कर नहीं चलने दूँगा।

सूरजडी को एकदम क्रोध आया। वह काँप कर बोली सदा कहती रहती हूँ कि बकवास मत किया कर पर तू मानता ही नहीं। ज्यादा तंग करेगा तो मैं वापस चली जाऊँगी।

तभी उसका बाप आ गया। बाप को देखते ही वह बोला, काका! इसे मना कर दो कि वह छुप-छिप कर हमारी बातें न सुना कर आखिर माधो भी एक पढ़ा लिखा आदमी है कहीं बुरा मान गया तो?

सूरजडी के बाप को एकदम गुस्सा आ गया। वह कड़क कर बोला, यह एकदम गधा है उल्लू है। मूर्ख को समझाना कठिन और मारना सरल।'

आक्रमण इतना तेजी से हुआ था कि डब्बूडा सकपका गया। सूरजडी का बाप फिर चुप हो गया। इस बीच डब्बूडे को कुछ पल दुष्टता के लिये मिल गये। यह निर्भीकता से बोला मैं तो मूर्ख हूँ ही काका! पर मेरी एक बात का ध्यान रखना यह हर रोज के मिलना टक्के-पैसे देना कुछ दाल में काला बता रहा है। कहीं ये आपस में अपना सिट पिट न बिठा लें। कोई सिट पिट बैठ गयी तो?

यह एक नया सत्य था जो सूरजडी और माधो ने पहली बार

मुन । सूरजडी एक पल म पीडा मे तिनमिला उठी और अपने मुँह मे पल्लू दबा कर भीतर भाग गयी। माधो गुस्से म भर उठा। बोला, 'देख टब्बू ज्यादा बसिर पर की मत उडाया कर वर्ना कभी तू जलील होगा। मेरे द्वारा हाथ पाव तोडायगा।'

सूरजडी का बाप गोविन्दा बहुत चतुर था। वह नहीं चाहता था कि टब्बू की मूखता माधो व सूरजडी को नाराज कर द और जो महीन के पद्रह रुपय माधो द्वारा मिल रहे हैं वे बद हो जाये। गोविंदा टब्बू को पकड कर भीतर ले गया। उसने माधो से क्षमा मागी।

माधो दुखी मन लौट आया।

आषाढ का महीना लग गया था। रेगीस्तान की धरा अपनी चुनरी परिवर्तित करने के लिए व्यग्र हो रहे थी। आषाढ का पहला बादल भी दो दिन पहले आ चुका था। फिर भी मौसम म ऊमस और घुटन थी। गुवाड के कुछ बूढे गली म माया करत थ—बाहर खाट बिछा कर वे पखी से हवा कर रह थे।

माधो ने अपने घर का ताला खोला। मदा की तरह उसे सूरजडी याद आयी। उसके बिना यह घर कितना सूना हो गया है? कोई देख भाल करने वाला नहीं। मृतहा घर जमा। वह भर भर आया।

उसने वेमन से उजाला किया। उसकी खाट मदा की भाति वरसाली मे ही थी। पर सूरजडी के बिना जरूर सूना और बनरतीब हो गया था पर अनेक नयी और बन्तर चीजें भी आ गयी थी।

खाना वह स्वय बना कर गया था पर अभी उसकी रुचि नहीं हुई कि वह खाना खाले। वह बिस्तर को उठा कर डागने (छत) पर ले गया। सो गया।

आकाश तारो से भरा था। वह विचारा म खोया सा अपलक अम्बर को निहारता रहा। टब्बूडे ने उसके और भोजाई के बारे म कितनी गदी बात कही है? वह अवाक सा हो उठा।

"अरे माधो है ?'

माधो ने बाबा की आवाज पहचान ली। गान-गात ना उत्तर दिया आ जाओ बाबा, मैं ऊपर हू।'

'क्या आज इतनी जल्दी डागल पर कैसे चढ़ गये ?

' ऐसे ही ।'

बाबा डागल पर आ गया। अब वे दोनों जने गार पर थे। तारों का हल्का हल्का प्रकाश था। उस प्रकाश में कोई भी एक दूसरे का चेहरा और उस पर दौड़ते हुए भावों को नहीं पढ़ पा रहा था।

'रोटी खाली। बाबा ने नया प्रश्न किया।

नहीं आज मन खराब हो गया है बाबा।

क्या ?

क्या बताऊ बाबा आज ठाकुर ने मेरे और भौजाई के बारे में एक गन्दी बात कह दी। मन ही खराब हो गया। सच इस कलियुग में आदमी का मन कितना गन्दा हो गया है ?

क्या कह दिया ?

मैं उस बात को जबान पर भी ला नहीं सकता। सचमुच आदमी का बहुत पतन हो रहा है।' उसके स्वर में वेदना स्पष्ट झलक रही थी।

बाबा कुछ क्षण मौन रहा। कुछ सोच रहा था। फिर मद्धम स्वर में बोला यदि तुम बुरा न मानो तो मैं एक बात कहू ?

कहो।

पहले वायदा करो मेरी बात का बुरा नहीं मानोगे। मैं भी तुम्हें एक अजीब बात कहने जा रहा हू।

कह दो।

फिर भी वह चुप रहा। बादल छा गये थे। रात का अंधेरा सघनता की वजह से जरा और भयावह लगने लगा था। बस्ती के मजदूर

श्रौर दिन भर के थके मद व औरत पड कर सो गय थे । इस यात्रिक युग म यदि नीद सच्ची सहचरी है तो सिफ इन अनपढ और कठोर मेहनती लोगो की । इन्हे विश्व की हलचल और अनागत अमगल की कोई चिन्ता नही ।

'तुम कहते-कहते चुप क्या हो गय ?

'मैं सोच रहा हू कि कहू या नही ?'

"मन की बात मन मे रखन से मन भारी हो जाता है। कह दो बाबा कहन से मन हल्का हो जायगा । मैं जरा भी बुरा नही मानूगा।'

मैं कह रहा था कि तुम देखो दोस्त, मेरी बात का बुरा न मानना तुम सूरजडी को अपन घर मे क्या नही डाल लेते ?'

बाबा तुम्हे यह कहते हुए शम नही आयी । जिस भौजाई का मैं इतना आदर मान करता रहा हूँ, उस भौजाई के साथ नही, नही बाबा, इसे मेरी गरत सहन नही कर सकती । ऐसा मैं सोच भी नहीं सकता । वह दु ख से तमतमा उठा ।

बाबा की आकृति किस सघष मे डूबी यह माधो नही जान सका पर बाबा न अपने शब्दो को तोल-माल कर फिर कहना शुरू किया माना तुम ऐसा सोच नही सकते । तुम्हारी गरत इन्सानियत की दहलीज पार नही कर सकती किन्तु तुमने यह भी कभी सोचा है कि तुम्हारी यह गरत किसी के जीवन को तबाह भी कर सकती है। उसके घाग्य और नाश को भी ला सकती है । शायद तुम इधर जरूरत से ज्यादा अपने आप म डूबे हुए हो । अन्तमु ख हो । आस-पास की चहल पहल से परिचित नही हो ।'

यह सही है। उसन दवाँस छोड कर कहा मुझे कुछ भी मालूम नही । मुझे सिफ इतना ही मालूम है कि मैंने जो कुछ किया उसकी कोई साथकता नहीं । उसका कोई मतलब नही। क्योकि भाई

के बिना यह सब क्या मतलब रखते हैं ? आदमी अपनी सारी शक्ति म पहाड की चोटी पर चढता है और कुदरत एक पल म उसे वापस रसातल म डाल देती है। सचमुच आदमी बहुत कमजोर है कमजोर।"

आदमी कमजोर है इस लिय ही लोग उसका अनुचित लाभ भी उठाते हैं। शायद तुम्हे नही मालूम है कि तेरी भौजाई का भाई बुड्ढा चम्पला से दो हजार की बात कर रहा है। चम्पले को तुम जानते ही हो। वह ठकेदार । सौ पसे वाले मरते हैं तब एक ठकेदार पैदा होता है। फिर उसने तीन औरतें पहले भी रखी थी और बाद म उन्हे नीम की निम्बोली की तरह चूस कर फक दिया था । एस निर्दयी आदमी के पल्ले वह गाय पड गयी तो जीवित नही बचेगी। यह बात मुझे आज गिरी न बतायी थी। उसने सब से यह भी कहा था कि चम्पला ठकेदार है खोटा दारू बचता है वह बचारी को रन्डी बनाकर छोडगा। अब तुम खुद सोच लो।

माधो ने कुछ भी उत्तर नही दिया। वह चुपचाप सुनता रहा। बाबा उदास सा चला गया।

एकात उसे आज अप्रत्याशित रूप से असह्य लगने लगा। उसे महसूस हुआ कि अधेरा चुपचाप उसके नजदीक आकर बठ गया है। उसका हाथ उसके हाथ पर है। खुरदरा और कठोर स्पर्श। कह रहा है—जो हो रहा है क्या वह ठीक है ? यह तेरी भौजाई पर जोर-जबरदस्ती नही जुल्म नही ? जरा सोच !

अधेरा उसके तन और मन पर चढता गया। उसे यह महसूस हुआ कि उसके शरीर म शिथिलता आ गयी है।

सुबह धूप चढने पर मूलकी मौसी ने आवाज लगायी अरे माधो ! आज सोता ही रहगा या जायगा। दफ्तर नही जाना है ?

फिर भी वह नही उठा। उसने दुबारा आवाज लगायी। माधो उठा। उसे लगा कि आज उसका सिर भारी है। उसके बदन म टूटन

सी व्याप्त है।

'क्या बात है माधो ? तबीयत तो ठीक है न ?'

वह बिस्तर को कंधे पर डाल कर नीचे ले आया। उसे दगमाली म खाट पर रखा। किवाड खोलते हुए वह मूलकी मौसी से बोला, जरा सिर भारी है मेरा। सोचता हू आज दफ्तर से छुट्टी ले लू।'

'इसम इतन सोचन की क्या बात है ? जान है तो जहान है। लिख द अर्जी !' वह एक पल रुक कर बोली आज रोटी तू मेरे यहाँ ही खा लना।

वह मौसी को देखता रहा। श्रद्धा भरी नजर स। फिर भावुकता म बोला मौसी तू कितनी अच्छी है ? हम ईश्वर को भला कितना ही दोष लें पर यह सही है कि वह बड़ा ही दयालु है। वह किसी न किसी का सहारे क लिये भेज देता है। जब सब चल गय तब उसन तुम्हे भेज दिया।'

मूलकी खाट पर धम स बठ गयी। बोली 'बड़े बूढ़ों को एक दिन जाना ही था। हम भानी की मौत काली धार डुबा गयी, कहीं का भी नहीं रखा। मैं तुझे सच कहती हू वह दिन का बहुत ही अच्छा था। उस फिक्र मगन न किया न्याय। यह गिरी है न बहुत ही नफरत और दुष्ट है। इसके आग पीछे कोई नहीं है। फिर भी जब तक किसी की बुराइ न करत तब तक उस चन नही पड़ता। खाया-पिया नहीं पचता। दर असल भौंनी का इयाग यही है।

माधो का दिल भार आँसू होना भर आयें। वह बोला, भौंनी की याद मुझे वहीं का नहीं रखती है। इच्छा होती है कि वहीं चला जाऊ ! साधू संयासी बन जाऊ।'

'यदि तू साधू-सयासी हो जायगा फिर उस गाय की रक्षा कौन करेगा ? कभी इसकी भौजाई क बारे म भी सोचा है ? बचारी

मूरजडो !"

वह समझ गया कि बात का बहुत ही फलाव होने वाला है इसलिए उसने कहा कि उसके बारे में वापस आकर बात चीत करूंगा, पहले मैं बाबा को अर्जी दे आता हूं।'

मूलकी उठती हुई बोली अच्छा रोटी खाने के लिए जल्दी आ जाना।

ठीक है।'

थानी परासने ही मूलकी ने फिर कहा मेरी बात पर क्या विचार ? शायद तुझे यह मालूम नहीं है कि उसका भाई उसकी क्या दुर्गत करनेवाला है ?'

मौसी मेरी समझ में कुछ नहीं आता। मैंने यह कभी सोचा ही नहीं था कि बात में इतनी समस्याएं पैदा हो जायगी।

वह गम्भीर हो गयी। उसे रोटी परोसकर फिर बोली समझ हर्ज ही क्या है ? कौन सा धर्म बिगड़ता है ?

माधो कुछ नहीं बोला। मौसी क्या-क्या कहती रही वह अपने अन्तर्द्वन्द्व के कारण कुछ भी नहीं सुन सका।

बिलकुल शांत रहा। रोटी को चबाता रहा आज उसे रोटी रोटी नहीं लगी। मन के आवेगों में उसकी अनुभूतियां जैसे अपना अस्तित्व भूल चुकी थी। वह हाथ धोकर घर आ गया। आकर वह अपनी खाट पर पड़ गया। गर्मी बहुत ही बढ़ गयी थी फिर भी उसकी आंख लग गयी।

दोपहर धूप-वसन पहन कर और विकराल हो गयी थी।

●

कई दिन बीत गये।

उस दिन दोपहर को माधो आत्म-ग्लानि की मार्मिक पीडा मे आहत सा था। जो वातावरण इन दिनों उसके चारों ओर बना, वह इतना उलझा हुआ और विचित्र था कि उस उसमे अपनी स्थिति नगण्य सी महसूस हुई। वह बार बार सोचता था कि उसके चारों ओर भभावात है और वह एक तिनके के समान है। यदि वह उसम पड गया तो उड जायगा।

इधर यह चर्चा जोर पकड रही थी कि सूरजदी का नाता दुष्ट चम्पल के साथ होने वाला है। यह चम्पला पता नही किस कुंठा से ग्रस्त था कि अपना उम्र व चेहरे का ध्यान न रख कर हुए गालियां पर गालियां कर रहा था। हालांकि उसके कमरे मे आत्मबल शीशा भी है पर अनेक व्यक्ति एस हात हैं जिनम आत्मालोचना की क्षमता नही होती, अपने आपको नही पहचान सकते।

बड़े दादा की यह राय थी कि इस माधो को पहल करनी चाहिए और सूरजदी को इस नरक म जाने से बचाना चाहिए। जिस औरत ने दिन रात मेहनत करके उसे पढाया-लिखाया और एक अच्छा आदमी बनाया, उसके लिए उसे सब कुछ बलिदान कर देना चाहिए। मर मिट जाना चाहिए।

और अब माधो भी यह सोचता है और उसका इरादा भी है कि वह सूरजदी के लिए मर ना सकता है पर उसे अपने घर म नही डाल सकता। उसने उसकी पूजा की है आदर किया है, श्रद्धा की है पर प्यार नही किया। उसके लिए गन्दे विचार भी मन म नहीं लाया।

उत्तर-पश्चिम के कोने म आँधी उठ आयी थी। लोगो का अन्दाजा था कि वर्षा होगी जोरदार वर्षा होगी। आषाढ इस बार बिन बरसे नही रहेगा। माधो उठ कर दालान पर आया। खाट और बिस्तर को उठा कर भीतर वाले कमरे म डाल दिया। कमरे के बाहर

'लकिन बैठ तो सही।"

सूरजडी कच्चे फर्श पर बैठ गयी। पानी की बूदें जो उसके चेहरे पर से टपक रही थी उन्हें उसने पोछा। कुछ आश्वस्त सी होती हुई बोली 'कसे हो ?'

'ठीक हू। जी रहा हू।'

'बहुत दिनो से उधर आये ही नही। बाबा कह रहा था कि अब उधर आते शर्म आती है। तुम्हारे पन्द्रह रुपय मुझे बराबर मिलते रहे हैं।"

'मुझे भय लगता है भौजाई। न मालूम लोग क्या-क्या कहते रहते हैं ? यह सब क्या हो रहा ह।

जो सुनते हो यदि वो हो गया तो मैं जीते जी मर जाऊगी। माधो ! य ल्बूडा मुझे एक कसाई के हाथ सौप रहा है। वहा मैं जल-जल कर मर जाऊगी। उन्ह पसो का लालच है। पर तुम चाहाग कि मैं तडप-तडप कर मरू ?'

'नही।

सिर्फ इतना कहने भर स क्या होगा ? इसके लिए कुछ करना हागा।

मैं तरे लिए अपनी जान भी दे सकता हू। तू मुझ स कुछ माग तो सही।

"मागने पर कुछ भी नही मिलता। यदि मांगने पर कुछ मिल भी जाये तो उसमे कुछ विशेष आनन्द नही। देवर तुम जरा सोचो तुम्हारी भौजाई को लोग बलिदान का बकरा बना रहे है।'

माधो गभीर हा गया। बाहर पूववत् बरखा हो रही थी। बच्चा का वसा ही शोर हो रहा था। माधो ने एक बार सूरजडी की ओर देखा– उसे लगा की उसका दद भीग कर और गहरा हा गया है। उसकी बडी बडी आँखा म आँसू आ गये। पहली बार उसे यह भी महसूस हुआ

कि वह कितनी कमजोर है ? असहाय है। उसके सामने एक ऐसी नारी बैठी है जिसने उसे एक अच्छा इन्सान बनाने में अपना खून पसीना एक कर दिया था और आज वह इतनी अशक्त और दुर्बल है कि उसके लिए कुछ भी नहीं कर सकता। उसके भीतर कुछ उबल उफन रहा था। वह सूरजडी को देखता रहा। पहली बार महसूस हुआ कि वह जिस नारी को अभी देख रहा है वह सौन्दर्य की प्रकाश पुँज है उसमें एक उबाल है। उसने मन ही मन कहा कि वह काफी बदल गयी है। उसके अंग अंग में जो ठहराव संघर्ष के दिनों में आया था वह खत्म हो गया है और एक नया यौवन जो बसन्त के आगमन पर शाखा पर झूमता है वही यौवनी मस्तता सूरजडी के तन-बदन में आ बसी है। सूरजडी का पहली बार माधो से लजाने की अनुभूति हुई। उसे भी अहसास हुआ की उसका देवर जवान है। वर्षों के उपरान्त यह एक नयी और पुलक भरी अनुभूति।

अपने नेत्र मूँद कर माधो बोला तू यहां क्या नहीं आ जाती ? तुझे यहां कोई कष्ट नहीं होगा।

मैं यहीं आना चाहती हूं। उस कसाई के घर नहीं जाना चाहती। तुम्हें मुझ पर दया करनी होगी सूरजडी सोच कर न्याय करनी होगी।'

फिर वह उसी वर्षा में भीगती हुई चली गयी।

वर्षा के थमते ही वह घर से बाहर निकला। गली में कीचड़ हो गया था। कच्चे मकान की दीवार अच्छी तरह भीग गयी थी। मूलकी और अन्य लोग कमठाणे से लौट रहे थे। बस्ती का पसारी अपनी दूकान के पास जमा हुए पानी को बहाने की चेष्टा कर रहा था।

माधो बाबा से मिलना चाहता था। आज की सारी घटना पर उनसे विश्लेषण करा के उस पर स्पष्ट राय जानना चाहता था। सूरजडी के उन शब्दों के गहरे अर्थों को समझने में उसकी मदद

चाहता था।

माधो जब बाबा के घर पहुचा तब बाबा की पत्नी अपने एक साल के बच्चे को गोद म लिये हुए खडी थी। उसे दखत ही बोली 'कहिए माधो जी आज दफ्तर नहीं गये ?'

नहीं तो।'

"वे तो गये हैं।'

'क्या ? अरे ! आज तो छुट्टी है !'

'व कह रहे थे कि साहब ने बुलाया है कुछ काम बाकी पडा है।'

अच्छा मैं थाडी देर मे आता हूँ। वह आ जाय तो उसे कहना कि वह घर म ही रह।" माधा यह कह कर जगल की ओर निकल गया। रेत क टीले भीग गय थे। वह निरुद्देश्य ही निजनता की आर चलता रहा। बस्ती पीछे छूट गयी। वह एक टीले क शिखर पर जाकर बठ गया। मिट्टी गीली थी पर बडी सुहावनी लग रही थी। ठन्डा का स्पश उसे आनन्ददायक लग रहा था।

दूर-दूर तक शान्ति थी। वह भीग हुए चराचर को देखता रहा। धीरे-धीरे उसे यह अनुभव हुआ कि वह कायर हो गया है। उसका साहस मर गया है। भौजाई न अपनी दृष्टि से घर आने की चाह को व्यक्त करते हुए जिस भावना का सकेत किया था, वह उसके मम तक पहुचने की चेष्टा करने लगा। वे व्यथापूरित दो बडी-बडी आँखें। दद का अथाह सम दर बसाये हुए दो आखें! पनाह की भीख मांगती हुई दो आ खें।

वह काप गया। उसकी धमनियों का रक्त जमे ब फ होने लगा। एकदम ठडा।

यह क्या हो रहा है ? यह क्या हो रहा है ? यह किस लिए हो रहा है ?

दूर तक गीली रेत के छोटे माट टील । एक प्रशांत मौन ! उस मौन म लिए व नान्ह तुम्हे मुम पर दया करनी है। दूर मान कर दया करनी है।'

वह कांप हुा उठा । एक अज्ञात चिन्ता म पराभूत होकर वह रेत के टीला म विक्षिप्त सा दौड़ने लगा । उस लगा कि उसके भीतर कोई और है। एक नया " गाल पन आ गया है । दौड़ता-दौड़ता जब वह थक गया तब टूट कर एक गिरा जसे उसम जरा भी शक्ति नहीं है।

वह हजारा कोसा की यात्रा करके आलथान यात्री की तरह थक गया था। जब वह लौटा तब बाबा अपने घर आया हुआ था । वह कपड़े गाल कर आराम से बैठा ही था। तभी रतन ही बाबा न कहा "आओ यार माधो कहाँ चले गये थे ? घर वाला पीछे म गरगरा क्या है ?

"मैं जरा जंगल की पार चला गया था । भीड़ से जी घबराने लगा था।

किस भाड़ म ?"

माधो के पास कोई उत्तर नही था। वस्तुत वह स्वय अपने आप से भाग रहा था । उस नितान्त मौन देख कर बाबा ने पूछा 'चाय पीओगे ?

नहीं।

अरे आज पीना न !'

'नहीं भई मुझे चाय जरा भी अच्छी नहीं लगती । लोग कैसे इसे दिन भर पीते रहते हैं।' उसने इधर-उधर देखा फिर कहा 'तुम से कुछ खास बातें करनी है।"

कर लो।

अपने तक ही रखना । चलो डागले पर चलें । मौसम अच्छा है।"

दोनो जने डागल पर आ गये । दो फाट की चौडी दीवार पर

दोनो आमने-सामने इतमिनान से बठ गये । बातचीत करने लगे । माधो सूरजडी के थाने और उसस हुई सम्पूर्ण वार्ता का हवाला देत हुए उसने अत्यन्त गम्भीर स्वर म पूछा 'इन बाता का क्या अर्थ हो सकता है ? मैं बडा उलझन म पड गया हू ।

बाबा की पत्नी चाय ले आयी थी । काच का गिलास था । बहुत ही कडक चाय है । यह चाय के रग स स्पष्ट जाना जा सकता था । उसकी पत्नी जिस तजी स आयी थी, उसी तजी से वापस चली गयी ।

बाबा ने एक घूट लेकर कहा, "इससे साफ-साफ लगता है कि वह तुम्हारे घर म आना चाहती है और उसका कमना सौ टच ठीक भी है । तुम स अच्छा जाना-पहचाना और समझदार आदमी उस दूसरा कौन मिल सकता है ?"

"लेकिन मेरा उसका सम्बन्ध ..." मुलर्क

"अपने को अधिक मत उलझाओ । जो सम्भव है और अच्छा है उसे करन म ही सुख है । जरा उसके अहसानो को याद करो । यदि वह कठोर मेहनत नहीं करती तो क्या तुम आज इस स्थिति मे पहुँचत दफ्तर के बाबू बनते ? तुम्हारे समाज म यह गौरव पहली बार इस बस्ती म तुम्हे ही मिला है । क्या मिला है इसका सारा श्रेय सिर्फ सूरजडी याने तुम्हारी भौजाई को है ।"

मैं भी इसे मानता हू ।

"उस समय उसने अपने आपको भुला दिया था । उसे इस चीज का भी भान नही रहा कि उसके अग अग म जवानी मचल रही है । उसकी उम्र हँसने-खेलने और मौज मनाने की है । पर उसने तब सिर्फ इतना ही याद रखा कि उसे अपने देवर को पढाना है माधो को दफ्तर का बाबू बनाना है । मेरी बात मानो और उससे नाता करके उस पर सचमुच दया करो ।"

वह कुछ नही बोला। बाबा बैठा-बैठा चाय पीता रहा । सूय देवता कहाँ हैं, घन बादलो म कोई नही जान पा रहा था । छोटे छोटे बच्चे मिट्टी के घरोंदे बना रहे थ।

चाय को खत्म करके बाबा ने फिर पूछा तुम न क्या सोचा ?'

यह कैसे सम्भव हो सकता है ? वह उठ कर चला आया। आकर रोटियां बनाने लगा। जब वह रोटियां सेंक रहा था तब मूलकी न आकर कहा कि क्या नही अच्छी भिस्तिन लुगाई सूरजडी को घर म डाल लेता। वह तेरे घर को खूब अच्छी तरह जानती हैं आते ही सब ठीक कर लेगी।'

माधो न कोई उत्तर नही दिया। उसने चूल्हे की लकडियां को छेड कर रसोई म धुआं कर लिया। मूलकी चली गयी। माधो को धुआं अच्छा लग रहा था। वह चाहता था कि वह सिफ घुटता रहे घुटता।

•

यह बात बडी तूल पा गई कि सूरजडी का बाप और उसका भाई उसे चम्पले के हाथ बेच रहे है और चमल के नाम के साथ लोगो की जीभ पर एक कडुवापन तर आता था। तरह-तरह की अटकल बाजियां लगायी जाती थी और अन्त म लाग निणय लेते थे कि इसमे सारा कसूर माधो का है। यदि माधो साहस करके अपनी भौजाई पर

अपना पहला हक पदा करले ता क्या मजाल जो चम्पला या कोई और उसके बाजू को पकड न का साहस करें।

माघो तो जसे मिट्टी का माघा बन गया था। उसकी अक्ल कुछ भी काम नही करती थी। वह दफ्तर से आता और घर में घुस जाता था। कभी कभी मुलकी उससे जरूर बात चीत करती थी। बात का विषय होता था सिफ सूरजडी।

'सूरजडी बहुत परेशान है। मूलकी उदासी से कहती।

'मुझे मालूम है।'

'फिर तू हाथ पर हाथ रक्खे कसे बैठा है? तुझे कुछ करना चाहिए।'

'मैं कुछ नही कर सकता।

क्या नही कर सकता?

वह सहसा आवेग म भर जाता। उसकी आखो म उसके अन्तम की पीडा और सघष दहक उठता। उसकी इच्छा होती कि वह चीख पडे। झल्ला कर कह—मेरी इच्छा मेरी इच्छा! पर वह निरुत्तर रहता। उसकी जबान तालूसे चिपक जाती। वह सिर झुका कर बैठा रहता। मुलकी कहती रहती उसन तेरे लिए कितन कष्ट उठाये हैं? क्या-क्या सहा है? क्या तेरा कलेजा उन बातो को याद करके पसीजता नहीं?'

वह इस पर भी चुप रहता। उसक पास सूरजडी का उत्तर कोइ जवाब नही है।

फिर बाबा भी उसस यही पूछता उसम क्या कमी है? वह एक सुन्दर स्वस्थ और पानीदार युवती है। तुम्हें सभी तरह का सुख दे सकती है।"

'मैं उसे देखकर एक करुणा स अभिभूत होता हू। तुम लोग यह क्या नहीं सोचते कि मैंने उस किस रूप म चाहा है? उसकी किस

तरह पूजा की है ?

यह एक बहु गम्र है कि आज के युग में आज भी अपने सम्बन्धों को मुक्त म पवित्र सम्बन्धों म ही बदता है म द म नये रिश्ते परिस्थितिगत बनते हैं। हाँ यह जरूर विचारणीय है कि तुम नारी की पवित्रता का सवाल नहीं उठा रहा । यह भी मुस्काया नहीं जा सकता कि सूरजदी तुम्हारे भाई की बीवी रह चुकी है ।'

तुम मूर्ख हो। माधो चिढ़ गया पड़ लिख मूर्ख ! मैं इन पाखण्ड बातों पर नहीं मानता । मुझे मानने की फुरसत नहीं । मैं सिर्फ इतना ही सोचता हूँ कि वह मेरी भौजाई है।

पर इस न्याय समाज नियम और धर्म तेरी पत्नी बनने की इजाजत और हक देते हैं ऐसी स्थिति म तुम्हें ज्यादा न उलझ कर उस बेचारी का उद्धार करना चाहिए । यह दिन प्रतिदिन कितनी मुसीबतों म घिर रही है । वह गंभीर हो गया जरा सोचो कल वह जबरदस्ती किसी के घर म डाल दी गयी वहाँ उस पर राक्षसी अत्याचार हुए तब ? तब लोग कहेंगे कि इसने जानबूझ कर अपनी भौजाई को तबाह कर दिया । उसे एक कुम्भीपाक नरक म धकेल दिया । वह आर्द्र हो गया, "मेरी व्यक्तिगत राय है कि यह तुम्हारे उस के प्रति सरासर अन्याय होगा ?

इन सभी बातों से उसका दिमाग भारी हो जाता था । दिन प्रतिदिन वह अपने को बहुत ही कमजोर अनुभव कर रहा था । उसकी स्थिति नाजुक थी । लोग कुरेदते थे और वह तिलमिलाता था । उसे लगा कि वह आदमी न रह कर एक जख्म हो गया है।

रात हो गयी । सावन की रिमझिम फुहार भागते हुए मेघ । नशीली ऋतु ।

पुरुषोत्तम की लड़की अकेली डागले पर बैठी गा रही थी साजन घर आवो जी म्हारा म डरपे सुन्दर अकेली " उसके स्वर

म ममन्तक वेदना है एक ग्रामन्त्रण है। एक कसक व पीडा है। ग्रपन ससुराल से ग्रपमानित, प्रताडित एव निर्वासित होकर पुरषोत्तम की बेटी वापस ससुराल नही गयी। स्वाभिमान की बात बीच मे ग्रडिग दीवार बन कर खडी हो गयी थी। उसका बाप रटे रटाये ही वाक्य हमेशा दोहराता था 'वह नही जायगी, किसी कीमत पर नही जायगी मेरी बेटी ग्राखिर इन्सान है, जानवर नही। मैं इस कसाइयो के हाथ नही सौंप सकता।

पर वह बेचारी एक ग्राग मे जलती रहती थी। रात के ग्रधेरे म डागले पर प्रेतात्मा की तरह घूमा करती थी। चुप ग्रौर खामोश।

ग्रौर जख्म बना माधो उसे देखता रहता था। निरन्तर निरुद्देश्य देखता रहता था। तब उसे सूरजडी की याद हो आती थी। यही चिरन्तन विरह ग्रौर पीडा! ग्रपमान ग्रौर प्रतारणाएँ!

ग्रब की बार सूरजडी ने मूलकी मौसी के हाथ माधो का रुपये भी वापस कर दिये थे। जब वह रुपये वापस कर रही थी तब सूरजडी का भाई ढब्बूडा भूखे नेत्रो से उसे देख रहा था। सूरजडी कह रही थी देवर से कह देना मौसी कि वह सुख से रहे। भौजाई के अहसानो को भूल जाय भूल क्या जाय वह तो भूल गया होगा? न भूला होता तो मुझे इस तरह जलती ग्राग म न डालता।

'लेकिन रुपये क्या नही लेनी?' ढब्बू बोला।

बहुत दिन तक ले लिये। अब इनकी कोई जरूरत नही है। अब सारे रिश्ते ही खत्म हो रहे हैं।

मूलकी मौसी उदास हो गयी। ढब्बूडा चला गया। मौसी ने अत्यन्त मन्द स्वर म ठहर-ठहर कर कहा सूरजडी! तू कही भाग क्यो नही जाती?'

इससे लाभ क्या होगा? सूरजडी ने कहा इन बेचारो का हजार दो हजार रुपये मिलने वाले है व भी नही मिलेंगे। ऐसा जुल्म

इन पर क्या करूँ ? फिर भाग कर रहता तो दुनियाँ में ही पड़ेगा।'

सोनी ने सारा भार स्पष्ट माधो की छाती पर रख दिया। माधो प्रश्न भरी दृष्टि से उस नाटा को देखता रहा। सोनी कुछ नाराजगी से बोली 'उसने कहा है कि जब सब दिन सरल हो रहे हैं, फिर इसकी क्या जरूरत है ?'

माधो ने कुछ नहीं कहा पर वह सोनी को टुकुर-टुकुर देखता रहा।

सोनी ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा जब वह दुष्ट चमारिन के घर चला जायगा तब उसका तन चोर सा छिपा जिन्दा रह जायगा। सारे गाँव दिखा सके ! पर माधो यह बेचारी बन्द हो चुका है। उसे तू अपने घर क्यों नहीं ले आता ?

मैंने कौन सा उसे मना किया है। उसने थोड़ा झल्ला कर कहा वह आ सकता है उसका अपना घर है।

वह अब कैसे आ सकती है ? यह समाज और दुनिया अब तुम दोनों को जिन्दा नहीं रहने देगी।

'फिर मैं !

सोनी नाराज हो गयी 'जो तेरी मरजी में आय कर। मैं तेरे और उस गाय के भले के लिये ही कहता हूँ।

सोनी चली गयी।

वह सारा मौसम में बिल्कुल नीरस सा रहा था। अपने ही परिवेश से दंभ और सम्बन्धों में कटा।

"मैं कितनी विकट समस्याओं से घिर गया हूं ।' माधो ने दफ्तर में बैठे-बैठे सोचा । फाइल उसके सामने खुली थी । होल्डर उसकी उंगुलियों में दबोचा हुआ था । वह अपने आप को दफ्तर की भीड़ से अलग अलग महसूस कर रहा था । टाइप की खटपट उसे थोड़ी पीड़ादायक लगी । क्लर्कों की खुसफुसाहट उसे रुचिकर नहीं लगी । उसकी इच्छा हो रही थी कि वह एकांत में चला जाय जहां प्रशांत मौन हो । कोई दूसरा न हो ।

उस दिन की घटना के पश्चात् उसे पहली बार अपनी भौजाई के रूप यौवन में बहुत आकर्षण लगा था और भौजाई लाज से अपने नयन झुका लिये थे तब से उसकी स्थिति विचित्र हो रही थी । नयी नयी अनुभूतियां जो नैतिक दृष्टि से उसे कतई ठीक नहीं लगती थी, उसके मन में जागती थी और वह अपने आपको अपराधी सा पाता था ।

वह बहुत देर तक अपनी पूर्ववत् स्थिति में बैठा रहा । फिर काम में लग गया । वह सर्वथा बेमन काम करता रहा । अन्त में घड़ी की सुइयों ने छुट्टी की सूचना दी । वह और बाबा दफ्तर से साथ साथ बाहर निकले ।

सड़क थोड़ी देर के लिए भीड़ से भर गयी थी । साइकिलवाले घंटियां बजाते हुए भाग रहे थे । आज आकाश फिर बादलों से भरा था । गौरीचन्द दयाराम को कह रहा था कि भाई आज बरखा जरूर होगी ।

बाबा ने कहा जमाने का जायजा लेता हुआ न चल जरा जल्दी पांव उठा । कहीं बरखा शुरू हो गयी तो घर पहुंचना मुश्किल हो जायगा मेरे माधो ।'

माधो के चेहरे पर उदासी की परछाइयां थी । वह जाती हुई भीड़ को देख कर बोला मुझ में चलने की शक्ति नहीं है । कदम रुक रहा है ।'

"क्या तबीयत तो ठीक है न ?"

'तबीयत को कुछ भी नहीं हुआ है। सिर्फ भौजाई की समस्या है। आज सुनकी मौसी ने बताया था कि सूरजदेई कई रोज स अपने मरवाना का विरोध कर रही है पन्द्रहम्न दिन उसे पीहरवालो न उसे पीटा। सारी गुवाड़ म ही हल्ला मच गया।'

बाबा और माधो न कच्ची पगडंडी पकड़ ली। यह रास्ता अधिक सूना था। इक्का-दुक्का ही कोई मानव आता जाता दिखायी पड़ रहा था। व दोनो चल जा रहे थ ।

बाबा न आवाज पर काबी पाकर को दमन करत कहा तुम से बहस कौन करे ? म तो बात यह है कि तुम्ह यही करना चाहिए जो मैंने तुम्ह पहले कहा था याने उसकी भौजाई को तुम अपने घर म डाल लो।'

पता नहीं यह सब मुझे अजीब क्या लग रहा है ? जस मैं कोई दुराचार या पाप कर रहा हू उफ ! बाबा ! इस विचार म मैं भीतर ही भीतर भयभीत हो जाता हू।

य सब मन म वहम है। ऐसा तुम्हारे समाज म होता है होता आया है और होना रहेगा। तुम अपनी व्यर्थ की उलझनो स उस निरीह जान को नरक म जरूर ढकेल दोग। "

माधो न कोई जवाब नहीं दिया। एकाध क्षण बाद वे चुप हो गयी थी। उनकी बात का सिलसिला टूट गया और व जल्दी जल्दी कदम उठाने लगे। शहर की चारदीवारी नजदीक आ गयी थी। चारदीवारी के गेट के भीतर घुस कर उन्होंने आकाश की ओर देखा। काली घटाए जो आकाश म इधर उधर बिखरी हुई थी आपस म संघर्ष करने क लिए उतावला हो रही थी। बाबा ने तेज स्वर म कहा जल्दी जल्दी पाँव उठा। आज आकाश को चीर कर बरखा होगी।

दोनो जल्दी-जल्दी चलन लगे।'

जब वे घर पहुँचे तब घटाएं ऐसे ही संघर्ष कर रही थी पर बरसी नहीं। माधो ने घर में घुसते ही देखा कि एक मरा और क्षत विक्षत चूहा पड़ा है। उसने आँगन में आकर छत की मुंडेर की ओर देखा। एक कौवा बैठा था। शायद वही उसे यहाँ डाल गया है। उस चूहे को देख कर उसके मन में पीड़ा और वितृष्णा दोनों हुई। उसने चूहे को दो लकड़ियों का चिमटा बना कर बाहर फेंक दिया। पानी से उस जगह को साफ करने लगा। तुरन्त उसे महसूस हुआ कि वह होती तो ? इन सब कामों में औरत की ही जरूरत होती है। भौजाई थी तब मुझे कोई भी काम नहीं करना पड़ता था। वह कठोर श्रम करके उसे खुश प्रसन्न रखती थी।

वह भावाभिभूत सा डागले पर आकर खड़ा हो गया। जलद गर्जन लगे थे। उसने उन्हें देखते-देखते यह निर्णय किया कि आज वह खाना नहीं बना पायेगा। उसने मूलकी मौसी को आवाज लगायी। काका ने कहा कि वह अभी तक कमठाणे से नहीं आयी है। तभी उसे मूलकी मौसी आती हुई दिखायी पड़ी। उसमें कुछ उत्साह जागा। वह शीघ्रता से नीचे उतरा। घर से बाहर निकलते ही उसने आवाज लगायी "मौसी !"

मूलकी ठहर गयी। उसकी दृष्टि माधो के संघर्ष भरे चेहरे पर थी। बोली, 'क्या है ?

'मेरे लिए भी दो रोटियाँ बना देना। आज मुझे अधिक भूख नहीं है।

क्या झूठ बोलता है रे माधो बनाने का आलस है और भूख का बहाना कर रहा है।" वह उसके सन्निकट आ गयी। आकर अपने नाक को लम्बा करती हुई बोली 'मैं खूब जानती हूं कि तू आजकल बड़ा परेशान रहने लगा है। मेरी बात मान और अब भी सुरजड़ी को घर में डाल ले। क्या उस गाय को उन कसाइयों के हाथों मरवा

रहा है।"

वह कुछ नहीं बोला। शान्त और चुपचाप खड़ा रहा। मूलकी ने फिर कहा 'ऐसी लुगाई तुझे पैदा नहीं ढूँढन पर भी नहीं मिलेगी। ठंडे दिन म सोच, मेरी बात म तुझे कहाँ सार' नजर आयगा।' वह क्षण भर रुक कर फिर बोली 'जीवन भर कंवारा नहीं रहेगा अकेला नहीं रहेगा। कोई न कोई इस घर म आयगी ही। फिर तू उसे क्यों नहीं लाता जिसे तू बाहर भीतर स जानता है। एक अच्छे देवर के नाते उस पर दया करना तुम्हारा धर्म भी है।

वह सन्न की तरह निरुत्तर रहा।

मूलकी न जाते हुए कहा 'इस तरह कितने दिन चलेगा? वह काफी गंभीर हो गया 'मेरा यह विचार है कि वह इस जोर जबरदस्ती मे कूवा-खाड न करले।'

वह चली गयी।

वह वापस डागले पर आकर खड़ा हो गया। आकाश पूर्ववत् बादलो स भरा था। काले कजरारे मेघ बरस नहीं रहे थे। वह उन्हे देखता रहा। धीरे धीरे बादल सांझ की बढ़ती हुई कालिमा म घुलने लगे। वह नीचे उतरा। उसने लालटेन जलाया। बरसाली उजाले से भर गयी। वह कुछ देर यूं ही खड़ा रहा। फिर विचारमग्न सा खाट पर बैठ गया। घर का दरवाजा खुला था। विचार करते करते उसकी नजर किवाड़ की ओर उठ जाती थी। जैसे कोई आया है। पर कोई नहीं आया। उसके अन्तस मे एक निराशा सी जागी। जैसे वह भीतर से टूट रहा है।

सूरजड़ी उसके मृतक भाई की जोरू ने उसे बड़े ही धर्म संकट में डाल दिया है। वह सूरजड़ी को लेकर बहुत देर तक सोचता रहा। उसे लगा कि वह उलझनो से घिर गया है।

बाहर मेघ गर्जना शुरू हो गयी थी। शायद पानी बरसे। सावन

माधो को पहली बार महसूस हुआ कि भौजाई का व्यवहार-बर्ताव बदल गया है। उसके सम्बोधन में आदर आ रहा है।

'मैं क्या कर सकता हूं। वह असहाय सा बोला, मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

सूरजडी ने अपना ओढ़ना एक ओर खिसका दिया। फिर काँचली को हटाते हुए उसने अपनी पीठ दिखायी। भर्राए हुए स्वर में बोली 'यह तो समझ में आता है। देखो देवर जी मुझे उन कसाइयों ने किस निर्दयता से पीटा है। वे मुझे बेचना चाहते हैं। देवर जी! देखा दखो तुम्हारी उस भौजाई को जिसने अपने धर्म के लिये तुम्हारे लिये क्या नहीं किया ?'

पीठ पर पड़ी हुई नीलों को देख कर माधो कांप उठा। दर्द का सैलाब उसके भीतर आया। कुछ-कुछ चोटों से खून चू सा रहा था। उसका मन क्रोध जनित आवेश से भर गया। उसकी इच्छा उन चोटों को सहलाने की हुई पर वह संस्कारों के कारण पत्थर का बना खड़ा रहा। उसकी आंखों में गीलापन तैर आया था। वह भर्राये स्वर में बोला, तुझे किस दुष्ट ने पीटा भौजाई।"

'वे दुष्ट अभी थोड़ी देर में मेरे पीछे पहुंच रहे हैं।

क्या ?

'मुझे लेने।

क्या ?'

वे परसों मुझे चम्पले के घर में डालेंगे।"

'उनकी ऐसी की तैसी। माधो एकदम गुस्से में भर उठा। उसे महसूस हो रहा था कि उसके भीतर कुछ उबल रहा है। वह क्रोध में एक अजीब सी आवाज तड़ तड़ कर उठा। बचनी से बदतमीजी करने लगा। बोला एक एक साले को यमलोक पहुंचा दूंगा। लाठियों से जमीन पर सुला दूंगा। समझ क्या रखा है मां। फिर

उसने अनव भद्दी अश्लील गालियाँ दी।

'व कई लोग हैं। मेरे भाई के साथ गिरी भी है।"

गिरी क्या गिरी का बाप भी क्या न हो, मैं एक एक को देख लूगा। तू चिंता न कर भौजाई, मैं सब को देख लूगा।"

वह उसी समय बाबा के घर गया। सारी स्थिति समझायी। बाबा लट्ठ लेकर बाहर आ गया। उसने गली के चौराहे पर आकर गली वालो को आह्वान किया कि हम लोगो के रहते हुए उस देवी जैसी पवित्र और गाय जसी भली सूरजडी पर कोई जोर जुल्म नहीं होना चाहिए। यह हमारे मोहल्ले की इज्जत का सवाल है।"

समय की बात थी। सभी लोग तुरन्त इकट्ठे हो गये। बाबा ने ओर आक्रामक स्वर म गलीवालो को उत्तेजित किया। भड़काया। उसने कहा, 'इसका मतलब साफ-साफ यह हुआ कि कल कोई भी ताकतवर किसी भी गरीब-कमजोर की बहू-बेटी को उठाकर हमारी आँखो के सामने से ले जा सकता है?"

ऐसा नही होगा। हम उन्हें लाठियो से मार-मार कर जमीन को लाल कर देंगे। कई स्वर उभरें।

बाबा माधो और अन्य गली-गुवाड के मर्द बच्चे इकट्ठे हो गये। सब के हाथो म लाठियाँ थी। सब बहुत उत्तेजित थे। उनम अन्याय के प्रति विरोध की भावना थी। सब के सब ऐसे लग रहे थे कि वे बहुत ही पवित्र आत्माएँ हैं धर्मनिष्ठ हैं समूह रूप से पीडा झेलने वाले हैं। धर्म सेना के सेनानी हैं। उधर मूलकी कर्कश स्वर म गली की लुगाइयो को एकत्रित करके सूरजडी की पीठ को दिखा दिखा कह रही थी देखो री कितनी बेदरदी से मारा है दुष्टो ने। पक्के कसाई है। सारी चमडी उधेड दी है। आने दो बदमाशो को गली मे, मार मार कर भुर्ता बना दूगी।

गलीवाले मोर्चा जमा कर खडे थे। थोडी देर में एक लडका

भागा-भागा आया । वह बोला 'वे लोग आ रहे हैं। उनके हाथ में लाठियाँ हैं।'

बाबा ने सब को सावधान किया 'जब तक मैं न कहूँ तब तक आप में से कोई भी आगे न आयें। फिर उसने अपनी लाठी को जमीन पर पटक कर उसकी मजबूती को आँका। उसने भीड़ को सम्बोधित करके कहा, मैं उनके पास जाकर आता हूँ।

कई लोगों की राय हुई कि उसे अकेले न जाने दिया जाय। वाद-विवाद के बाद अन्त में यह तय किया गया कि दो-तीन आदमी साथ जायें।

वे लोग गये। गली जहाँ खतम होती थी वहाँ पर झुण्ड घिरा और बस पाँच-सात व्यक्ति खड़े थे। बाबा को देख कर गिरी ने कहा तुम बीच में न पड़ो बाबा।

बाबा ने उसी तेज तर्रार स्वर में कहा यह गली का मामला है। गली की इज्जत हम सब की इज्जत है। मैं तुम्हें बताये देता हूँ कि जिस पाँव आये हो उसी पाँव वापस लौट जाओ। किसी ने कोई बेजा हरकत की तो खून खराबा हो जायगा। इधर भी तीस-चालीस लाठियाँ एक साथ उठेंगी।'

लेकिन बाबा ....'

सुनो गिरी इस लेकिन वेकिन से कुछ भी काम नहीं बनेगा। माधो मेरा दोस्त है, साथ में काम करता है मैं उसके साथ लड़ूँगा। फिर किसी को जबरदस्ती रुपयों में बेचना न्याय नहीं। सूरजड़ी माधो की भौजाई लगती है सबसे पहला और अधिक हक उसी का ही है। वह उसे न सँभाले तब बात और है। वैसे इस घटना की पुलिस को रिपोर्ट दे दी गयी है। पुलिस आती ही होगी। सब मामला खतम हो जायगा। गिरी! तुम यह जानते ही हो कि यहाँ के एस पी साहब मेरे साहब के खास दोस्त हैं। सबको हथकड़ियाँ पहना कर ही दम लूँगा।"

इस पुलिसवा़नी बात से सब डर गये। सबसे पहले ढब्बू ने कहा, "चलो, यार चलो बाद म सब देख लिया जायगा।'

बाबा ने यह सोचा कि पुलिस की धमकी ने सब को डरा दिया है। धीरे धीरे आक्रामक दल चलता बना।

बाबा ने आकर यह सूचना दी कि सब लोग चल गय हैं।

मूलकी ने कडक कर कहा, "उन नीचो को क्या जाने दिया? उनके सिर लाल होने ही चाहिए थे।'

बाबा ने कहा, 'बात बढाने से कोई लाभ नही, । सब काम शांति म ही हो गया है। फिर वह मूलकी को एकांत म ले गया। गभीर स्वर मे बोला, तुम इस नालायक को समझाओ।

अब यह बातो से नही मानेगा तो लातो से मानेगा। चलो, माधो घर चलो।'

घर मे एक सभा सी हो गयी। मूलकी, बाबा और माधो। सूरजडी अपने भीतर क कमरे म बठी थी। मूलकी और बाबा ने बार बार एक ही सवाल दोहराया भौजाई को घर मे डाल और माधो ने ग्रत म परेशान होकर कहा मेरी समझ म कुछ नही आता, जो आपकी मर्जी म आय वह कर।"

मूलकी खुश हो गयी। वह भाग कर सूरजडी के पास गयी।

बाबा ने कहा कल यह काम पूरा होग। सुबह ही सुबह। जल्दी सुबह।

•

माधो ने सहमते-सहमते घर की मिट्टी के गारा से परम्परा के अनुसार सूरजडी को घर में डाल लिया। नियमानुसार मुख्य दरवाजे से वह भीतर नहीं आ सकता थी। सूनकी ने सूनी से कहा ला जल्दी से यह ओढ़ना इस पर डाल दे।'

माधो कुछ देर सब खड़ा रहा। उसकी समझ में नहीं आया कि यह सब क्या हो रहा है? फिर भी आशा के करने पर उसने विधिवत सूरजडी पर केसरिया रंग का ओढ़ना डाल दिया। सारी गली में देखत-देखत चर्चा फैल गयी कि माधो ने अपनी भौजाई सूरजडी से नाता कर लिया है।

माधो जल्दी से सब छोड़ कर घर से बाहर निकल गया। वह शाम से खाना-पानी हो रहा था। वह सूरजडी के सामने अभी नहीं ठहर सकता। सूरजडी भी ओढ़न को सिर पर डाल निर्जीव सी खड़ी रही। उससे जाते हुए माधो से कुछ भी नहीं कहा गया। वह उसे क्या सम्बोधन करें? चुप! एकदम जड़वत्। वह चला गया। वह ओढ़ने का पल्ला पकड़ कर खड़ी रही। फिर वह दर्पण के सम्मुख आ गयी। केसरिया ओढ़ने में उसका केसरिया रंग एकमेक हो रहा था। वह अपने को देखती रही, देखते देखते उसकी आँखें भर आयी।

दिन भर वह घर को व्यवस्थित करने में लगी रही। सूनकी मौसी बार बार आकर उसकी मदद करती रही। इस बीच रूड़ा भी आया था। जब उसने सूरजडी को केसरिया ओढ़ने में देखा तब वह आगबबूला होकर वापस चला गया। अब वह कर ही क्या सकता था? जो होना था वह तो हो ही गया।'

रात को अंधेरा होने के बाद माधो लौटा। घर में उजाला था। साफ सुथरा घर। बरसाली की खाट का बिस्तर हट गया था। वहाँ केवल खाट पड़ी थी। उसने दरवाजे पर खड़े-खड़े बाहर की ओर देखा। गली सूनी थी। सन्नाटा छा गया था। सन्नाटे को देख कर

उसने मन ही मन सोचा कि वह बहुत देर से आया है, जानबूझ कर देर से आया है। वह भीतर घुसा। भीतर के कमरे से उजाला निकल कर आँगन में पसर गया था। रसोई में अंधेरा था। उसने ज्योंही जूते खोले उसे महसूस हुआ कि कमरे में कुछ आवाज सी हुई है। उसके पाँव रुक गये। जैसे उसकी आत्मा कमजोर हो गयी हो।

तभी सूरजडी बाहर आयी। उसका भेष बदला हुआ था। नया घाघरा, काँचली और ओढ़नी। सजी-सवरी!

मैंने सोचा तुम वापस चले गये। वहाँ क्या खड़े हो?

वह कुछ नहीं बोला। कमरे के सामने आकर खड़ा हो गया। कमरा भी सज गया था। उसमें एक बिस्तर लगा था। एक बिस्तर को देख कर वह अपने आपको कमजोर समझने लगा। वह अबोध बालक की तरह प्रश्न कर बैठा 'मेरा बिस्तर तू यहाँ क्यों लायी?' सूरजडी ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने एक पल के लिए उसे देखा और बाद में लालटेन को। उसके पास आज इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था। वह कमरे से बाहर निकलती हुई बोली तुम कपड़े बदलो मैं खाना लाती हूँ। वह रसोई में चली गयी। माधो कपड़े उतारने लगा। उसको कुछ अजीब सा लग रहा था और उसे लगना ही था। उसने इस स्थिति की कल्पना ही नहीं की थी। इन क्षणों को भी भोगने की नौबत कभी आयेगी, यह उसने सोचा भी नहीं था।

सूरजडी खाना ले आयी। पानी का गिलास भर दिया। थाली में उसने खाना परोस दिया। परोस कर उसके सामने बैठ गयी। वह धीरे धीरे खाना खाने लगा। उसे रोटी में कोई स्वाद नहीं लग रहा था। खाता-खाता वह सूरजडी की ओर देख लेता था। सूरजडी गंभीर मुद्रा में बैठी थी। दो रोटी खाने के बाद उसने कहा, मुझे भूख नहीं है। तू खा ले।'

क्या?

मैंने ऊपर म कुछ खा लिया था।"

'एक रोटी और खालो।"

बस। वह कमरे म बाहर निकल गया। उसने हाथ धो लिए। हाथ धोकर छत पर चढ गया। आकाश था पर आज आकाश एकदम साफ और तारों से भरा था। अनगिनत तारें। वह निरुद्देश्य तारों को गिनता रहा। छत की दीवार पर बैठ गया। गली और सूनी हो गयी थी। आँगन म कुछ खटपट हो रही थी। धीरे धीरे वह खटपट बंद हो गयी। उसने आँगन म झांक कर देखा लालटेन का प्रकाश मिट गया था। सिर्फ कमरे का प्रकाश अब भी आँगन म फैला था।

वह धीरे से नीचे उतरा। उसने कमरे म झांक कर देखा। सूरजदेई बिस्तर पर लेटी हुई थी। धीरे धीरे पंखा झल रही थी। उसने कमरे के भीतर घुसते हुए कहा जब इतनी ही गर्मी है फिर छत पर क्या नहीं चली चलती ?

आज भर नीचे आज ऊपर नहीं।

'मुझे यहाँ नींद नहीं आयगी ?

सूरजदेई कुछ नाराज सी हो गयी। नीची गर्दन करके बोली 'मैं सब जानती हूँ मैं तुम्हें अच्छी नहीं लगती। मैं जान बूझ कर गले पडी हूँ तुम्हारे। पर इसम अन्याय अधर्म क्या है ? ऐसा हमारे यहाँ होता ही है। कितने ही घरों म ऐसा हुआ है। सच मुझे तुम्हारे बर्ताव से बड़ा दुख हो रहा है। जरा सोचो मैंने तुम्हारे लिए अपना कौन सा सुख नहीं छोड़ा ? यदि मेरे पीहरवाले मुझे किसी अच्छे आदमी के पल्ले बाधते तो मैं तुम्हारे पास नहीं आती। कभी नहीं आती पर मैं कमजली ठहरी। सुख मेरे भाग्य म है ही नहीं। खैर ! मैं तुम्हें नहीं सुहाती हूँ तो चली जाती हूँ। कह कर वह उठ गयी। उसने ओढ़ने के पल्लू को ठीक किया। भर्राये स्वर म बोली "मुझे छिमा करना। मैं चली। इस शहर म बहुत से कूवें होंगे ही।

और सचमुच सूरजडी कमरे के बाहर हो गयी। वह आगन म खडी होकर सुबकने लगी। माधो उसकी पीठ का देखता रहा। सोचता रहा कि मैं दफ्तर का बाबू इसी क बदौलत बना हूँ। यह नहीं होती ता मुझे कौन सभालता ?" वह नि शब्द पाँव उठाता हुआ उसके पीछ आया। धीरे स बोला चलो भीतर चला।'

वह टस स मस नही हुइ। सुबकती रही। उसन दुख स अपना मुँह हथेलियो म छुपा लिया था। माधा ने उसका हाथ पकडा चल अब मुझे तग न कर ले मैं तुझ स माफी मागता हू। उसने सूरजडी का हाथ जोड दिय। सूरजडी ने उसके जुडे हुए हाथा का पकड कर चूम लिया। रुधे स्वर म बोली मुझे हाथ मत जाडा यह पाप मुझ पर क्या चढाते हो। वह भावावेश म माधा क हाथ चूमती रही। माधो उसे कमर के भातर ल आया। माधा न लालटेन बुझा दी पर वह कई राता तक सा नही सका। हालाकि सूरजडी की बाँह उससे लिपटती रही पर उस लगा कि जम वह ठीक नही कर रहा है। कभी-कभी सूरजडी नाराज हो जाती थी। आखिर एक दिन उसन गुस्स म कह ही दिया तुम मद हो कि नहीं ?'

माधा कुछ नही बाला। उदास उदास सा हो गया। उस लगा कि जो भी हो रहा है वह आनन्दहीन है। पर अब यह सब होगा ही।

उसन अँधेरा कर लिया।

पहली बार उसने सूरजडी का बाहा म भरा। एक विचित्र उत्तजना और व्यथना की मिलि जुली स्थिति। आखिर जा हो गया उस नही मिटाया जा सकता।

और वह पिघल गया।

•

सब सामान्य-सहज हो गये।

इस बीच पूरा एक वर्ष क्या पाँच वर्ष बीत गये। इस बीच नात की वर्ष गाँठें भी आयी थीं। सूरजदी ने तीन बच्चों को जन्म भी दिया था? इस बीच मूलकी विधवा भी हो गयी थी। उसका बीमार और कमजोर पति मर गया था। मूलकी उस दिन बहुत रोयी थी सचमुच वह बहुत ही कमजली व हतभागिनी है। उसके नसीब में पति का सुख है ही नहीं। वह ग्रिस्तिन नहीं बन सकती।' सभी ने उसे सांत्वना दी। माधो ने उसे समझाते हुए कहा था, 'न रामौसी मरना जीना इस पृथ्वी पर लगा ही रहेगा। मेरा राम समान भाई मर गया तो हमने क्या कर लिया? धीरज रख। शांति रख।'

शांत होना ही था। इस विश्व के वनानिक व यांत्रिक प्रांगण में बस अब एक ही तो सत्य रह गया है—मृत्यु! इसे कोई नहीं जीत सका। जन्म रोक दिया पर मृत्यु को कोई भी पराजित नहीं कर सका।' यह अजय है मृत्यु! यह आती है मनुष्य पीड़ा के सैलाब में तर कर फिर शांत हो जाता है। मूलकी भी चुप हो गयी। सूरजदी भी यह भूल गयी थी कि वह कभी विधवा भी हुई थी। तीन बच्चों के हान हान माधो को भी यह ख्याल नहीं रहा कि कोई उसके भाई भी था। कभी-कभी प्रसंगवश अवश्य याद आता। सभी कुछ समयांतर से विस्मृति के गर्भ में चले जाते हैं। याद जो शेष रहती हैं वेभी लोहे के टुकड़े के समान आत्मा के सागर में डूब जाती हैं।

रात का गहरा अंधकार सृष्टि पर छा गया था। आजादी के तीन वर्ष हो गये थे। देश में परिवर्तन के नव जागरण के स्वर सुनायी पड़ने लग थे। पर यह बस्ती गली गुवाट जरा से भी नहीं बदले। यहाँ थोड़ा भी परिवर्तन नहीं। हाँ माधो ने इस बीच अपने मकान को अच्छा बना लिया था। उसने मौसी से घर अपने नाम लिखा लिया था। कभी कभी गिरी आ जाता था। रात हुए रहता था मुझे तरा

भाई कालीधार डूबो गया। पूरे पाच मौ रुपय हैं चल माधो तू दो मौ मे ही फैमला करले।

माधा उसका कोई उत्तर नही देता था। कभी कभी वह उसका डाट भी दता था। कह देता था 'तू भी भाई क पास चला जा। वहा तुझे पूरे पाच सौ के पाँच सौ मिल जायेंगे।'

बाहर के अँधेरे को देखकर माधा ने कहा सनू की माँ, सिफ आठ बजे है पर बाहर एसा लगता है कि एक बज गया है। सारे रास्तों म सूनवाड (सन्नाटा) बस गयी है। सब दूकानें बद हैं।'

सियाल (सर्दी) की रुत ऐसी ही होती है। रात जल्दी पडती है। और दिन देरी स निकलता है।'

भीतर का कमरा। सारे दरवाजे खिडकियाँ बद ! पिछले दा दिना से शीत लहर चल रही थी। कडाके की ठड। हाथ-पाव ओढे रहन पर भी ठिठुर रह थे। माधो के तीना बच्चे सो गये थे। पहला लडका दूसरी लडकी व तीसरा लडका था। व दोना खाना खा चुके थ। एक रजाई म घुसे हुए बठे थे। अनीत उनके लिए मर गया था। एकदम मर गया था। सब विस्मृति के गभ म।

'तुम बच्चा का गम कपडे क्या नही बनवा देते ?

व बहुत महंगे हैं। रुई की जाकटें बना दो। सस्ती भी रहगी और उमस सर्दी रुकेगी भी ज्यादा।

कुछ भी बनवादो पर जल्दी से बनवादो।"

उसन उसे बाहो म भर कर कहा मरी जान आज तारीख २१ है एक तारीख को तनखा मिलत ही ला दू गा। सब कपडे तेरे बच्चा क और एक तरे ओढने को बढ़िया चादर। गम चादर !"

नहीं नही, इतना वेसो पसा क्या खच करते हो ? मेरे लिए ता कोई माटी चादर ला दो। वह ही काफी होगी। सनू के बापू ! कुछ पसा बचाना चाहिए। मूलकी मौसी कहती है पसा आज का खुदा है

पर आया है । पहली बार माधा ने महसूस किया था कि आज हा उसकी पहली रात है सुहाग की रात ! सूरजडी भी शाम से दोहरी दोहरी हो रही थी ।

फिर वही जीवन ! आम लोगा जसा जीवन । सामान्य सहज । जो पल बीत गया, वह वापस लौट कर नही आया । दफ्तर का बाबू माधा आज यह सोचने लगा कि जिस उत्साह व महनत से वह दफ्तर का बाबू बना था उसमे उतना सुख सन्ताप नही है । साल भर म कुछ रुपये बढते हैं और खर्चा उससे अधिक । २०–२५ तारीख के होते–होते तो उसकी जेब एकदम खाली हो जाती है । उसके पास कुछ भी नहीं बचता । उसे बेचनी से पैसा का इन्तजार करना पडता है पहली तारीख की प्रतीक्षा करनी पडती है । खाली जेब उसका मन उदास रहता है उसे बहुत सी बाता म सुख भी नजर नही आता ।

फिर भी वह उन लोगा से सुखी है जो कमठाणे' जाते है। थके–टूटे आते हैं और फिर शराब का घूट लेकर घर मे कुहराम मचाने । आजादी के बाद शराब पीने की मात्रा मे वृद्धि ही हुई है । मजदूर ज्यादा पीने लगे हैं। उसे लगा कि आजादी के साथ व्यक्तिगत आजादी भी बढ गयी है ।

क्या सोचने लगे ।' सूरजडी ने उसके ध्यान को भग किया । लालटेन मन्द हो गया था । छोटा लडका रोने लगा था । सूरजडी ने देखा–पेशाब कर लिया है । उसने नीचे का पोतडा बदला । पोतडा बदलते–बदलते सूरजडी ने कहा 'इस मुन्न के लिये कुछ दवा लानी ही पडेगी । इस बडी जोर से खाँसी आती है कही खाँस न हो जाय ।"

कल जाकर तू ही जयपुर वाले हरिनारायण वद्य जी को दिखा आना । अच्छे वद्य जी हैं ।

मैं दिखा आऊगी । वह वापस आकर उसके सन्निकट आई

ग्रोट पर बैठ गयी।

रात ग्रौर गहरी हा गयी थी। बाहर कुत्ता ग्रशुभ ढंग मे भौक रहा था। सूरजड़ी इस तरह के कुत्त के भोकने के साथ ग्रातकित हो जाती है। वह माधा को जोर से पकड लेती है।

माधो पूछता क्या क्या हुआ री ?'

"कुछ भी नही। तुम इस कुत्ते को यहा से निकलवा दो। यह सन्न भाकता है।"

'भोकन दो।'

मुझे डर लगता है।"

'तुम्हे नही डरना चाहिए। बचारा सर्दी के कारण रो रहा होगा। ग्ररी पगली इनम भी 'जीव' होता है। वह भी तडपता-कलपता है।'

वह चुप हो जाती।

अनेक घटनाओ से भरा जीवन ग्रब तिरिचत परिधि म ग्रा गया था।

दुख-सुख की चर्चाग्रो का ग्रन्त होना था प्यार म। प्यार क क्षण गुजरने के बाद माधो एकांत की अपेक्षा करता ग्रौर करता है।

रात गहरी हा गयी थी। एक बार फिर सूरजड़ी के रूप-यौवन का चचा की माधो ने। सूरजडी न प्यार स कहा लालटन बुझा दू।'

बिल्कुल।

कमरा ग्रधर से भर गया।

धूप के निकलने के बाद माधो उठा। सारा डागला धूप से भर गया था। माधो बच्चा को लेकर डागले पर चला गया। सब बच्चों को अपने चारों ओर बिठा कर धूप सेवन करने लगा।

धूप तेज थी।

दूर कोई गजर जब नौ बजाने लगा तब वह उठा और नहाने धोने लगा। सूरजडी ने बाजरी का खिचड़ा बना लिया था। वह आग पर पड़ा-पड़ा सीज रहा था। थोड़ी देर आग पर रखा रहने पर खिचड़े का स्वाद अच्छा हो जाता है। वह अपने छोटे बच्चे को लेकर दरवाजे के बीच खड़ी हो गयी। दरवाजे के चारों ओर धूप फैली हुई थी। सुहानी धूप। वह अपने बच्चे को देख रही थी। देखते देखते वह ममता में डूब गयी। उसे चूमने लगी। उसके बच्चे कितने सुन्दर और प्यारे हैं। मूलकी मौसी ठीक ही कहती है कि तेरे ये दोनों बेटे राम-लखण की तरह होंगे। बहुत पैसा कमायेंगे और तेरी हुक्म पर अपनी जान दे देंगे। और यह छोटा तो राजा के बेटे की तरह लगता है। नाक नक्श अपने बाप के और रंग मेरा एक दम गोरा। वह फिर अपने में डूब गयी। उसके भीतर की मां ने अपना विराट रूप धारण कर लिया। वह अपने बेटे को छाती से चिपका कर कुछ गुनगुनाने लगी।

दूर से कोई इक्का आता हुआ दिखायी दिया साथ ही माधो ने पूछा "रसोई में क्या देर है सन्नू की माँ दफ्तर का टम हो रहा है।"

"बस तुम जरा कपड़े पहनो मैं खाना परोसती हूं।"

इक्का उसी के घर की ओर आ रहा था। धीरे बहुत धीरे। उसने सोचा कि कोई होगा ? फिर भी वह अपनी उत्सुकता को नहीं दबा सकी। इस मजदूर बस्ती में आज इक्का कैसे ? आता भी है पर कभी-कदा। इक्का बहुत ही नजदीक आ गया था। वह भीतर चली आयी। शायद उसने मन ही मन सोचा होगा कि भली औरतों को

परनिया के मामा नहीं आना चाहिए।

इतना आदर उगी के घर के आगे रुका। इसवाला जोर जोर से पटा बजा रहा था। माधा ने धोती पहनते हुए कहा अरी मनू की माँ जरा बाहर जाकर देख कौन आया है? हाथ के इशारे से समझा कर रुक रहा।'

गुरजही बच्चे को लिए हुए घूंघट निकालकर बाहर आया। जब ही उसने इक्के पर बैठे आदमी को देखा वह घबराती सी भीतर आयी। उससे बोला नहीं गया। सारा चेहरा पसीने पसीने से भीग गया।

कौन है? धोती पहन कर माधा ने पूछा और तू इतनी घबरा क्यों रही है? बताती क्यों नहीं?

उसने अत्यन्त कठिनता से कहा या वो।

माधा झपट कर बाहर निकला। वह दरवाजे के बीचोबीच जैसे थम गया हो इस तरह रुक गया। मूलकी आ गयी थी। वह जोर जोर से चिल्ला रही थी— अरे भौंनी आ गया है मरा हुआ भानी भानी भानी भौंनी! यह नाम पल भर में सारे मोहल्ले में फैल गया। घर के आगे भीड़ जमा हो गयी थी। भौंना को जैसे किसी ने कह दिया हो कि चुप रहना बिल्कुल मौन!

मूलकी दूसरों की सहायता से सामान उतारने लगी। दो बड़े बड़े सन्दूक। बिस्तरबन्द में डाला हुआ बिस्तरा। बाल्टियों में फल।

भीड़ जिस उत्साह से आयी थी थोड़ी देर में उस पर मुर्दनी छा गयी। चिन्ता में घिर गयी वह।

अब क्या होगा? सभी कह रहे थे। भानी चुपचाप बरसाली में चला गया। मूलकी ने भीड़ को हटा दिया था। फिर भी लोग सोच रहे थे अब क्या होगा? यह बड़ा विचित्र हुआ है। एकदम अजीब!

मूलकी ने डाँटते हुए तीव्र स्वर में कहा सब ठीक हो जायगा इनके अपने घर का मामला है, खुद निपट लेंगे। चलो तुम सभी लोग

अभी चलो।"

धीरे धीरे भीड छट गयी। मूलकी ने उसे इस तरह कहा जैसे घटना घटी ही न हो अरे भानी ! तू भी गजब का आदमी है मर कर कैसे जिंदा हो गया ?

भानी की आत्मा जैसे तडप उठी। उसकी पीडा से दहकती आँखें मानो कह रही थी कि दुबारा मरने के लिए मूलकी मौसी दुबारा मरने के लिए।'

माधो का लडका मनू और लडकी बन्नी बरसाती मे आ गये थे। एक अजनबी को घर मे देखकर वे टुकुर टुकुर देखने लगे। उनकी स्थिर दृष्टि मानो पूछ रही थी कि यह कौन है ! और कोई क्या बताए कि यह उसके कौन लगता है ?

'जाओ छोरा छोरियो भागो।" मूलकी ने डाट बतायी। दोनो बच्चे भाग खडे हुए। मूलकी के होठो पर फीकी मुसकान नाच उठी। वह खोखली आत्मीयता से बोली य तेरे माधो के बच्चे हैं रे बडे प्यारे बच्चे हैं।'

पत्थर के बने भानी ने सोचा क्या ये हो अपनी मा का रंग रूप लेकर आये हैं न ? उसका मन क्रोध और विरक्ति दोनो से भर आया। अपने मन की अजीब स्थिति में वह भीतर ही भीतर सुलग रहा था-ये लोग कृतघ्न हैं। कितने नीच और कमीने हैं ! इनमे इन्सानियत का नामोनिशान नही। उसकी इच्छा हुई कि वह सबको पीट-पीट कर जमीन पर सुलादे।

पहले नहा-धो लो और कुछ खालो बेटा। जो होना था वह तो हो गया। अब आगे क्या करना है इस पर सोचेंगे। जल्दबाजी और गुस्सा काम बिगाडने ही हैं'

मूलकी ने वहीं से आवाज लगायी मूरजडी, जरा पानी गर्म करदें, भानी नहायगा।

और सूरजडी को लगा भीतर के कमरे में बैठ लगा कि उसके चारो ओर की दीवार जल रही हैं। सारे प्लास्तर प्लास्तर न रह कर आग की परतें बन गये हैं। वह जहा भी स्पर्श करती है वहीं आग सी तपिश महसूस होती है। यह कितनी संकट पूर्ण घड़ी है? मर्मान्तक वेदना से लिपटे क्षण उसके चारो ओर बैठ गये हैं। निर्मम और निष्ठुर पल! वह अपने को निर्जीव सी महसूस करने लगी। उसे लगा कि उसके दिल में शून्य भर गया है।

जब मूनकी ने उसे आवाज लगायी तब वह अपने आप में इतनी तन्मय थी कि उसे एक बार कुछ भी सुनायी नहीं पड़ा। मूनकी ने उसे फिर कहा "क्या बहरी हो गयी है?"

सूरजडी ने मनू से कहलाया "अभी करती हूँ।"

उसने आकर चूल्हा जलाया। उसके दोनों बच्चे उससे आकर लिपट गये। सन्नू ने पूछा "माँ यह कौन है?"

सूरजडी उसे क्या बताती? उस पिछले नाते को वह किस तरह खत्म करती? किस आधार पर खत्म करती? उसने कोई ज्वाब नहीं दिया। वह चुपचाप बैठी रही।

धुआँ तेज से गया था। लकड़ी गीली थी। धुकने लगी। सारी रसोई घुट गयी। धुएँ से भर गया। उसे लगा उसके भीतर भी धुआँ भर गया है। वह घुट रही है।

भानी को अत्यन्त गम्भीर मौन देखकर मूनकी भी भयभीत हो गयी। उसे डर लगने लगा। फिर भी वह हटी नहीं। बैठी रही। सूरजडी ने चूल्हे में थेपड़िया डाली। माचिस से आग को ज्वलित किया। भक से आग जली।

वह बाहर आ गया। उसके साथ-साथ दोनों बच्चे थे। वह अपने कमरे में आकर बैठ गयी। सादा कपड़े पहन रखा था। उसे कपड़े पहनते देखकर वह पूछ बैठी "तुम कहाँ जा रहे हो?"

'दफ्तर।'

'खाना ?'

मुझे भूख नहा है।"

क्या ?

मेरी तो इच्छा हानी है कि अपना काला मुँह लेकर कहो चला जाऊ कही डूब मरू ?

मेरी भी यही इच्छा होती है। हे राम ! अब क्या करें ?' दाना बच्चे नादान से उनकी आर देख रहे थ। सहम-सहम और डरे डर।

सूरजडी ने आचल मे मुँह छुपा कर रो दिया। पीडाए और गहरी हाकर उसके चेहरे पर तैर गयी।

ईश्वर न आज हम कितनी बडी अग्नि-परीक्षा म डाल दिया है। कुछ समझ मे नही आता कि हम क्या करें।'

'मुझे तो तुम गला घोट कर मार दो।

माधो कपडे पहनता रहा। बीच म दुवह सन्नाटा छा गया।

मैं अभी दफ्तर जाकर आता हू।

नही नही मुझे अकेला मत छोडो। मैं तुम्हे हाथ जोडती हू कि मुझे अकेला मत छोडो। मैं अकेली घुट कर मर जाऊगी। अपने आप से डर कर मर जाऊँगी।'

मूलकी ने बरसाली से आवाज दी जरा पानी लाकर रखदो।

वह इतनी अशक्त हो गयी थी कि उसम उठा नही गया। उसने विनीत स्वर म कहा तुम अपने भाई को पानी की बाल्टी द आओ। मुझे लगता है कि मुझ म शक्ति ही नहीं है।

माधो न पानी की बाल्टी रखदी। उसन आगन म ही कहा 'मौसी पानी रख दिया है।

भौंनी न स्नान कर लिया। सवथा अनिच्छापूवक स्नान ! मूलकी ने उसके सामन लाकर खाना रखा। उसन लाचार और प्रिय

फिर वह हाथ धोकर उठ गया।
मौसा ने पूछा 'बस इतना ही।"
'मौसी थोड़ा सा जहर लाकर दे दे।"
वह जल्दी से डागने पर चला गया।
धूप ठंड की वजह से सुहावनी लग रही थी।
भानी टूटा हुआ सा पड़ गया।
इसने दुबारा सोचा—य लोग कितने कमीने और खुदगर्ज है। यह मेरा भाई जिसको मैंने दफ्तर का बाबू बनाया उफ! कितना कृतघ्न? औरत औरत जात ही ऐसी होती है! मन से बेवफा और धोखेबाज! यह तो मेरा भाई था सगा भाई दोनों का खून एक! वह अथाह पीड़ा से तिलमिला उठा। उसने अपना बिस्तरा मंगवाया और उसे बिछा कर सो गया। उसे नींद नहीं आयी वह सोचने लगा य भ्रष्ट और पापी लोग हैं। वह यहाँ क्या आया? आह! उसने कितने अरमानों से सपने सजाये थे। वह झूठ मूठ का मरा ताकि लोग इन्हें लवाज से तंग न करे। फिर कलकत्ता से आसाम! आसाम के चाय बागानों में कठोर मेहनत से केवल पेट भराई हुई तो वह वापस कलकत्ता आ गया। वहाँ जाकर वह उस दल में शामिल हो गया जो नशीली चीजों का व्यापार करता था। कितने पाप किये हैं उसने इतना धन संग्रह करने में। खून तक किया उसने। आज भानी को पहली बार महसूस हुआ कि उसका खून करना निरर्थक गया। उसे याद आया कि वह व्यक्ति उसके दल का खास आदमी था। दोनों पन्द्रह हजार की अफीम बेचने गये थे। दल का उस्ताद भानी को बहुत ही चाहता था।। आशा से अधिक विश्वास रखता था। भानी को पूरे पाँच वर्ष हो गये। अपने समाज से अलग देश से अलग परिवार से अलग। वह कब पैसा कमाये और कब वह बीकानेर पहुँचे?
उसे याद है वह रात दिन प्रभु से यही प्रार्थना करता था कि

उसने अपने आपको जो मृतक घोषित किया है, वह सिर्फ इसलिए की वह एक दिन ढर सारे रुपए कमायेगा और अचानक अपने देश पहुंचेगा। लेकिन उसने पाया कि मेहनत से आदमी सिर्फ रोटी कमा सकता है। केवल अपना पेट भर सकता है। कुछ बचा नहीं सकता और उसे बचाना है ऐर सारे रुपये बचाने हैं। इतने रुपये जिनसे वह अपने देश जाकर अपना कर्ज चुका सके, अपनी सूरजड़ी के लिए सोने का हार बना सके। अपने छोटे भाई के लिए एक अंग्रेजी ढंग का कोट व पेंट बना सके ताकि उसकी सारी जाती भौंचक्की रह जाय। इन सब सपनों को पूरा करने के लिए उसने अपने एक साथी की हत्या की। महापाप किया। पन्द्रह हजार रुपये अपने पास रख कर वह सरदार के पास जाकर रोया। उसने अपने शरीर पर कई खरोंचें लगा ली थी जिससे उसके सरदार को यह विश्वास होजाय कि उसने अपने धन को बचाने के लिए बहुत ही चेष्टाएं की थी। पर उसने अपने दोस्त को मार डाला वह खुद अपनी इस नीच करतूत पर हैरान है कि उसने एक आदमी की इतनी सहजता और सफाई से कैसे हत्या कर दी। वह इतना निर्मम निष्ठुर कैसे बन गया? उसने अभी भी अपने उन बलिष्ठ कठोर हाथों को देखा जो उसके सोये हुए दोस्त का गर्दन के चारों ओर लिपटे थे। वह बेचारा तड़पता रहा और वह राक्षस की तरह उसके प्राणों को निगल गया। और आज वह सोचता है कि उसके उस पाप की क्या साथकता है? इसके बाद तुरन्त उसने वह मकान छोड़ डाला क्योंकि उसने सरदार को साफ साफ कह दिया था कि वह यहाँ पर नहीं रह सकता। भय के मारे उसे नींद नहीं आती है। वह अपने आप पर यह सोच कर हैरान हो जाता है कि वह तत्काल कितना अभिनय प्रवीण हो गया था। जब उसके सरदार को विश्वास हो गया कि उसके पीछे कोई प्रेतात्मा लग गया है वह भय से आतंकित है। परेशान है। फिर छुट्टी ले कर चला आया। दिल्ली में आकर उसने सबसे पहले सूरजड़ी

पहली बार मूरजडी को भी लगा कि एक नया सत्य उमन जाना है। सचमुच वह इसम जरा भी क्सूर वार नही है। निर्दोष है। उस गहन सी लगी। उसकी आख भर आयी। वह रामी राती बोली मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहती हू कि नाते के पहले मेरे मन मे जरा भी खोट नही थी। मैंन अपन और उसके (माधा) बारे मे कभी कुछ सोचा ही नही था। सिफ इसकी (भानी) इच्छा को पूरा करन के लिए रात दिन चूना ईट ढोती रही। अब यह मरे बारे म न जाने क्या क्या सोच रहा होगा। मैं ता मरी जा रही हू। बार-बार इच्छा होती है कि कही डूब मरू।"

'यह पागलपन छाड द। सब ठीक हा जायगा। जिस परमात्मा न यह सकट लिया है अब वही उबारगा। वह फिर घट्टी चलाने लगी, यहा चुपचाप बठी रह।

समय गुजरता जा रहा था।

मूनकी एक बार माधा के घर आकर ऊपर गयी। स्वा-भानी पूववत पडा है। उसका चेहरा एकदम मुरझा गया है। उसकी आखा म दद है अकथ दद जो कहा नही जाता।

'पानी पीओग ?

नही।

'चाय ?

वह दिया न मुझ कुछ नही चाहिए। मुझे पडा रहन दो। एकान्त शान्त और अकेला। मुझे मत छेडो। तू नही जानती मौसी मेरे भीतर क्या उबल रहा है ?

मूलकी घबरायी नही। भय जसे एक पल के लिए उसकी आत्मा म दूर चला गया। वह निगक सी बठ गयी। अपनी समस्त जावन-महायात्रा और अवस्था की गम्भीरता को अपन स्वर म उडेलती हुई बोली, तरे दिल म जा उबल रहा है जा जल रहा है उसका

जिम्मेदार कौन है ?   उसने अपनी छाती पर हाथ रखकर कहा कि
इसका जिम्मेदार कौन है ? चुप क्यों हो ? बोलते क्यों नहीं ?
तक करेंट सा गुजर गया—भोंदी के हृदय में । सारा गाया कर गया । उसका सीना में प्रश्न भर गया ।

मुनकी के चेहरे की हल्की भुर्रियाँ गहरी हो गया । उसके माथे में बल पड़ गए । वह बोला इस बात का सारा भार तुझ पर है । तू ही इसका जिम्मेदार है ।

न ी मैं इसका जिम्मेदार नहीं हूँ । यह कहकर वह बोला आदमी कितना स्वार्थी हो गया है ? बाप । मैं सपने में भी यह सोच नहीं सकता कि कोई मेरे साथ इतना बड़ा अन्याय करेगा । यह भाई जिसके लिए मैंने क्या न ी किया ? यह औरत जिसके लिए मैं ।

मुनकी हैरान उठ गयी । बोली टेढ़ ढिल से सोच ईश्वर को साक्षी बना कर सोच इसमें कौन पापी है ? मैं इतना कह सकती हूँ कि तू नहीं ता य भी दोषी नहीं है ।

वह नाच चली आयी ।

भोंदी सोचने लगा—मुनकी ने क्या कहा ? वह कहती है कि मैं दोषी हूँ ? हां भाई मैं ही हूँ । उसने अपने आप में कहा । धूप बाहर लग खजड़ के कारण ढल रही थी । खजड़ की छाया जिसकी पत्तियां से धूप के टुकड़े बिखर गये थे उसके बिस्तर व शरीर पर पड़ गयी थी । ठीक धूप के इन अनगिनत टुकड़ों की तरह इसके दिल के टुकड़े हो गये । असंख्य टुकड़े ।

म यह सब नहीं सह सकता । यह असह्य है । उफ ! कितनी पीड़ा हो रही है मुझे ? कितने प्यार से मैंने इसके लिए जेवर सगाई इस सूरजड़ी के लिए अपनी एक बेवफा औरत के लिए । कितने अरमान सजाकर मैंने सोचा था—अब जाकर साधा की बड़ी धूम धाम से शादी करूंगा उसकी बहू को चाँदी के नहीं सोने के गहने पहनाऊंगा

किसी ने भी नहीं पहचाना है मोन के गह्वर मेरे समाज में।

उसके आन्दोलित होते हुए दिल पर एक धक्का सा लगा। वह चौंक पड़ा। टन टन टन !

बाहर अलगिया बाबा टकारा बजाता हुआ गली से गुजर रहा था। लाल कपड़ा में यह बाबा सप्ताह में एक बार इस गुवाड़ में भी आता है। किसी तरह की कोई आवाज नहीं लगाता। सिर्फ टन टन टन टन ! लोग श्रद्धा से उस आटा डाल देते हैं।

उसके टकारे की टन टन अभी भानी को हथौड़े सी लगी। कोई हथौड़ा मार रहा है उसके अन्तरतम पर। जैसे उसके आक्रोश क्रोध और हिंसा से घिरे इन्सान को पुन जगा रहा है कह रहा है यह सब चीज कहाँ से लाया है तू ? तूने इतने रुपये ईमानदारी और महनत से कमाये हैं ? बोलता क्यों नहीं ? चुप क्यों है ? अपने इन हाथों को देख ! लाल लाल इन्सानी खून से रंगे हुए हैं। रक्त रंजित !

वह पहली बार अपने आप से भयभीत हो गया। डर गया। उसे महसूस हुआ कि उसके पास कोई और बैठा है। तब उसका मन पलायन करने लगा। अपनी मौजूदा स्थितियों से क्षणों से।

वह उठा और उसने मूलकी को पुकारा मौसी तू जरा गिरी को बुला ला।

क्या ?

मैं उसका माँग बंज अभी कर दू।'

एकाएक परिवर्तन से मूलकी को जरा आश्चर्य हुआ। वह बाहर निकली। उसने सूरजडी को कहा वह खाना बना ले।

सूरजडी ने कहा, ' मैं तेरे बिना घर में नहीं जाऊंगी। मुझे डर लगता है।

'मैं अभी आती हू। वह कर मौसी चली गयी। एक सन्नाटा सा छा गया भानी के चारों ओर। वह फिर अपने आप से डरने लगा।

उसने सोचा कि वह क्या कर रहा है? उसे क्या पीड़ा हो रही है? शायद वह अपने आप से डर रहा है घबरा रहा है।

भानी देर में फिरी आ गया। वह अपना हिसाब करके चला गया। ठंड की ठिठुरती चाँदनी रात उतर आयी। सूरजो उसके बिस्तर को नीचे ले आयी। वह बरसाती में बैठा रहा। सूरजो अभी तक उसके सामने नहीं आयी थी। वह बटी-चटा खाना बना रही थी। उसके सारे बच्चे भीतर के कमरे में दुबके पड़े थे। अजनबी आदमी के प्रति उनमें उत्सुकता जरूर जागी थी पर अपने पिता को न पाकर वे अपने आपको असहाय पा रहे थे।

भानी फिर अकेला अपने आप से डरने लगा था। मूलकी की यह बात तू खुद दोषी है—उसे बार-बार सचेत कर रही थी, उसे आघात दे रही थी।

रात और गहरी हो गयी।

सूरजो फिर आयी। उसने खाना परोसा। भानी का पहला कौर लेते ही यह लगा कि कहीं इसमें जहर तो नहीं है। वह सहम गया। कुछ क्षणों के लिए उसके हाथ का कौर रुक गया। उसे सचेत करके मूलकी बोली 'खाले अरे खाले रे' हालांकि दोष तेरा ही है पर तू चाहे तो पंच फैसला करा ले। पंचों ने कहा तो तुझे तेरी सूरजो वापस मिल जायगी।'

उसके मुँह का कौर उसके गले में अटक गया। खाँसी आ गयी। मूलकी पानी का गिलास लिया। भानी ने पिया। वह कुछ देर तक मूलकी की ओर देखता रहा। फिर उसने 'चुळू' (हाथ धोने को चुळू कहते हैं) किया। चुळू करने के बाद उसने सूरजो की ओर देखा। वह अपने आप में खोयी हुई थी। शायद वह भी उलझ गयी होगी—इस विकट समस्या के समाधान हेतु। भानी ने थाली खिसका कर उसका ध्यान भंग किया मौसी!

'अरे, यह क्या ? खाता क्या नही ? खान का सोग कितने दिन रखेगा ?

'कुछ अच्छा नही लगता है मौसी बार बार सोचना हू कि इससे तो अच्छा यही रहता कि मैं मर गया होता । सचमुच का मर गया होता ।'

मूलकी मौसी न उपदेशक के स्वर म कहा बेटा ! करम की गति टालन से नही टलती । जिस आदमी को जो देखना होता है, उसे देखना ही पडता है । मनुष्य लाख चेष्टा करे पर विधि का लेख नहीं मिटता ।

लेकिन यह शरीर तो मिट सकता है ?"

भोंनी न अपना सिर पकड लिया । झुझलाहट भरे स्वर म बोला फायदा और नुकसान मैं नही देखता मैं सिर्फ इतना ही जानता हू कि मुझे कितनी पीडा हो रही है ?

पीडा सबको हो रही है । तू सूरजडी को देख जिस औरत न तुझ से कभी भी बेवफाई नही की वह आज इस स्थिति म कितना कष्ट पा रही होगी ? जो भाइ लिछमण की तरह रहा वह क्या सोचता होगा ? बेटा ! तू लाख ही कह पर इसम इन दोनो का कोई दोष नही है ।

माधो अभी तक नही आया ? बात बदली भोंनी न ।

बचारा कैसे आय ? गुट्टिया अरे अपन किसन की बहू कह रही थी कि माधो बाबा के घर जाकर बच्चे की तरह रोने लगा। बार बार यही कह रहा था कि इसमे तो मर जाना ही अच्छा है भाई क्या सोचता होगा ? जब कि मेरा इसम कोई दोष नहीं है ।'

भोंनी एक बार फिर चिढ गया । उसकी इच्छा हुई कि वह पागल की तरह चीख चीख कर रोये कि दोष सब मेरा है मेरा है । पर उसन अपन आप को सयत किया । आन्तरिक भीषण सघर्ष म

उसका चेहरा कठोर हो गया। विकृत हो गया। उसने अपना मुह ढक लिया। वह मिफ अपने आप से सफाई करना चाहता है। मूलकी भी चली गयी। बड़ी देर तक वह मूरजही के पास बैठी रहा थी। मूरजही बात चीत करते-करते कई बार रोयी थी। उसके मर्मान्तक रोने का भानी न सुना था। प्रवाह करुणा थी उसके रोदन में। उसने प्रभु की सौगन्ध खाकर कहा था मेरे मन में कोई पाप नहीं था। जब यह चला गया था तब मेरे मन में एक ही बात लगी हुई थी—इसके छोटे भाई का ब्याह कर घर आबाद बनाना है। धर्म की लकीर खींच कर हम दोनों जी रहे थे। मुझे यह भाई की तरह लगता था। बाद में इसके मरने का समाचार आया। इसके बाद जो हुआ उसमें हमारा क्या दोष है ?'

मूलकी ने उसे समझाया था जो होने वाला है वह हो जायगा। इसके लिए परेशान न हो। मैंने भानी को साफ साफ कह दिया है कि वह पंच फैसला करा ले। मैं माधो को ढूंढ कर लाती हूँ।

ले आ। मुझे अकेली को डर लगता है।

भानी को गुस्सा आया। मन ही मन बोला इस मुझ से डर लगता है ? मैं अब जैसे एकाएक आदमी न रह कर साँप बन गया हूँ इसे निगल जाऊंगा ? उसके स्मृति पटल पर एक छोटा सा चित्र उभरा। एक दिन वह बहुत ज्यादा पी आया था। उसे उल्टियाँ होने लगी थी। तब यह आधी रात तक मेरी सेवा करती रही थी। अपनी पलकों को झपकने भी नहीं दिया था। बैठी-बैठी पंखा झलती रही थी। मेरा सिर दबाती रही थी। आधी रात को जब मेरी आँख खुली तब मैंने उसे प्यार से बाँहों में भर कर कहा था 'तू लुगाई नहीं देवी है तेरी जैसी लुगाइयाँ ही अपने पतियों की नाव पार लगा सकती है।' अपनी प्रशंसा सुन कर यह खुश नहीं हुई बल्कि फफक-फफक रोने लगी। मेरी बाँह और छोटी हो गयी। मैंने उसे कहा अरी! तू रोती

क्या है ?'

तू यह शराब पीना छोड़ दे। यह बहुत रद्दी चीज है।'

'छोड़ दूंगा, छोड़ दूंगा!"

बस छोड़ दे मुझे भूत प्रेत का डर नहीं लगता पर दारू का डर लगता है।"

और आज भूत प्रेत से न डरने वाली मुझ से डरने लगी। फिर उसने अपनी दृष्टि से सोचना शुरू किया 'इसके मन में खोट नहीं होती तो यह मुझ से डरती ही क्यों ?'

उसके मन में सूरजड़ी को देखने की जिज्ञासा जागी। उसने जोर से कहा पानी!'

वह प्रतीक्षा करने लगा। कुछ क्षण बीते होंगे कि सन्नू हाथ में गिलास लिये हुए आ गया। उसने पानी का गिलास रख दिया उसने इच्छा न रहते हुए भी पानी पिया। वह स्वभाग की तरह रजाई में छुप गया जैसे अब उसका कोई दाव अच्छा नहीं पड़ेगा। भयानक मानसिक संघर्ष के बाद भी उसे नींद आ गयी। जब वह पेशाब करने के लिये उठा तब भीतर के कमरे की बातचीत उसे स्पष्ट सुनायी पड़ रही थी। माधो और सूरजड़ी आपस में बातें कर रहे थे। माधो सूरजड़ी को समझा रहा था 'तू रोती क्या है सन्नू की मां इसमें तेरा और मेरा कोई कसूर नहीं है। जरा सोच यदि तू चम्पले के घर चली जाती तो ? सब सत्यानाश हो जाता। फिर भाई का चाहिए था कि वह हमें प्राइवेट चिट्ठी लिखता उसमें इस बात का इशारा करता कि मैंने कर्ज से बचने के लिये यह सब किया है। हमें क्या पता कि वह एक दिन एकाएक इस तरह आ टपकेगा।

सचमुच बहुत ही गजब हुआ है। इतना गजब कि सोच भी नहीं सकते। कभी ख्याल भी नहीं आया कि मैं तुम्हारी बन गयी। कितने पवित्र और धर्म से हमने जीवन जिया था। सोचती थी कि तुम्हारी

धारी कर थी, वह आपका पर इसने श्वर प्राची हा नहीं हमारी जिन्दगी भी खराब कर दी।'

'और क्या इसमे सारा दोष भाई का है। यदि वह अपने आपको मरा हुआ घोषित न करता तो तू मेरे घर म क्या आती, मैं तुमसे नाता क्या करता ? जरा ठंडे दिल से सोच, हमने जो किया है वह धर्म के अनुसार ही किया है। ऐसा हमारे धर्म और समाज म होता है। वह एक पल रुक कर बोला मैं भगवान की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मेरा साहस भाई के सामने जाने का नहीं हो रहा है। उसकी चुप्पी पर रोना आता है। सोचता हूं कि सारा दोष उसका होते हुए भी मुझे लगता है कि जो कुछ हुआ है वह अच्छा नहीं हुआ है।' उसका स्वर भारी हो गया, 'इसके बाद भी भाई पंचायत करा सकता है पंचायत ही क्या वह मुझे पुलिस भी ला सकता है।"

सूरजदेई फफक पड़ी। माधो की मजबूरी से पनपनी हुई बोली नहीं नहीं, मेरी मिट्टी क्या खराब कर रहे हो ! मैं अब कहीं भी नहीं जाऊंगी। ऐसी हालत म इधर से उधर, कहीं-कहीं मैं तेरे पांव पड़ती हूं। इससे अच्छा यही होगा कि तुम मुझे जहर लाकर दे दो मैं खाकर सो जाऊंगी।'

उसकी सिसकियाँ कमरे म से बाहर आकर माधो को विचलित कर गयी। विचलित कर गयी। उसे अहसास हुआ कि हजारों तर्क कुतर्कों के बावजूद भी वही वही दोषी न हो ?

मेरा इसमे क्या दोष है ? मैंने तो तुम्हारा पल्ला दुष्टों से बचाने के लिए पकड़ा, धर्म व रीति नीति से पकड़ा फिर मुझे क्यों दण्ड दे रहे हो ? ये तीन बच्चे ? आह ! सन्नू के बापू ऐसा नहीं होना चाहिए कतई नहीं होना चाहिए। मैं सच कहती हूं कि कहीं जाकर मर जाऊंगी। यह भी अजीब न्याय है कि दोष कोई और करे और दंड कोई और भोगे ?'

वह रा पडी।

'पर में इसका विरोध नहीं करूंगा। उस भाई के लिए मैं अपनी सबसे प्रिय चीज याने तुझे भी सौंप दूंगा। वह दरअसल एक दयालु आदमी है। वह खुद रो पडा, 'मैं नहीं जानता कि मुझे ईश्वर ने किस पाप का यह दड दिया है पर यह सही है, भाई के लिए मैं हर चीज छोड सकता हू।'

दोना की सिसकिया मिलकर भानी के विस्तार म ग्राकर सा गयी। भोंनी को लगा क उसके मन प्राणा म कुछ पिघल रहा है। वह उठा। आँगन मे आया। आकाश तारो से भरा था। उसकी नजर उस कमरे की ओर गयी जिसम वह कभी साया करता था इसी सूरजडी के साथ इसी तरह दरवाजा बद करके। उसका मन एक बार फिर विपुल विषाद स भर आया। उसन साचा कि यह सब क्या हा रहा है? वह अपन आप से घबरा उठा। उसने पुन रजाई में प्रवश किया। उसे चारा ओर से इस तरह दबा लिया जस वह अब किसी भी सिसकी को भीतर आन नहीं देगा। पर वह अपने भीतर उठती हुई सिसकियो को नही रोक सका। उसे स्पष्ट लग रहा था कि कोई उसके अन्दर रो रहा हो क्रन्दन कर रहा है।

उसन धीरे धीरे अपने आपको व्यवस्थित किया। सभाला। सोचने लगा–वह सचमुच मर जाय? मानलो मैं मर चुका। फिर यह जो कुछ हुआ क्या यह गलत हुआ है ठीक नहीं हुआ है? उसन इस प्रश्न पर अपने समस्त सत्य को कन्द्रित कर लिया। उसे लगा कि जो हुआ है, वह ठीक हुआ है। न्याय सगत हुआ है। स्वाभाविक हुआ है धर्म–नीति अनुसार हुआ है।

ये बातें कोई उसके भीतर से बडी निर्भीकता से बोल गया। बोलता रहा। धीरे स एक और आवाज आयी कि इसमे तू अकेला दोषी है अपराधी है। और य शब्द समस्त चराचर म समवेत स्वर मे

ग.ूज उठ ।

व॰ कितन ही पाा ता अपने आ ाग म उठती हुई ध्वनिया—प्रतिध्वनिया का गुाा रहा। फिर उसन अपन आपको असक्त मन्मूस किया। उसन वदन को छूआ ता वह पसीा म लथपथ था। इतनी वडाक की ठन्ड म यह पसीना ? कोई भीतर जल रहा है दहक रहा है। वह वही न्र तक अपन आप पर विश्लेषण करता रहा। अपन सब आयत कर्मों का समभता रहा ता उसन एक वात पायी कि सब व्यथ है। पाप पुण्य अच्छा और वुरा वाना और सवेन्द सब व्यथ। एक व्यथता क आवरण म सब ढक हैं। जीवन की चरम उपलब्धि के रूप म मिलती है—एक पीडा। शाश्वत पीडा। रग बिरगे रूपवाली पीडा। जीवन क सतत सघष क पश्चात मुभे क्या मिला, सिफ पीडा। साथकता क रूप म क्या मिली—निस्सारता। समय सरकता गया।

वह धीरे—धीरे रोने लगा। उसक मन प्राण घुन मे गय। उसे पहली बार प्रमाणित रूप मे यह लगा कि वही दोषी है। वह अब सचमुच अपने आपको मारेगा। उस मर जाना चाहिए। वह मर्मातक वदनाओ का लेकर नही जी सकता। जीना सभव नही। उसन साचा जो जम गय है इस जीवन के आँगन म जो सुख सतोष से चल रहे हैं—इस महायात्रा पर उन्ह उखाडना भी एक अपराध है पाप है।

वह अपने आपसे लडता—लडता फिर सो गया।

सूरज की पवित्र किरण ने जब उसके घर को छूआ तब भानी जागा। उसन अगडाई ली। 'मैं काफी स्वस्थ हू। अपने स्वर को काफी सहज सयत करके उसन पुकारा माधो ओ माधो। वह सीधा आगन म आया। सन्तू आगन मे खडा था। उसन उसे गोद म लेकर चूमा। फिर उसने माधा स कहा अरे ! तू मेरे सामने क्या नही आता। वर्षों क बाद ता तेरा भाई आया है ? ठीक भई जब आदमी के दिन बदलते ह तब सब अपन पराय हा जाते हैं। सुन मैं आज रात का गाडी स

वापस जा रहा हू।"

माधा लपक कर बाहर निकला । उसने भानी के पाव पकड़ लिय। पावो से लिपट कर रोने लगा।

उठ माधो उठ वही होना है जो भगवान को मन्जूर होना है। देख, मैं रात की गाडी से वापस जा रहा हू । इतना सारा धन मैं तेरे लिय ही लाया हूँ। तू बडे सुख-सन्तोष रहना। उठ।"

फिर वह बाहर चला गया। रात को जब वह लौटा तब अनेक लोग इकट्ठे हो गये थे। सब ने उसे रोकना चाहा पर उसने इतना ही कहा मत्र व्यय है एकदम व्यथ! आज से यह भानी सचमुच मरने के लिय जा रहा है व्यक्ति की सत्ता ही जान पहचान व सम्बन्धो का अस्तित्व रखती है आज से सब समाप्त! फिर भानी पुन जीवित नही होगा।

माधो और सूरजडी न घर मे उस अश्रु भरी विदाइ दी। भॉनी जो लाया था, वह सब कुछ छोड कर चल पडा । माधो न गाडी छूटते-छूटते कहा यह भी एक सजा है भाइ।'

'एक न एक सजा तो सभी को ही भागनी पडता है।

गाडी चल पडी। माधो भी स्टेशन की भीड म खो गया।

•

कहानी समाप्त करते हुए स्वामी जी न कहा 'जीवन अनेक विचित्रताओ से भरा है। पल-क्षण की कोई निश्चिन्तता नही। सब

मुख दुख का आवरण ओढ़े हुए हैं। सब नश्वर हैं-सिवाय मृत्यु के। यह मृत्यु ही एक शाश्वत सत्य है। इस सत्य की उपलब्धि जिजीविषा व उत्कट संघर्ष और सत् असत् कर्मों से प्राप्त होती है। आदमी अपने कर्म का अनुकूल फल न पाकर इस पीड़ा के मर्म और प्रकृति की शक्ति को पहचानता है तब उसे हर काम में व्यर्थता मिलती है। महापात के पश्चात् की उपलब्धि है मृत्यु और मृत्यु का निरन्तर स्मरण है-त्याग, ईश्वर और सत् कर्म! इसी देह मन्दिर में एक नया जीवन।

वह भावना है—वह व्यर्थ है। इस विपुल विनाश में अनन्त भाग में सुख-समृद्धि में अनन्त पीड़ा है?

बंधु! यह पीड़ा का अनुभव ही मनुष्य को अपनी व्यर्थ की सत्ता का भान कराता है और वह सोचता है—सब व्यर्थ है जीवन किसी अलक्ष्य सत्ता का एक खेल है हम सब खिलौने हैं न मालूम कब खिलौने बनाने वाला उसे तोड़ जाय और किस तरह तोड़ जाय यह कोई न जानता!

मैंने देखा-स्वामी जी के तेजस्वी मुख पर करुणा आ गयी है वही अनंत और शाश्वत करुणा।

और मुझे ऐसा लगा कि उनकी कहानी का नायक भोली नहीं पर स्वामी जी स्वयं तो नहीं है?

यह प्रश्न मेरी अन्तरात्मा में जलता प्रश्न बन कर दीप्त हो गया। मैं कुछ पूछूं उससे पहले ही वे आँखों से ओझल हो गए। उनका मंद होता हुआ स्वर सुनायी पड़ रहा था— भाई राम राम भाई राम राम सबको राम! राम राम!'